देशभक्त लाजपत

महत्जनोंके चरित हमें नित्य उत्तम मार्ग बतलाते हैं।

कर्त्ता—
राधामोहन गोकुलजी (राधे)

ॐ

देशभक्त लाजपति ।

अर्थात

आर्य्य बीर श्रीमंत लाला लाजपतिरायजी

अग्रवालका एकमात्र यथार्थ

विश्वासपात्र

सचित्र जीवन-चरित्र ।

लेखक, मुद्रक और प्रकाशक—

ला०राधामोहन गोकुलजी अग्रवाल

सम्पादक सत्यसनातन धर्म्म ।

और

देशकाधन, नीतिदर्शन प्रभृति ग्रन्थोंके कर्त्ता

देवनागरी यंत्रालय कलकत्ता ।

संवत् १९६९ विक्रमी

प्रथमवार] [१००० प्रति

PRINTED AND PUBLISHED
BY
RADHA MOHAN GOKULJI
AT THE DEVANAGARI PRESS.
No. 17, Pagaiyapatti
CALCUTTA.

हमारे पास अनेक विषयोंकी पुस्तकाकार हस्त लिपियां प्रस्तुत रहती हैं। जो प्रेस वाले उनको छापना चाहें अथवा स्वत्व सहित लेना चाहें हमसे लिखा पढ़ी करें।

राधामोहन गोकुलजी

पता—नं० १२ मलिक ष्ट्रीट
कलकत्ता।

मा० सेठ जयनारायणजी

सूची ।

समर्पण ।

मैं परमहंस परिव्राजकाचार्य्य परमपदारूढ़
महर्षि श्री १०८ स्वामी दयानन्दजीकी
यादमें
उनके पवित्र शिष्यका यह पुनीत

सचित्र-चरित्र ।

अपने परमभक्त प्यारे चि० गजानन,
रामकुमार खेमकाके हाथोंमें
समर्पण करता हूं ।

देशभक्तोंका चरण सेवी
'राधे'

सच है कष्ट सहन किये विना कुछ प्राप्त नहीं होता। जिन भारत वासियोंने अपने जीवन देशकी सेवाके लिये हार दिये हैं वह अपने व्यक्तिके स्वामी आप नहीं रहे देशभक्तिके किसी कर्त्तव्यसे उत्तेजित होकर प्राण हवन करना वीरता है, परन्तु उत्ते-जनाको वशवर्त्ती रखकर देशहितके लिये जीते रहना और भी उत्तम है। मौतसे पूर्व जीवन आवश्यक है। पवित्र मृत्युसे पूर्व उच्चतम जीवन बहुत जरूरी है।

लाजपत।

* ओ३म् *

प्राक्कथन।

असार जगत्को तजकर सज्जन,
सत्यलोक जब जाते हैं।
समय-मार्ग मृदु रेणुके ऊपर,
जो पद चिह्न बनाते हैं।
उन्हें देख जग जिज्ञासूगण,
परम लक्ष्य को पाते हैं।
नित्य महज्जन-चरित हमें यों,
उत्तम मार्ग दिखाते हैं।

(राधे)

जीवन-चरित्र और इतिहासमें इतना ही अन्तर है कि यह एक देश या जातिगत अनेक व्यक्तियोंका चरित्रसमुच्चय होता है और वह व्यक्तिविशेषका। किन्तु जातीयता व्यक्तियों ही पर आधार रखती है, इस लिये किसी देशके चुने हुये व्यक्तियोंका चरित्र भी

जातिकी माहीका दर्शक होता है। व्यक्तियोंके चरित्र ही जातियोंके चरित्रका बनाने वाला होता है।

अशिक्षित अरबी मुस्तफाके ही चरित्रका प्रभाव अरबोंपर पड़ा जिन्होंने एक समय आधी दुनियांमें अपनी विजय पताका उड़ाई। गुरु नानकके ही चलनने पिछली नौ सिक्ख बादशाहियोंको रङ्ग रूप दिया।

संसारमें जितने आन्दोलन हुए हैं सबमें ही हम धर्मकी लहरको ही प्रधान देखते हैं और यही बात हम अपने चरित्र नायक लाजपतमें भी पाते हैं। जो स्वामी दयानन्दको गुरु नानक मानें तो पं० गुरुदत्त, लाजपत, हंसराज आदिको उनके पीछेकी गद्दियां समझें। अन्तर इतना ही है कि गुरु महाराजका समय भूतकालीन है और स्वामीजी महाराजके शिष्योंका वर्त्तमानकालीन। हमें सदा भूतकालसे अधिक वर्त्तमानकी सुध लेनी पड़ती है, क्योंकि इसीपर भविष्यत्का भी आधार होता है। इन्हीं भावोंसे सञ्चालित होकर मैंने गणेश कम्पनी प्रकाशित 'लाजपत राय' नामक लघु पुस्तक अंग्रेजी भाषामें पढ़ी। इस पुस्तकके पढ़नेसे मुझे दो एक बातोंमें सन्देह हुआ। प्रयागप्रदर्शनीके समय, कांग्रेस पिण्डालसे, मैं 'लाला

लाजपत राय' नामकी दूसरी पुस्तक मद्रासके नटेसन कम्पनी द्वारा मुद्रित लाकर पढ़ चुका था और उससे सन्तोष न होनेके कारण ही यह पुस्तक मंगाई थी। अब इससे भी सन्तोष न हुआ। सन्तोष न होनेके कई कारण थे जिनमेंसे प्रधान कारण यह था कि चरित्रनायकका बालचरित्र कुछ भी इनमें न मिला, साथ ही ऐतिहासिक भूलें भी पाईं।

इस दशामें मैंने यही उचित समझा कि ऐसे महात्माका जीवनचरित्र जो देशके प्रत्येक प्राणीका प्राण हो, सच्चा और प्रामाण्य लिखकर पबलिकके समक्ष उपस्थित करूं। बड़े आदमियोंके जीवनचरित्रसे जो लाभ होते हैं, जगत्प्रसिद्ध हैं। कौन नहीं जानता कि जीवनचरित्र ऐतिहासिक आदर्श होता है, बड़े लोगोंका जीवन-वृत्तान्त आनेवाली सन्ततिके लिये एक सद्भावना, सदाचार शिक्षाप्रद पाठ होता है। जीवनचरित्रोंकी बाबत श्रद्धेय लाला राधाकिशनजी (लोकमान्य लाला लाजपतरायजीके पिता) के शब्दोंमें :-"जीवनचरित्र उन्हीं लोगोंका अधिक लाभ-दायक होता है जो संसारमें उच्चतम मार्गपर होकर चलते हैं और अपनी जन्मभूमिकी वास्तविक सेवा करते हैं, जिनके कारनामोंको पढ़कर पाठकोंके मनोंमें

भलाई करने, सदाचारी बनने, योग्यता प्राप्त करने और महान् यत्न करनेकी उत्तेजना उत्पन्न हो सकती है, जिनकी कथा देशके नवयुवकोंमें प्राणसञ्चारित कर, उन्हें संसार-सागरमें जीवन जहाजको अभीष्ट स्थल तक पहुंचानेमें पथप्रदर्शक अथवा सावधान करने-वाली ज्योतिका काम दे।"

सुतराम् बड़े आदमियोंका जीवनचरित्र लिखना व पढ़ना सभीलोग लाभदायक मानते हैं—अब केवल एक बात रह जाती है, कि क्या लाजपतराय बड़े आ-दमी हैं? क्या उनका जीवनचरित्र मनुष्योंके लिये उपकारी होगा? इसका उत्तर हमें महाभारतमें मिलता है। 'महाजनो येन गतः सपन्थः'। बड़े आदमी जिस मार्गसे चलें वही श्रेष्ठ मार्ग है। बड़े आदमी कौन? "बड़ा आदमी वह है जिसमें मिथ्या अनुचित अहङ्कार न हो, जो प्राणोंकी जोखम देखता हुआ भी सत्य ही बोले, भीतर बाहर एक हो; मन, वाणी और कर्म्मसे पवित्र हो अर्थात् न पापकी भावना करता हो, न पापकी बात करता हो न पाप आचरण करता हो; उसे चाहे कोई सताये, बुरा कहे पर वह स्वार्थवश न किसीको सताये न बुरा कहे। बड़ा आदमी वह

जिसका जीवन सब ईश्वरीय प्रजाके सुख, शान्ति व समृद्धिका हेतु हो।"

हमें पाश्चात्य विद्वानोंके द्वारा बड़े आदमीकी परिभाषा यों मिलती है—(१) जो अधिकतम प्राणियोंको अधिकतम सुख पहुंचानेका कारण हो वह महान् पुरुष। (२) वह मनुष्य बड़ा मनुष्य कहलानेका अधिकारी है जो अपने देश अपनी सन्ततिपर अपने शुभकृत्योंका प्रभाव डाल सके।

इन्हीं परिभाषाओंको ध्यानमें लेकर देखते हैं तो लाजपतरायको बड़ा आदमी माननेमें यत् किञ्चित् भी आगा-पीछा नहीं होता। फिर जब २५ करोड़ हिन्दुस्थानी आपको बड़ा आदमी मानते हैं तो उसके विरुद्ध दलील सोचना मात्र समय नष्ट करना है। रही यह बात कि क्या लालाजीका जीवन-इतिहास हमारे नवयुवकोंका पथप्रदर्शक है ? यदि है तो कैसे ? यह, अनुमान ४०० पृष्ठका निबन्ध उक्त प्रश्नोंका ही उत्तर है।

इसके लिखनेमें मुझे अपने पूजार्ह श्रीयुत लाला राधाकृष्णजीके पत्रोंसे बहुत ही सहायता मिली है इनसे प्राप्त बातें जो निर्विवाद सत्य न मानें तो लाला-

जीकी बाबत् सच्ची ऐतिहासिक बातोंका मिलना ही असम्भव है। अतः मैं इन श्रद्धेयके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करता हूं। मैं श्रद्धेय लाला लाजपतराय जीका भी कृतज्ञ हूं क्योंकि उन्होंने अपनी लिखी हुई "डिपोर्टेशन वृत्तान्त" नामक पुस्तक मुझे प्रदान की। साथ ही मैं नेटेसन कम्पनी व गणेश कम्पनीका भी कृतज्ञ हूं कि जिनसे मैंने कोई कोई बात लेकर इस पुस्तकमें रक्खी है।

सन् १८१८ का रेगूलेशन नं० ३
इसीके अनुसार लालाजी निर्वासित हुए थे।

[राज-बन्दियोंकी गिरफ्तारी सम्बन्धी रेगूलेशन]

जब कि राज प्रबन्धके कतिपय कारण, जिनमें वह प्रेम स्थिर रखना सम्मिलित है जो वृटिश राजका अन्य शक्तियोंके साथ है, और उन देशीय राज्यों व नवाबोंके अधिकृत्योंमें शान्ति व सुखका स्थिर रखना भी अभीष्ट है कि जिन्हें वृटिश राज्यकी रक्षामें रहनेका स्वत्व प्राप्त है; वृटिश अधिकृतियोंका बाहरी शत्रुओं और भीतरी हलचलसे सुरक्षित रखना भी आवश्यक है, बाध्य करते हैं कि कभी कभी ऐसे अकेले लोगोंको बन्धनमें लिया जाय जिनके विरुद्ध **न्यायालयमें जांच करानेके कारण न हों** या जब इस प्रकारकी कार्य्यवाही अभियोगकी दशाके अनुकूल न समझी जावे; या और कारणोंसे अनुचित या अनुपयुक्त समझी जाय, और जब कि यह उचित

है कि इस प्रकारकी प्रत्येक दशामें जिसका यहां कथन हुआ है गवर्नर जनरलकी व्यवस्थासे आज्ञा हो और न्याय सङ्गत यही है कि जब इस बातका निश्चय कर लिया जावे कि एक व्यक्तिको विना न्यायालयकी कार्य्यवाहीके बन्धनमें लिया जायगा तो उन कारणोंका समय समयपर विचार होता रहे जिनपर इस प्रकारकी आज्ञा आधार रखती है, और उस व्यक्तिको जिसके साथ इस प्रकारका वर्त्ताव किया गया है सदैव यह अधिकार हो कि स्वतन्त्रतापूर्वक गवर्नर जनरलका ध्यान उन बातोंकी ओर दिलावे कि जो इस आज्ञाके कल्पित कारणोंके साथ सम्बन्ध रखते हों या उस रीतिसे सम्बन्धित हों जिसके अनुसार इस आज्ञा पर कार्य्य किया गया है; पुनश्च जब कि न्याय यह चाहता है कि प्रत्येक राज-बन्दीकी, जो इस रेगूलेशनके अनुकूल बन्धनमें लिया गया हो, स्वास्थ्यकी ओर उचित ध्यान दिया जाय और उसकी मर्य्यादा (अथवा स्थिति) के अनुसार और उसकी एवं उसके निज कुनबेकी आवश्यकताओंके अनुसार निर्वाहका प्रबन्ध किया जाय, और क्योंकि यह उचित है व उपर्युक्त कारणोंसे किसी किसी समय यह आवश्यक हो जाता है कि जमीदारों और तालुकेदारोंकी धरती

और सम्पत्तिको जो उस सीमाके भीतर गत हो जो फोर्ट विलियमके हातेके संरक्षणमें हो अधिकृत करली जाय और अस्थाई रीतिपर विना किसी न्यायालयकी व्यवस्थाके माल विभागके अफसरोंके प्रबन्धगत कर दी जाय, क्योंकि यह उचित है कि इस प्रकारकी कानूनी सहायता पहुंचाई जाय जिससे ऐसे व्यक्तिके उचित स्वत्वों और लाभोंको जिनकी सम्पत्ति गवर्नमेण्टने अपनी आज्ञासे अधिकृत करली है हानिसे बचाया जावे; इसलिये उपसभापति कौंसलने निम्नलिखित नियम संकलित किये हैं जिनका व्यवहार उस दिनसे फोर्टविलियमके हातेमें आरम्भ हो जायगा जिस दिन कि उन्हें प्रचलित किया जायगा।

२—(प्रथमे) जब गवर्नरजनरलको यह आवश्यक ज्ञात पड़े कि उन कारणोंके अनुसार जो इस रेगूलेशनकी भूमिकामें कहे गये हैं किसी व्यक्ति विशेषको बन्धनमें किया जाय और यह विचार न हो कि पूर्ण अधिकार सम्पन्न किसी न्यायालयमें किसी प्रकारकी बाहरी कार्य्यवाहीकी जायगी तो गवर्नरजनरल अपने हस्ताक्षरसे और प्रधान सिकत्तर या राजके किसी दूसरे सिकत्तरके भी हस्ताक्षरसे उस अफसरके नाम एक

सौंपका वारण्ट निकालेगा जिसके अधिगत उस बन्दीको रखना है।

(द्वितीये) सौंपका वारण्ट इन शब्दोंमें होगा।

(यहां अफसरका नाम और पद आदि होगा) समीपेषु

क्योंकि गवर्नरजनरलने यथेष्ट और ठीक कारणोंको ध्यानमें रखकर यह व्यवस्था देनी उचित समझी है कि (अमुक राज बन्दी) को (अमुक) स्थानमें बन्द रखा जाय, अतः उसी आज्ञाके अनुसार तुमको आज्ञा होती है कि उपर्युक्त व्यक्तिको अपने बन्धनमें लेलो और इसके साथ गवर्नर जनरलकी आज्ञाओं और १८१८ के रेगूलेशन नम्बर ३ की समझौतियोंके अनुकूल वर्तो।

फोर्ट विलियम

ह स्ता क्ष र प्रधान सिकत्तर

कौंसलस्थ—गवर्नरजनरलकी आज्ञासे

(तृतीये) किसी राज-बँधुवेको किसी गढ़, कारागार या अन्यत्र कहीं जो फोर्टविलियमके आधीन हो बन्धनमें रखनेके निमित्त यह सौंपवारेंण्ट पर्य्याप्त समझा जायगा।

३—प्रत्येक अफसर जिसके बन्धनगत एक राज-बन्दी रखा जावे प्रतिवर्ष प्रथम जुलाईको राजनैतिक-विभाग-सिकत्तर-द्वारा गवर्नर-जनरलके पास उस राज-बन्दीके स्वास्थ्य, आचार और सुखसुविधाके सम्बन्धमें एक रिपोर्ट भेजेगा जिससे गवर्नर जनरल निर्णय कर सकें कि उस बन्दीके बन्धनमें रखनेकी आज्ञाको प्रचलित रखें या उसमें कुछ फेरफार करें।

४—(प्रथम) जब कोई राज-बन्दी किसी जिला मजिष्ट्रेटके पास बन्धनमें हो तो जजोंका कर्त्तव्य है, कि निश्चित समयके उपरान्त उससे मिलें और उसके साथ बर्त्ताव करनेके सम्बन्धमें जिस प्रकारकी आज्ञा उचित जानें निकालें किन्तु इस प्रतिबन्धके साथ कि तत्सम्बन्धिनी गवर्नर-जनरल प्रदत्त आज्ञाओंका व्याघात न हो।

(द्वितीय) यदि किसी राज बन्दीको किसी राज-कर्म्मचारीके बन्धनमें (जो जिला मजिष्ट्रेट न हो) रखा जाय तो गवर्नरजनरल या तो मजिष्ट्रेट जिलाको या जजोंको या किसी अन्य राजपदाधिकारीको, यदि उसीके बन्धनमें यह राजबन्दी न हो तो, समझा देगा कि वह उससे एक नियत समयके उपरान्त जाकर मिला

करें और गवर्नमेण्टमें उसके प्रति वर्तावे और उसके स्वास्थ्य सम्बन्धमें सूचना भेजें।

५—इस अफसरको जिसके बन्धनमें यह बन्दी है आवश्यक होगा कि समय समयपर जो प्रार्थना पत्र यह बन्दी गवर्नरजनरलके पास भेजना चाहे उसे अपनी उस सम्मति सहित जो वह देना उचित समझे, आगे भेजदे।

६—प्रत्येक अफसर जिसके बन्धनमें राज-बन्दी रखा जाय वह उस बन्दीको अपनी चौकसीमें लेनेके उपरान्त जहांतक कृत-सम्भव हो शीघ्रताके साथ गवर्नरजनरलके पास यह रिपोर्ट भेजे कि जिस सीमातक बन्धन इस बन्दीके लिये नियत किये गये हैं उनसे उक्त बन्दीके स्वास्थ्यको हानि पहुंचनेकी आशङ्का तो नहीं है। और यह भी कि जो निर्वाह-अर्थ उसके लिये व उसके कुनबेके लिये नियत हुआ है पर्य्याप्त है वा क्या। प्रत्येक अपसर (पदाधिकारी) जिसकी चौकसीमें कोई राज-बन्दी रखा जावेगा इस बातका ध्यान रखेगा कि जो रुपया उस कैदीके गुजारेके लिये नियत किया गया है वह उसी काममें लगता है, व ?

८—यह नियम १८७४ ई० के एक्ट सं० १६ के अनुसार काट दिया गया।

९—जब कभी गवर्नर-जनरल महो० उन कारणोंसे जिनका इस रेगूलेशनमें कथन है यह आवश्यक समझें कि किसी जमीदार जागीरदार या तालुकदारकी या किसी अन्य व्यक्तिकी धरती व सम्पत्तिको बिना किसी न्यायालयकी व्यवस्थाके या न्यायालयकी किसी कार्य्यवाही बिना बन्धनमें लिया जाय तो उन कारणोंकी सूचना जिनपर कि गवर्नमेण्टकी आज्ञा निर्धारित होगी और अन्य सूचानाएं भी जो आवश्यक समझी जावें, गवर्नमेण्टके किसी सिकत्तरके हस्ताक्षरसे उस जिलेके जज वा मजिष्ट्रेटको दी जायगी जिस जिलेमें यह धरती या सम्पत्ति स्थित होगी, साथ ही सदर दीवानी और निजामत न्यायालयोंको भी इसकी सूचना दी जायगी।

१०–(प्रथम) इन धरतियों और सम्पत्तियोंका प्रबन्ध, जिन्हें इस भांति अस्थाई रूपसे बन्धनमें लिया जायगा, गवर्नमेण्टके बलि-विभागके अधिकारी (अफसर माल) के निरीक्षणमें होगा। और आयकी प्राप्ति, संग्रह और प्रबन्ध उसी सिद्धान्त पर किया जायगा जिसपर अन्य रियासतोंके सम्बन्धमें, जो प्रबन्ध विशेषके अधिगतमें होती हैं, किया जाता है।

(दूसरे) जिस कालमें यह धरतियां या रियासतें बन्धनमें होंगी उस कालमें दीवानी न्यायालयों-

की डिगरीके सम्पादन या अर्थ दण्डकी अप्राकृतिके लिये या अन्य किसी कारणसे उन्हें बेचा न जायगा।

(तीसरे) ऐसी दशामें जिसका कथन इससे पहलेकी उपधारामें (यमनमें) आ चुका है, गवर्नमेण्ट इस प्रकारका प्रबन्ध करे कि जो दीवानी न्यायालयोंके डिक्रियोंके लिये उचित और न्याय संगत समझा जावे।

११—जब गवर्नर जनरलका मत यह हो कि वह कारण जिनके विचारसे इस धरती या सम्पत्तिको बन्धनमें लेना आवश्यक समझा गया था मिट चुके हैं, और इस सम्पत्ति (रियासत) का प्रबन्ध मुख्य स्वामीके हाथमें पब्लिकको बिना किसी प्रकारकी हानि वा कष्ट पहुंचे दिया जा सकता है, तो सामयिक पदाधिकारियोंको अनुज्ञा होगी कि सम्पत्तिको अपने बन्धनसे मुक्त करदें और उस समयके आयका लेखा जोखा ठीक ठीक बनावें जिस समयमें कि यह गवर्नमेण्टके निरीक्षणमें रही और इस बन्धनकालमें जो लाभ इस सम्पत्तिसे हुआ हो, वह सब उसके स्वामीको दे देवें।

ओ३म्

'लोकमान्य लाजपत'

प्रथम भाग।

असं॒बा॒धं मध्य॒तो मा॑न॒वाना॒ं यस्या॑ उ॒द्वत॑: प्र॒वत॑: स॒मं ब॒हु। नाना॑वीर्या॒ ओष॑धी॒र्या बिभ॑र्ति पृथि॒वी न॑: प्रथ॒तां राध्य॑तां न॑:॥ २॥

अर्थ—'यस्याः' जिस हमारी मातृ-भूमिके 'मानवानां' मननशील मनुष्योंके 'मध्यतः' मध्यमें 'प्रवतः' सब भांति रक्षा करते हुए 'उद्वतः' अपनी उन्नतिके लिये रक्षा करते हुए या अपनी उन्नति चाहने वालोंमें परस्पर 'बहु' अत्यन्त 'समम्' सदृश 'असंबाधम्' आपसमें भेद या फूट न रख ऐक्य या मैत्री भाव है 'या' जो 'नः' हमको 'पृथिवीं' मातृ-भूमि 'नानावीर्याः' रोगको दूर करनेवाली अनेक उत्तम गुण युक्त 'ओषधीः' बनस्पति 'बिभर्ति' धारण करती है वह मातृ-भूमि 'नः' हमारी 'प्रथतां' कीर्त्ति या यशके वृद्धिका 'राध्यतां' साधन करे॥ २॥

विषय प्रवेश ।

विदेशीय, भारतकी स्थितिसे अनजान, बृटिश सरकारने भ्रमवश सन् १९०७ के मई मासमें निरपराध लाला लाजपतरायको देश निकाला दिया और ब्रह्मा ले जाकर रखा। यही बात भारत सरकारके न्याय-दामनपर एक बड़ा भारी धब्बा लगानेवाली और लाला लाजपतरायके प्रति देशका असाधारण प्रेम उत्पन्न करनेवाली हुई। यदि लालाजीका कुछ अपराध होता तो धर्म-प्राण भारतीय प्रजा कदाचित भी इस भांति विचलित मन न होती, परन्तु भारतवासियोंको यह बात कभी सहन नहीं हो सकती कि किसी निर्दोषी ही नहीं प्रत्युत धार्मिक पुरुषको अपराधी कहा जाय और उसका अपराध प्रत्यक्ष कहनेका दोषारोपीको साहस न हो।

इस घटनासे विचलित मन भारत सन्तानको लालाजीके जीवन इतिहासकी खोज हुई, क्योंकि उन्होंने चाहा कि लालाजीके पूर्व जीवन वृत्तान्तसे

नोट—इस पुस्तकमें लालाजीसे लोकमान्य लाजपतराय व बड़े लालासे उनके पिता लाला राधाकृष्ण महोदयका अर्थ समझना।

भी देखें कि वह कोई दोष कर सकते हैं या नहीं। अतः उर्दू और अंग्रेजीमें इनके दो तीन अधूरे चरित्र छपे और छापनेवालोंने इनसे धन भी कमाया, परन्तु शोक है कि यह सब सुनी सुनाई बातोंके आधारपर रचे गये हैं, फिर यह सत्रुटि जीवनचरित्र भी हिन्दीमें नहीं। हिन्दी-हितैषी, हिन्दी-भाषी अग्रवालकुल-भूषणका जीवनचरित्र हिन्दीमें न होना हिन्दी भाषियोंके माथेपर एक कलङ्कका टीका है जिसे दूर करनेके निमित्त मैंने इस निबन्धके लिखनेका भार अपने ऊपर लिया। साथ ही इसे प्रामाणिक बनानेके लिये कोई प्रेत्र उठा नहीं रखा गया।

लालाजीका घराना।

बड़े लालाजी मेरे एक पत्रके उत्तरमें अनुग्रह करते हैं:—"मैं जगरांवके अग्रवाल घरानेका एक व्यक्ति हूं। मेरे पिताजी अर्थात् लाजपतजीके पितामह स्वर्गवासी लाला रङ्गामल पञ्जाबमें अंग्रेजी शासनके आरम्भकालमें तीन गांवके पटवारी थे। इन्हें उर्दू व देवनागरी न जाननेके कारण सन् १८५५ में पटवारगरी छोड़ कर अपना पैतृक व्यवसाय, अर्थात् दूकानदारी, ग्रहण करनी पड़ी। मैं भी बालकपनमें दुकानदारी ही करता

रहा और सन् ५६ अर्थात् संवत १८१३ विक्रमीमें जगरांवकी ग्राम पाठशालामें विद्याध्ययन भी करने लगा। सन् १८६४ के दिसम्बर मासमें अम्बाला उपविभागके पाठशाला-निरीक्षक (इन्स्पेक्टर आव स्कूल्स) की आज्ञानुसार दिल्ली नारमल स्कूलमें उच्च शिक्षाके लिये भेजा गया। भाग्यवशात् मैं इस उपविभागके सब छात्रोंमें प्रथम निकला और गणित व भौतिक विद्यानोंमें विशेष योग्य सिद्ध हुआ अतः मुझे १०) मासिक छात्रवृत्ति (वजीफा) मिला, यद्यपि उस समय छात्रवृत्ति ५) प्रायः मिलती थी। लाला लाजपतराय मेरा पहिला लड़का है। मेरा गोत्र गर्ग है।"

लालाजीका जन्मकाल व स्थान।

हमारे चरित्रनायक लाला लाजपतराय २८ जनवरी सन् १८६५ ई०को ग्राम ढोडिकी (dhodiki) तहसील मोगा जिला फ़ीरोजपूरमें अपने नानाके घर भूमिष्ट हुए। (हम लोगोंमें पञ्जाबकी तरफ यह रीति सी हो गई है कि पहिला बच्चा प्रायः स्त्रियां अपने पिताके ही घर आकर प्रसव करती हैं)। आपके नानाजी पुराने समयके एक सादे सीधे सत्यवादी धार्मिक वैश्य थे और दुकानदारीका पैतृक व्यवसाय इनके यहां होता था।

लालाजीके नानाका नाम हुकमीसिंह था। यह वात्सल्य (बंसल) गोत्री अग्रवाल नानकपन्थी सिक्ख मध्य श्रेणीके सम्पत्तिवान थे। इनकी नानी एक बड़ी अनुभवी वृद्धा थीं लालाजीके भूमिष्ट होते ही इन्होंने इनकी नाभीमें मोती कूट कर भरे; नाल काटनेके उपरान्त भी कुछ क्रियायेंकी जिससे बच्चेको विस्फोटक अर्थात् शीतलाकी पीड़ा न हो। फल भी इसका यथेष्ट ही हुआ अर्थात् लालाजीको कभी शीतला नहीं निकली। दिल्लीमें बड़े लालाके निवासके पास ही एक जाट रहता था यह थुड़स वार पुलिसमें नौकर था, इस जाटकी माता उन्हीं दिनों ढोढिकीसे आई थी। वह बड़े लालासे एक दिन कहने लगी:—"तेरा (जाट मेव राजा तकसे भी ऐसे ही बोलते हैं) लड़का बहुत दुबला पतला निर्बल और पक्के रङ्गका है।" यह बात इस स्त्रीने ऐसी घृणा भरी बातमें कहा कि जिससे बड़े लालाको कुछ बुरा मालूम हुआ किन्तु चुप रह गये। यह किसे मालूम था कि यह दुबला, पतला, सांवला, निर्बल बालक समय पाकर भारतके उद्धारके लिये एक महान् स्तम्भ होगा, यह अपने असाधारण कामों, अपनी अनुपम धुन व दृढ़ता, अपने बाहु व विद्या बलसे भारतकी आगामी

सन्तानको देशसेवाका पवित्र पाठ पढ़ायेगा। सच है अनेक छोटे छोटे झिरने ही बहुधा महानद बन जाते हैं और अपने महानतासे संसारको चकित, अपने सुन्दर जलसे जगतको परितुष्ट करते हैं। उस प्रभुकी बातमें मनुष्यका हाथ नहीं—जो चाहे तो राईको पर्वत करे व पर्वतको राई बनाकर धरे।

लालाजीका बाल-काल।

बड़े लालाजी कहते हैं—"मुझे इस दुबले, पतले, सांवले बच्चेके देखनेकी इतनी प्रबल इच्छा हुई कि मैं अपने भविष्यके लाभोंको छोड़ जल्दी घर चला गया"। हम कह चुके हैं कि बड़े लाला पढ़नेमें बहुत तेज थे, आप इस पुत्र जन्मके चार मास पीछे नारमल स्कूलकी परीक्षामें भी समस्त पञ्जाबमें प्रथम रहे। इंस्पैक्टरने इनको वचन दिया कि तुमको अब पहिलेसे अधिकतर छात्र वृत्ति तो मिले ही गी, यंहां रहकर अंग्रेजी पढ़ो, एन्ट्रेंस पास करलेनेपर किसी न किसी जिला-स्कूलमें तुमको हैडमास्टर नियत किया जायगा। परन्तु बड़े लाला कहते हैं:—"मैं अपने बच्चेके देखनेके प्रेम और जवानीकी तरङ्गमें अपने परम-हितैषी, शुभचिन्तक और दयालु लाला प्यारेलालजी हैड मास्टर

व मेजर हेरेल्ड साहब बहादुर इंस्पेक्टरकी इच्छाके प्रतिकूल दिल्लीसे भागकर अपने घर पहुंचा।" इसके बाद बड़े लाला जगरांवके ही स्कूलमें शिक्षक नियत हो गये।

बड़े लालाको सन् १८६८ में सरकारी नौकरीके बन्धनने फिर घर छुड़ाया, आप जगरांवसे सोहना, सोहनेसे रोपड़ अन्तमें रीवाड़ी बदल गये। इस समय लालाजीके द्वितीय भ्राता लाला दलपतरायका जन्म हो चुका था। लालाजीकी माताजी इनके पितामह लाला रल्लारामके साथ सब बाल बच्चोंको लेकर रीवाड़ी पहुंचीं। इस समय लालाजीकी अवस्था ४ वर्षकी थी, बड़े लालाने इन्हें स्वयम् इसी अवस्थामें, पढ़ाना आरम्भ कर दिया था। सन् १८७० तक तो यों ही पढ़ना लिखना रहा कभी लालाजी पिताके पास रहे कभी पृथक् होकर जगरांव रहे किन्तु सन् १८७० में, ६ वर्षकी अवस्थामें, नियमानुसार इनका विद्या संस्कार हुआ और यह भी उन अन्य लड़कोंके साथ जो बड़े लालासे घरपर पढ़ने आते थे अपने पिताजीसे पढ़ते रहे और स्कूल भी जाते रहे। पढ़नेमें यह बाल-कालसे ही बड़े चतुर थे और असाधारण

उन्नति करने लगे। इनके सरल स्वभाव और वाङ्मा-धुरीने सबको जो इनसे मिला मोहित किया। आपकी माताजीसे एक दिन इनकी जन्म-पत्रिका देखकर एक ज्योतिषीने कहा कि यह बच्चा बड़ा होनहार और कर्त्तव्य परायण होगा और मुसीबत पड़नेपर भी कभी अपनेउद्देश्यसे न डिगेगा, अपने बड़ोंका बड़ा नाम करेगा। इनके पिताजी ज्योतिषके फलित अङ्कका विश्वास नहीं रखते थे इसीसे इनकी जन्मपत्री भी सुरक्षित नहीं रखी! मेरे मांगनेपर आपने लिखा कि "जन्मपत्री तो कहीं खो गई वरना मैं भेज देता"।

तीन ही चार सालमें लालाजीने असाधारण उन्नति विद्याध्ययनमें करली तब बड़े लालाने इन्हें एक अँगरेजी व एक उर्दू समाचारपत्र पढ़नेके लिये मंगाना आरम्भ कर दिया। बड़े लाला स्वयम् एक उत्तम उर्दू लेखक हैं उससमय भी यह समाचारपत्रोंमें लेख भेजा करते थे अतः कई सम्वादपत्र विना मूल्य भी इनके पास आया करते थे। इन दिनों यह रिवाड़ीमें प्रधान फारसी शिक्षक थे, इन्होंने रेवाड़ी-स्कूलमें एक वादानुवाद समिति अर्थात् डिबेटिंग क्लब भी स्थापित कर रखा था, जिसमें सब लड़कोंके साथ

लालाजी भी प्रायः लेख पढ़ते थे व वादानुवादमें भाग लेते थे। इस क्रबमें लड़कोंके चन्देसे भी कई समाचार-पत्र आते थे जिनमें एक स्वर्गीय सर सय्यद अहमदका 'तहजीबुल अखलाक़' भी आता था। बड़े लाला कहते हैं :—"मुझे बहुत कालतक मुसलमानी धर्म्मसे एक विशेष प्रेम था। सर सय्यदके परचेने मेरे और मेरे छात्रों और निज बच्चोंके हृदयमें देश प्रेमका अनुपम बीज बो दिया था। मैंने स्कूलकी पढ़ाईके अतिरिक्त लाजपतको रेखागणित और पारसी व्याकरणका पूर्वार्ध व उत्तरार्ध भी कण्ठ करा दिया था। किन्तु रोपड़ जाकर वहांकी सीलयुक्त वायुसे प्रायः मैं और मेरा कुनबा बीमार रहा करता।" बड़ेलालाका ही कथन है कि "एकबार मैं और सब घरके एक साथ बीमार होगए, लाजपत ईश्वरकी दयासे चङ्गा था। यद्यपि लाजपतकी अवस्था ग्यारह वर्षकी ही थी परन्तु यह बराबर हकीमजीके यहां मेरा और अपनी माताका मूत्र आयुर्वैदिक परीक्षाके लिये नित्य ले जाता, दवा लाकर हम सबको पिलाता और समस्त दिन अपनी छोटी बहिनको खेलाया करता। हमारे पास एक नौकर था वह भी बीमारीके अवसरपर भाग गया इससे सारा भार

लाजपतपर ही पड़ा, किन्तु इसने अपना कर्त्तव्य बड़ी प्रसन्नता, योग्यता और सावधानीसे पालन किया। मुझे अच्छीतरह स्मरण है कि सारी आयुमें कभी लाजपतसे रुष्ट होनेका कारण मेरे सामने उपस्थित नहीं हुआ, सिवा एकबारके—जब कि मुझे लाजपतको दण्ड देना पड़ा था। इस दण्ड देनेका कारण यह था कि मैं दिन छिपे पीछे न स्वयम् घरसे बाहर रहता था न कभी किसी बच्चेको बाहर रहने देता था। एक दिनकी बात है कि दिन छिप गया लाजपत घर न आया मैंने सारा शहर (रिवाड़ीकी बात है) ढूंढ़ मारा कहीं पता न चला, अन्तमें खोजते २ नगरके बाहर एक चोयेपर पहुंचा तो देखता हूं कि यह और दो छात्रोंके साथ कबड्डी खेल रहा है। यद्यपि मैं स्वयम् व्यायाम और मरदाने खेलोंका बालकालसे अबतक बड़ा प्रेमी हूं और यह खेल मेरे मनके प्रतिकूल न था न है, किन्तु रात बीतेतक बाहर रहना मेरे मनके अनुकूल काम न था, साथ ही जिन दो लड़कोंके साथ यह खेल रहा था वह नीच प्रकृति और आवारा थे, इसलिये मैं लाजपतको वहांसे पकड़ लाया और घर लाकर दो तीन थप्पड़ लगाये। इस घटनाके पीछे फिर कभी

मैंने कोई काम आजतक इससे ऐसा नहीं देखा कि जो मेरी इच्छाके प्रतिकूल हो ।"

सन् १८७७ के अपरेल महीनेमें, लालाजीकी सगाई पहिले हो चुकी थी, ससुराल वालोंने विवाह करनेको दबाया साथ ही लाला रल्लारामजीने भी बड़े लालाको लड़केका विवाह करनेके लिये जोर दिया । लाला राधा-किशन बाल विवाहके अत्यन्त विरोधी थे लेकिन पिता भक्ति इन्हें आज्ञा न देती थी कि यह अपने पिताकी परम पवित्र आज्ञाको उल्लंघन करते और हारकर इन्हें लालाजीका विवाह १३ वर्षकी ही अवस्थामें करना पड़ा । इसी वर्ष लालाजीने मिडिल पास कर लिया और छात्र वृत्ति लेकर दिल्ली हाईस्कूलमें पढ़ने लगे ।

लालाजीकी जवानीका आरम्भकाल ।

सन् १८७८ में रोपड़ स्कूल अम्बालेको उठ गया और उसीके साथ बड़े लालाजी भी अम्बाले बदल गये । इधर लाजपतका शरीर दिल्लीमें रुग्न रहने लगा और उन्हें हार कर वर्ष व्यतीत होनेसे पहिले ही पिताके पास अम्बाले ही आना पड़ा । सन् १८७९ में पिताजी शिमलेको बदल गये तब यह अपनी पूज्या माताजी और छोटे भ्राताओंको साथ ले जगरांव पहुंचे

और लुधियानेके मिशन हाई स्कूलमें पढ़ना प्रारम्भ किया। परन्तु इधर भोजनका ठीक प्रबन्ध न हो सका, उधर लघु भ्राता लाला धनपतरायका जन्म हुआ; पिताजी घर पर न थे, माता रोग शय्यापर पड़ी थीं-हार कर लालाजीको माईजीकी सेवाके लिये शीघ्र आना पड़ा। आप कोई बड़े धनवान तो थे ही नहीं घर पर नौकर चाकर भी विशेष न थे सारा काम विचारे लाजपतके सिर पड़ा। लेकिन पुस्तक हाथसे नहीं छूटी। थोड़ा बहुत जो समय अनिवार्य्य गृह-कार्य्योंसे मिलता था सरस्वती देवीकी आराधनामें जाता था। सन् १८८० में बड़े लाला फिर अम्बाले बदल आये और हमारे चरित्रनायकको फिर एकबार पितृदेवके समक्ष सुखसे चिन्ताविहीन होकर विद्या-ध्ययनका अवसर मिला।

इन दिनोंका हाल बड़े लालाजी यों बतलाते हैं:- "इन दिनों लाजपत, एक बङ्गालीबाबू क्लार्क थे उनसे घरूतौरपर, अंग्रेजी पढ़ने लगा और फारसी, उर्दू व गणित आदि मैं ही पढ़ाता था। लेकिन बेचारे लाज-पतके पढ़नेमें बाधाओंपर बाधायें आती थीं, कुछ ही दिन बीते होंगे कि एक फोड़ा निकल पड़ा और दो

मासतक शय्यापर पड़ा रहा । इससे छुटकारा पाकर दो मासकी पढ़ाईका श्रम फिर उठाया और सन् १८८० में कलकत्ता व पञ्जाब दोनों विश्वविद्यालयोंकी एण्ट्रेंस परीक्षा एक साथ पास की। परिणाम निकलनेपर छात्रवृत्ति लेकर लाहौरमें लाहौर-कालेजके एफ. ए. में प्रविष्ट हुआ और एक वर्ष पीछे द्वितीय वर्षकी कालिज-शिक्षाके साथ मुख्तियारीकी कक्षामें भुक्त हुआ।"

इस वर्ष जब कालिज बन्द हुआ तो फिर लालाजी बड़े लालाजीके पास अम्बाले गये, किन्तु बड़े लाला इसीसमय अम्बालेसे रोहतक बदल गये अतः लालाजी भी रोहतक गए। छुट्टियोंके बीतनेपर आप अपनी माताजीको जगरांव छोड़कर लाहौर पहुंचे और इसी वर्ष मुख़्तियारीकी परीक्षा पास करली।

लालाजीका आर्य्यसमाजमें प्रवेश ।

सन् १८८२ में लालाजी अपने मित्र (अब स्वर्गवासी) विद्वान् शिरोमणि पण्डित गुरुदत्त एम० ए० व श्रीयुत लाला हंसराजजी बी० ए० के साथ लाहौर आर्य्यसमाजके सदस्य हो गये। इस समयकी बाबत लालाजी कुछ कुछ असन्तोषयुत शब्दोंमें कहते हैं;

"यद्यपि यह वकालत पढ़ता था परन्तु अधिकतर समय हिन्दी उर्दू के झगड़े व आर्य्यसमाजके प्रचार सम्बन्धमें खोकर लेक्चरबाजी करता फिरा।" समाजके मेम्बर होनेपर लालाजीने निस्सन्देह समाजके सिद्धान्तोंके प्रचारको सर्वोपरि समझा और पढ़ाईकी एवं भविष्यके आर्थिक बनाव बिगाड़की परवाह न करके लुधियाना, अम्बाला, दिल्ली और रोहतक प्रभृति पञ्जाब प्रान्तके बड़े बड़े नगरोंमें व्याख्यान देते रहे। इनके सुवक्ता होनेका प्रमाणपत्र पहिलीवार मास्टर प्यारेलालजी स्कूलोंके निरीक्षक (इंसपेक्टर) ने दिया। लालाजी कहते हैं—"जब मैं अम्बालेसे बदलकर रोहतक स्कूलमें शिक्षक था; मेरे गुरुवर मास्टर प्यारेलालजी, जो पहिले नारमल स्कूलमें शिक्षक थे और अब स्कूलोंके निरीक्षक, मेरा स्कूल देखने आये। इन्होंने मुझसे कहा कि 'पञ्जाबी होते हुए भी इस नवयुवक लाजपतका हिन्दी भाषण इतना शुद्ध, उच्च और मधुर धारा प्रवाह होता है कि पबलिक मुग्ध हो जाती है। इसके व्याख्यानोंको सुनकर दिल्लीका जनपद आश्चर्यान्वित हो गया। और अभिमानपूर्वक कहने लगे कि मुझे यह बात सुनकर और आनन्द होता है कि यह (लाजपत) मेरे शिष्यका पुत्र है।"

लालाजीका व्यवसायारम्भ ।

ज्वरादि अनेक शारीरिक पीड़ाओंके कारण लालाजी इस वर्ष वकालतमें उत्तीर्ण न हो सके ; लालाजी इसका एक कारण उनका प्रचारके लिये बहुत समय दे देना भी बतलाते हैं, किन्तु हम इस बातमें आपसे पूर्ण सहमत नहीं हैं। लालाजी सरिस चतुर, स्मरण शक्तिवाले और असाधारण मानसिक योग्यता सम्पन्न पुरुषको केवल रोग ही वाधा डाल सकता है। व्याख्यान आदि काम उलटे वकीलोंके काममें सहायक होते हैं।

कुछ भी हो इसवार परीक्षोत्तीर्ण न हो सकनेने लालाजीको जगरांवमें मुखतियारी करनेकी ओर झुका दिया। सन् १८८३ में बड़े लालाजीने एक वर्षकी फरलो अर्थात् लम्बी छुट्टी ली और जगरांव आकर लाजपतरायको मुखतियारीके काममें लगाया। यहां ६-७ मास तक लालाजीने कृतकार्य्यताके साथ,—यद्यपि नये आदमीको कृतकार्य्यता कठिनाईसे प्राप्त होती है पर यह बात लालाजीके लिये न थी,—काम किया।

वकालतका समय पास आ जानेपर लाहौर गये किन्तु ठीक परीक्षा कालमें फिर बीमार हो गये और

अनुत्तीर्ण ही लौटना पड़ा। बड़े लाला तो फरलो पूरी करके कामपर चले गये थे, आप मातेश्वरीकी सेवामें रहकर जगरांवमें फिर मुख्तियारी करने लगे। इस समय जगरांवमें रायनारायणदासजी एम० ए० मुनसिफ थे इन्हींके न्यायालयमें लालाजी काम करते थे। मुनसिफजी लालाजीकी असाधारण योग्यता देख एक दिन प्रेमसे कहने लगे कि "लाजपत तुम्हें यहां रहकर काम करना हानिकर है, यहां उन्नति तो नहीं, पर अवनति होगी, तुम्हारा सा होनहार युवक अपना भविष्य सुधारनेकी चेष्टा न करे तो दुःखका विषय है"।

वृद्धके प्रेम भरे इस शुभ परामर्शने लाजपतपर बड़ा प्रभाव डाला; आप तुरन्त माता भ्राता सबको लेकर रोहतकमें अपने पिताके पास पहुंचे। यहां मुख्तियारी करते थे और पढ़ते भी थे। इसी समय यहां लालाजीके श्रमसे आर्य्यसमाज स्थापित हुई।

पहिला काम जो परोपकारका लालाजीने किया वह एक व्यक्तिको रोहतकसे विलायत शिक्षा पानेके लिये भेजनेके वास्ते चन्दा एकत्र करके देना था। रोहतकमें आपकी मुख्तियारीकी आय ३००) ३५०) मासिक थी।

सन् १८०५ के सितम्बर मासमें बीमारीसे उठकर लालाजी पुनर्वार वकालत परीक्षाके निमित्त लाहौर गये। इसवार यद्यपि शारीरिक दशाने पूरा साथ न दिया पर आप परीक्षामें सम्मिलित हुए और कृतकार्य्य भी हो गये। सन् १८८६ में आपने हिसारमें वकालत आरम्भ की। आपकी वकालत यहां अच्छी चल निकली और पबलिकका असाधारण प्रेम व विश्वास आपने अपने चलन व्यवहारके कारण प्राप्त कर लिया।

सन् १८८८ में दयानन्द कालेज लाहौरके डिपूटेशनमें आप सम्मिलित किये गये और दिल्ली प्रभृति अनेक स्थानोंमें आपने सबके साथ साथ व्याख्यान दिये और चन्दा एकत्र किया। यही लालाजीके पबलिक कामोंमें पड़नेका समय है। इससे पूर्व हम कह चुके हैं, कि पहिली बार इन्होंने एक निर्धन छात्रको विलायत जानेके निमित्त रोहतकमें सहायता दी व दिलाई थी। इससे पता चलता है कि बालकालसे ही इनके मनका झुकाव परोपकार, विद्या प्रचार और देश सुधारकी ओर कितना था। सन् १८८८ में ही लालाजी बीमार होकर डिपूटेशनका साथ छोड़ हिसार आये, उधर इनके पिताजी भी पेनशन लेकर हिसार

पहुंचगये और आपके ही साथ रहने लगे। हिसारकी आर्य्यसमाजका अधिवेशन प्रति सप्ताह लालाजीके ही घरपर हुआ करता था, और बाबू चूड़ामणि व पण्डित लखपतराय समाजके प्रधान सेवक थे। लाला लाजपतरायकी चेष्टासे लाला चन्दूलालजी अग्रवाल, जो हिसारके प्रधान धनी मानी पुरुषोंमें से एक हो गुजरे हैं, इनका देहान्त हुए अभी १॥ वर्ष भी नहीं हुए, आर्य्यसमाजके सदस्य बने। लालाजी और लाला चन्दूलालकी मित्रता लाला चन्दूलालके जीवन तक बनी रही, जैसा कि पाठकोंको लालाजीके उस पत्रसे ज्ञात होगा जो उन्होंने वर्मासे लिखा था। यह सन् १९०७ की लालाजीकी निर्वासन कहानीमें उद्धृत किया गया है।

लालाजीका पब्लिक जीवनमें प्रवेश।

युवावस्थाके आरम्भमें ही लालाजी जीवन युद्धमें उतरे थे अब पूर्ण युवा होगये थे और हिसारमें वकालत खूब चलती थी। आपने हिसार समाजमें अपने जेबसे १५००) के अनुमान चन्दा भी दिया था और समाजसे आपका सच्चा व प्रगाढ़ प्रेम था। इन दिनों श्रद्धेय पण्डित गुरुदत्तजी एम. ए. आपके परममित्र व

पञ्जाबकी आर्य्यसमाजके सामयिक प्रधानस्तम्भ बीमार होगये। लालाजी दोबार पण्डितजीकी सेवाको गये और सब भांति सेवा करनेके अतिरिक्त आर्थिक सहायता भी की, क्योंकि पंडितजी साधु और सच्चे त्यागी ब्राह्मण थे, धनकी कभी परवाह न करते थे ; देश सेवा, वेदप्रचार और परोपकार ही आपका सरवस्व था ; नहीं तो धन कमाना आपके सरिस सुयोग्यके लिये एक खेल था। शोक है कि पंडितजी थोड़ी अवस्थामें ही स्वर्गवासी हुए। लालाजीने पंडितजीका जीवन-चरित्र अंग्रेजीमें लिखकर प्रकाशित किया, जिसका उर्दू भाषान्तर भी पीछेसे हो गया है। पंडितजीके परिवारकी सहायताके लिये चन्दा एकत्र किया गया था, जिसमें कि लाजपतने बड़ा भाग लिया।

१८८४ में कांग्रेस स्थापित होचुकी थी और ३-४ वर्ष पीछे इसका खूब चर्चा प्रान्तान्तरमें फैला। सर-सय्यद अहमद, राजा शिवप्रसाद व मुंशी नवलकिशोर कांग्रेसके विरोधी खड़े होगये। बालकालमें लालाजी सरसय्यदका पत्र 'तहजीबुल अखलाक' पढ़ा करते थे, यहांतक कि बड़े लाला सरसय्यदके बड़े भारी भक्त थे और उनकी शिक्षाओंने इनके ऊपर बड़ाभारी प्रभाव

डाला था। सरसय्यद्के आरम्भमें जो विचार थे वह सार्वभौमिक देशहितसाधक थे, पर अब उनमें अकस्मात् एक विपरीत परिवर्तन पैदा होगया था। लालाजीने यह अचम्भा देख, सय्यद्के पहिले लेखोंको लेकर उनके वदतो-व्याघात और पूर्वापर असङ्गत कथनोंकी पत्रोंके रूपमें लिखे। यह अङ्गरेजीपत्र कांग्रेसके जन्मदाता मिस्टर ह्यूम आदि महोदयोंने छपवाकर कांग्रेसमें खूब बँटवाये और उन्हींका उर्दू भाषान्तर बड़े लालाने 'कोहनूर' नामक उर्दू पत्रमें छपवाया था। हमने इन पत्रोंमें कुछ बहुत उपयोगीपत्रोंको इस पुस्तकके परिशिष्ट संख्या १ में दिया है, पाठक वहांसेदेख सकते हैं।

आपने जो सहायता हिसार रहकर लाहौर कालेजको दी और अन्य जो जो काम जनपद सेवाके आपने किये, सबका प्रभाव स्थानिक शासकोंपर बहुत बड़ा हुआ। आप हिसार म्युनिसिपेल कमिटीके सदस्य चुने गये और फिर मन्त्री नियत होगये। इसीसमय एक उच्च पदस्थ राज कर्मचारीने लालाजीको एक्सट्रा ऐसिस्टेण्ट कमिश्नरीके लिये चुनकर राजसे सिफारिस की, लेकिन हिसारके सामयिक जिला जज मिस्टर

रेनीसाहबने उनके सरकारी नौकरी न करनेके विचार-को और दृढ़ कर दिया लालाजी व रेनीसाहब दोनोंका खयाल था कि आर्थिक हानिके अतिरिक्त स्वतन्त्रता बेचना स्वयं भी एक बड़ी हानि है। सार यह कि लालाजीने सरकारी नौकरीकी ओर ध्यान न दिया। हिसारमें एक नागरी संस्कृत स्कूल लालाजीने सन् १८९१ में स्थापित कराया और व्यायाम आदिके सब सामान एकत्र किये। यहां एक साल टूर्नामेण्ट भी सरकारकी सहायतासे लालाजीने कराया।

लालाजीका अर्थ प्रेम और कुटुम्ब सम्बन्ध।

धनका प्रेम आपको औरोंकी तरह न था। बड़े लालाजी कहते हैं कि-"जबतक मैं पेनशन लेकर हिसार नहीं गया, इसका रुपया, पैसा, हिसाब, किताब सब मुनशियोंके (वकीलोंके पास प्रायः लेखक नौकर रहते हैं उन्हें मुंशी कहते हैं) पास रहता था। मैंने जाकर देखा तो हजारों रुपये वार्षिककी आय होते हुए भी एक पैसेका हिसाब नहीं मिला। इसने कभी पूछा ही नहीं कि कब क्या आया और वह कहां गया। मैंने अपने हाथमें हिसाब किताब व रुपया पैसा लिया तो भी इसने कभी कुछ नहीं. आय व्ययकी

बाबत् पूछा। मैं चाहे जोड़ धरूं, चाहे व्यय करदूं। यद्यपि मैं अपने स्वभावानुसार इसके पैसेकी परवाह नहीं रखता था न कभी १ पैसेका गोलमाल किया, पर इसने कभी कुछ नहीं पूछा। घरका सारा शासन जबतक जीवित रहीं उसकी माताके ही हाथमें रहा। इसने कभी भी अपनी माताके आगे अपने स्त्रीकी परवाह नहीं की, न भाइयोंसे अधिक अपने बच्चोंकी परवाह की। मेरी और उसकी माताकी आज्ञा अन्तिम और पक्की व्यवस्था होती थी।" अपने अधिकारकी बाबत् बड़े लालाजी ही एक स्थलपर कहते हैं—"दूलपतरायके विवाहमें मैंने मनमाना व्यय किया और इसकी शिक्षापर तो मेरी इच्छासे अधिक प्रकाशमें खर्च होनेपर भी लाजपत मुझसे छुपाकर चोरीसे और भी खर्च करता रहा।" आपको संस्कृत व देवनागरीसे इतना प्रेम है कि बड़े लालाका कथन है—"उसने मेरी इच्छाके विरुद्ध रनपतराय व धनपतरायको फारसी छुड़ाकर अष्टाध्यायी कण्ठ कराई जिससे कुछ भी लाभ न हुआ और उल्टे उर्दू फारसीमें भी अधकचचड़ रह गये।"

कुछ दिन पीछे बड़े लालाजीका मन हिसारमें न लगा और आपने चाहा कि जगरांव जाकर रहें और

कुछ व्यवसाय करें। लाजपत सदा अपने पिताकी आज्ञाको धर्म्मशास्त्रका वाक्य जानते आये हैं, आपने तजवीज स्वीकार करली और उससमय उनका जो दस बारह हजार रुपया जमा था सब दे दिया।

लालाजीका सीधा-सादापन व मोटे खाने पहरनेका स्वभाव सब उनके पिताके कारण है। इनके पिताने इन्हें बाल्यावस्थासे जिस सादगीसे रहनेका आदर्श इनके सामने रखा वही इन्होंने ग्रहण किया और अबतक वैसे ही हैं। इनमें पिता पुत्रमें वह स्नेह व विश्वास परस्पर चला आता है कि जिसके लिये आर्य्यजाति आजतक प्रसिद्ध है। लालाजीने जब पेनशन लेकर नौकरीसे अलग होना चाहा तब उनके मित्रोंने रोका कि कदाचित् लाजपतराय इन्हें सहायता न दे तो यह बालबच्चेवाले आदमी हैं कष्ट पावेंगे। लेकिन बड़े लालाको लाजपतके चालचलनपर पूरा विश्वास था और उन्होंने किसीकी न सुनी और पेनशन लेली। बड़े लालाजी कहते हैं कि "मेरे सुखी रहनेका प्रधान कारण यह है कि मैं सदासे साधारण चालचलनकी आदत रखता रहा हूं और अब भी वैसा ही हूं। मैंने सदा बच्चोंके विलासके सामानसे

घृणा की है और बहुधा उनके अपव्ययसे असन्तोष प्रकट किया है। मैं लड़कपनसे ही मितिव्ययी हूं। हिसारमें मेरा पड़ोस एक बड़े धनीका था। यद्यपि इस घरके लोगोंके चालचलन भद्र और शिष्ट थे लेकिन उनके व्यय और स्वभाव राजस्वी थे, इसलिये मैं सदा डरता रहता था कि कहीं मेरे बच्चोंका स्वभाव मितिव्यय त्याग उसी ढर्रेपर न पड़ जाय। यही कारण था कि प्रत्येक बच्चेके लिये खान, पान, वस्त्र, आभूषण और जेब खर्च मैंने नियत कर रखा था और अधिक देना पसन्द न करता था। लेकिन कभी कभी लाजपत मेरी इस किफायतके विरुद्ध छुपा कर अपने छोटे भाइयों व माताजीको ऊपर ही ऊपर-अपने मुंशीके द्वारा रुपया दे दिया करता और यह रुपया हिसाबमें न दिखलाया जाता न मुझे इसका पता मिलता, तो भी मैं ढँगसे बहुधा ताड़ जाता था। कई बार ऐसा होता था। यह अपने हाजत मन्द मित्रों और बहुधा निर्धन विद्यार्थियोंको भी ऐसे ही सहायता दिया करता था। अब भी ऐसा ही करता है। दो एक बार जब मुझे ज्ञात हो गया तो मैंने अपनी दैनिकी (याददास्त) में लिख लिया परन्तु जब ला-

जपतरायने देखा तो यही कहा कि यह आपने क्यों लिख लिया, कुछ मैंने फिरता लेनेके विचारसे थोड़ा ही दिया है। सार यह कि हिसारका समय बड़ी ही कृतकार्य्यता और धन प्राप्तिका समय था, यदि लाजपत धन एकत्र करनेका विचार रखता तो उन दिनों पांच सात लाख रुपया जमा कर लेना कठिन न था।"

लालाजीको अपने पिता मातासे प्रेम भी ऐसा ही था व है जैसा कि किसी सदाचारी, धर्म्म-मर्म्मज्ञ आर्यको हो सकता है। पिताकी बाबत् निर्वासित होनेके समय आप कहते हैं "निर्वासनके समय मुझे सबसे ज्यादह खयाल अपने वृद्ध पिताजीका था। मेरा सारा जीवन अपने पिताके आज्ञानुवर्त्तन और स्वदेशके निमित्त कर्त्तव्य पालनके मध्य एक धर्म्म सङ्कटका जीवन था। मैंने उन कामोंसे अपने पिताको असन्तुष्ट किया था कि जो उनके इच्छाके अनुकूल न थे या उनके अनुमतिके प्रतिकूल थे। आपने इस वृद्धावस्थामें भी महीनों मेरी बीमारीमें मेरी सेवाकी, एक क्षणको पृथक् नहीं हुए। मेरे स्वास्थ्यकी चिन्तामें समयसे पहिले आपके बाल सफेद हो गये। आपके ही सदाचार और भद्र व शिष्ट व्यवहारोंने मेरे मनको अध्यात्म-

की ओर झुका दिया। युवा होनेके पीछे मेरा सबसे बड़ा विचार यह रहा है कि मैं उन्हें अप्रसन्न होनेका अवसर न दूं। घरके कामोंमें उनकी आज्ञा सदा प्रधान रही है, पबलिक जीवनके अतिरिक्त मैंने सदा अपने लिये उनकी इच्छाको कानून माना है। अतः मुझे औरोंकी अपेक्षा आपका अधिक खयाल था।"(अन्यत्र)–"लेकिन आपकी बाबत् मुझे यह नहीं मालूम था कि आप अपनी लेखनीसे भी काम ले रहे हैं और वह शत्रुओंके लिये छुरीका काम कर रही है।" लालाजी श्रीमती माताजीकी बाबत् कहते हैं:—"माताजीकी ही दूरदर्शिता और चातुर्य्यका परिणाम था कि जब तक वह घरकी स्वामिनी रहीं (स्वर्गवास पर्य्यन्त) हम लोगोंमें से किसीको अल्प आय होते भी निर्धनताका कष्ट कभी नहीं व्यापा। आपके प्रबन्धमें वह गुण था कि जिससे आपको हम सच्ची गृह स्वामिनी कह सकते हैं। समयपर गृहस्थीकी ऐसी कौन चीज थी जो घरमें न निकले। थोड़ेमें बहुत कर दिखाना इन्हीं लक्ष्मीका काम था। आप निरभिमान, दानशीला और बड़ी ही धर्म्म परायण थीं। मितिव्यय, कौशल, उदारता, धर्म्मज्ञता जो अग्रवाल जातिकी खूबियां हैं माईजीमें

प्रस्तुत थीं। माताजीकी परम अनुग्रहसे, न हमें पचास रुपया मासिककी आयके साथ कभी निर्धनता व्यापी न हजारों रुपये मासिककी आयमें अमीरी झलकी। एक रस गृहकार्य्य चलाने वाली गार्हस्थ्य निपुण मातेश्वरीको धन्य है।”

हमें जहांतक पता लगा है हम कह सकते हैं लालाजी कानपूर निवासी स्वर्गवासी लाला श्यामलालजी कायस्थ वकीलकी भांति ही अपने वकालती काममें धर्म्मके पक्के हैं। गवाहोंको सिखाना, प्रमाण बनाना, दलाली देकर काम प्राप्त करना या और छल कपट जो प्रायः अदालतोंमें होते हैं आपने कभी नहीं जाना। आप ईश्वरसे भय करने वाले, सच्चे सीधे हैं, किन्तु व्यवहारमें अपनी सफाईके सबब रूखे फीके प्रतीत होते हैं; यह पाप यदि पाप कहा जा सकता है तो, सभी सच्चे और निरपेक्ष पुरुषोंमें मिलता है।

लालाजी द्वारा आर्य्यसमाजकी सेवा।

सन् १८९२ के आरम्भमें एक राय साहब महोदयके आन्दोलनसे समाजके प्रेम, दयानन्द कालेजकी प्रीति और सुधार अथच विद्या प्रसारके आन्तरिक स्नेहने लालाजीको लाहौरकी ओर खींचा। इस वर्षके अप-

रैल मास तक तो बड़े लालाजीने इन्हें हिसारमें रोक रखा, क्योंकि यहांका आर्थिक लाभ, यहांके साहूकारोंका प्रेम व सहाय्य यहांके साधारण जनपदकी दया व सहानुभूति साथ ही यहांके सामयिक राजकर्मचारियोंकी कृपा और प्रतिष्ठा इन्हें हिसार छोड़नेसे रोकती थी। हिसारके लोगोंके साथ इनके घरू सम्बन्ध भी ऐसे घनिष्ट हो गये थे कि जैसे किसीके निज ग्राममें हो सकते हैं। इन्हीं कारणोंसे हिसारमें सब प्रकारकी सुख सुविधा प्रस्तुत थी। बड़े लाला कहते हैं कि "इसे समाज सेवाके वृहत् मैदानकी इतनी प्रबल कामना हुई कि मैं जब अपरैलमें जगरांव गया, इसने अपनी स्वतन्त्रताको गनीमत जान मेरे पीछे विस्तरा बांध बाल बच्चोंको साथ ले लाहौर जा पहुंचा।"

लाहौरमें आकर लालाजीके व्यवहारिक काममें कोई अधिक बाधा नहीं हुई। यद्यपि आरम्भमें आय कम रही, लेकिन इनके चातुर्य्य, इनकी वावदूकीने आगे चलकर इस कमीका कहीं अधिक बदला दे दिया। किन्तु समाज गत आन्तरिक वैमनस्योंने इनको एक बड़ी कठिनाईके सामने डाल दिया। दिनमें सामा-

जिक झगड़ोंकी उधेड़बुनके अतिरिक्त अपना वकालतका भी काम करते, परन्तु रातको दो दो बजे तक कभी कभी प्रातःकाल चार बजे तक समाजकी अन्तरङ्ग-सभाका ही झगड़ा लगा रहता। शरीर तो इनका बालकपनसे रुग्न रहनेके कारण निर्बल था, अङ्ग दृढ़ न थे अतः अनिद्रा अर्थात नींद न आनेकी बीमारी हो चली। बड़े लालाने इन्हें समझाया कि धर्म्म, देश, जाति और समाज-सेवा बिना किसी समाज विशेषमें सम्मिलित हुए भी मनुष्य कर सकता है, जिस धार्मिक सभा या समितिमें व्यक्ति गत द्रोह व झगड़े हों, लोगोंमें अपने नाम और दिखावेकी तृष्णा झगड़ा करानेको उपस्थित हो वह धर्म्मसभा धर्म्म से गिरी हुई जाननी चाहिये। बड़े लालाके कहनेका अभिप्राय यह था कि लालाजी शरीर रक्षा करते हुए धार्म्मिक कामोंको स्वतन्त्रतापूर्वक जो कर सकें करें और समाजकी सभासदीको परित्याग कर दें।

पिताजीकी उक्त शुभ सम्मति लालाजीको प्रिय लगी और आपने समाजमें अपना त्यागपत्र भेज दिया। इसपर कालेजके पक्षवाले तो कुछ चिन्तित और असन्तुष्ट हुए परन्तु महात्मा पार्टी मनमें प्रसन्न हुई क्योंकि

लालाजीकी जुदाईसे कालेजके अनेक कामोंमें जिनका आधार एक प्रकार लालाजी ही थे, हानि पहुंचनी सम्भव थी। लेकिन दुनियादारी और सभ्य दिखावेके लिये उन्होंने लालाजीसे त्यागपत्र वापिस कर लेनेके लिये जोर दिया। एकबार राय लब्भाराम साहब व लाला ज्वालाप्रसादजी मियांवाली वाले इस निमित्त लालाजीके घरपर आये कि लालाजीसे कहकर उन्हें इस्तेफा लौटा लेनेके लिये तय्यार करें। इस समय बड़े लालाजी भी घरपर थे, जब बात चली तो लाजपतराय तो सब सुनते रहे लेकिन बड़े लालासे रहा न गया, और कहने लगे:—

"रायसाहब! जड़में तो आप इसे (लाजपतको) समाजसे अलग करनेकी चेष्टा करते हैं, लेकिन जब यह स्वयम् पृथक् होता है तो आप इस्तेफा वापिस लेनेकी शिक्षा देते हैं—इसका क्या अर्थ? मानो आप अपने मनसे त्यागपत्र उपस्थित करके पृथक् होनेसे यह अच्छा समझते हैं कि इसे अपराधी बनाकर वहिष्कृत किया जाय।" इस सच्ची साधु बातसे रायसाहब व व लालासाहब लज्जित होकर चले गए। लेकिन लाजपतको बड़े लालाकी बात अच्छी न लगी और दोनों

आये हुए भ्राताओंके चले जानेके पीछे पिताजीसे आप कहने लगे–"लालाजी ! अपने घर आयेको इस-तरह तिरस्कृत और लज्जित करना उचित न था।"

अन्तमें जब कालेज पार्टीवालोंने भी इन्हें बहुत दबाया तो लालाजीने सरल स्वभाव तो हैं ही, अपना त्यागपत्र उठा लिया और मेम्बर रह गये। लेकिन इस दशामें कालेज व महात्मा पक्षोंका साथ निर्वाह कब होना था, कालेजवालोंने पृथक् समाज स्थापित करली। इससमय लाजपतने एक उर्दू पत्र कालेज समाचारके नामसे अपनी ही एडीटरीमें निकालना आरम्भ किया। इस पत्रने धर्म्मात्मा पार्टीके लोगोंके उन दोषारोपणोंका जो उन्होंने कालेजवालोंपर किये, प्रभावशाली उत्तर दिया। बाहरी समाजोंको कालेज समाचार द्वारा वास्तविक स्थितिका और विरोधके मूल कारणोंका पता लग गया और थोड़े ही दिन पीछे उसकी आवश्यकता न रही। अतः पत्र बन्द कर दिया गया।

लालाजीने इस घटनाके पीछे वक्तृता, लेख, धन, बल और बुद्धिसे जैसे भी बना कालेजकी उन्नतिके लिये सिरतोड़ चेष्टा करनी आरम्भ की, यहांतक कि अपने वकालतके कामकी भी कुछ परवाह न की। प्रायः

कालेजके कामके कारण इनके व्यवसायमें भी हरजा होता रहा।

धर्म्मवीर पंडित लेखरामसे लालाजीका हार्दिक प्रेम था। उनकी बलि होनेपर इन्हें जो वियोग दुख हुआ वह तो लालाजी ही जानते हैं, किन्तु उनके प्रति लालाजीका कितना धर्म्मप्रेम था, इसका पता लालाजीके उन कामोंसे चलता है जो इन्होंने उनके मृत्युके उपरान्त किये। आपने पंडितजीके स्मारक आदिके लिये जो सेवा की, उसके अतिरिक्त आपने बहुत बड़ी चेष्टा इस बातकी की, कि दोनों पार्टी एक होजायँ और यही महान् स्मारक धर्म्मवीरके बलिदानका हो। किन्तु आपकी यह निस्स्वार्थ और असीम चेष्टा निष्फल हुई।

एक प्रतिष्ठित सज्जन कहते हैं कि–"इन भीतरी झगड़ोंसे कई लोग ऐसे दुखी होगये थे कि जो लाला हंसराज अपने प्रण व प्रतिज्ञापर दृढ़ न रहते तो यह सब अवश्य समाजको नमस्कार कर बैठते। लाला हंसराज अपने संकल्पपर दृढ़ रहे और बने बनाए कालेजके कामको छोड़ बैठना अङ्गीकार न किया, यही कालेजके वर्त्तमान उन्नतिका एक प्रधान रहस्य है।"

सन् १८९६ में लाजपतको निमोनियां (दूषित वायु जन्य फेफड़ेका रोग) हो गया। आरोग्य होनेकी आशा कम रह गई थी किन्तु ईश्वर कृपा हुई, डाक्टर बेलीरामकी चिकित्सासे इसबार दो तीन मासमें आराम हुआ। इस बीमारीके कष्टने लालाजीके जीवनमें बड़ा भारी परिवर्त्तन किया; आप अब वकालत आदि घरके व्यवहारोंको बहुत कम समय देने लगे—कालेज और आर्य्यसमाजके कामोंमें प्रधानताके साथ लग गये।

लालाजीके इस धर्म्मानुरागने उनके छोटे भाई लाला दलपतराय एम० ए० पर बहुत असर किया। इन्होंने लालाजीसे प्रार्थना की कि यदि कालेजसे उन्हें केवल ७०) मासिक गुजारेको मिले तो वह कालेजकी सेवाको तैयार हैं। किन्तु लालाजीने यही उत्तर दिया कि यद्यपि तुम अपनी योग्यतासे कहीं कम गुजारा चाहते हो, परन्तु मैं अपने घरवालोंके लिये कालेजसे एक पैसा भी देनेको तय्यार नहीं हूं; हां, यदि तुम भक्तिपूर्वक कालेजकी सेवाको तय्यार हो तो अच्छी बात है, मैं तुम्हें यह वेतन स्वयम् देता रहूंगा। लाला दलपतरायने यह बात स्वीकृत न की।

लाजपतका दीनों अनाथों और दुखियोंके प्रति प्रेम।

इसी समय अर्थात् १८९६-९७ में विहारकी तरफ दुर्भिक्ष पड़ा। लालाजीकी चेष्टा और आपके अटूट श्रम द्वारा यहांके अनेक दीन और अनाथ पञ्जाबमें लाये गये। और लाहौर, फीरोजपूर व मेरठ आदिके अनाथालयोंमें उनकी प्रार्थनापर दे दिये गये, और नये अनाथाश्रम भी खोले गये। पुनः राजपूतानेमें दुर्भिक्ष पड़ा, यहांके भी अनेक निस्सहाय हिन्दूधर्म्मके बच्चोंको पादरियोंके हाथसे बचानेका काम लाजपतके हाथों सम्पादित हुआ। इस समय फीरोजपूर अनाथालय भर गया था, अनाथोंके रहनेको स्थान न था, अतः लालाजीने अपने जेबसे धन देकर अपनी स्वर्गवासिनी माताजी व भगिनीके नामोंसे घर बनाकर अनाथोंको स्थान दान किया। आपके बनवाये हुए कमरे आपके पिताजी लाला राधाकृष्ण व स्वर्गवासी लघु भ्राता लाला दलपतरायके नामपर भी दयानन्द एं० वै० कालेजमें विद्यमान हैं। आपकी कमाईका वृहदांश दीनों अनाथोंके पालन और विद्याप्रसारके कामोंमें ही व्यय होता रहा व होता है।

हम कह चुके हैं कि लालाजीका मन बीमारीसे उठनेपर ऐहिक कामोंसे उपराम हो गया था। कुछ दिन तो आप कालेजमें शिक्षा देते रहे, किन्तु बड़े लाला इनके इस कामके बहुत विरोधी थे। आप नहीं चाहते थे कि १०००) १५००) मासिक उपार्जन करनेवाला पुरुष उस काममें पड़ा रहे जो ४०) ५०) मासिकके आदमीके करनेका हो अतः एक दिन यह बात लाजपतसे कही। लाजपत सदा अपने पिताकी शिक्षानुकूल काम करना अपना परम कर्त्तव्य मानते हैं अतः उन्होंने भी इस बातकी गम्भीरतापर ध्यान दिया और इससे लाभ उठाया। बड़े लालाजीका कथन है कि "यद्यपि मुझे यह बात पसन्द नहीं कि कोई कुनबे वाला आदमी जिसका सारा कुनबा कच्चा हो और जिसका सुखसे रहनेका स्वभाव भी पड़ चुका हो और जिसके भाई बहिन भी सहायताकी आशा रखनेवाले हों—इस तरह अपने सुखके जीवन और कुनबेकी दशाको भूलकर केवल एक कालेजका या समाजका ही होरहे।" आपका यह विचार वास्तविक अच्छा है तथापि आपने कभी लाजपतके धार्म्मिक उत्सर्गोंमें हस्ताक्षेप नहीं किया। जब कभी बड़े लालाने लाज-

पतसे कहा भी कि तुम्हें बच्चोंके लिये पूंजीकी जरूरत है तो यही उत्तर मिला कि आपने मुझे क्या दिया था जो मैं इनके लिये छोड़ जानेकी चिन्ता करूं। हमारा काम इन्हें सुयोग्य बनाना है फिर यह अपना काम आप चलावेंगे।

१९०७ के सितम्बर मासमें फिर लालाजीको छातीकी पीड़ा और ज्वरने आ घेरा। बहुत उपचार करनेपर भी लाहौरमें आराम न हुआ और जीनेकी आशा छूट गई। निदान यूनानी इलाज करनेके लिये एक हकीमके पास अम्बाला गये। तीन महीने तक लगातार औषध करते रहनेपर भी कुछ लाभ न हुआ। इन्हीं दिनों ला० दलपतराय जो इनके साथ गये थे ज्वरसे पीड़ित हो गये। यह समय बड़े लालाके लिये बड़ी परीक्षाका था, दो दो जवान होनहार पूर्ण विद्वान् लड़कोंकी बीमारीमें रात दिन सेवा करते रहना, बुड्ढे आदमीके लिये कम कठिन बात नहीं है। लेकिन लालाजी जिस दिल गुर्देके आदमी हैं वह पाठकोंको ज्ञात हो चुका होगा और आगे चलकर और भी ज्ञात हो जायगा। लाजपतको तो आराम हो गया लेकिन दलपतरायको आराम न हुआ और दिल्ली जाना पड़ा।

दिल्लीमें भी बहुत उपचार करनेपर दलपतरायके चंगे होनेकी आशा न हुई, तब वहांसे हिसार आये; यहांसे भी निराशता ही हुई। अन्तमें लाहौर आकर १९ जून १८९८ को लाला दलपतरायका स्वर्गवास हुआ। इस होनहार विद्वान् नवयुवककी मृत्युकी चोट लालाजी व उनके पिताजी पर बहुत बुरी पड़ी, पर ईश्वरेच्छा बलवती है।

दलपतरायका स्वर्गवास यद्यपि सारे ही कुनबेको असह्य दुःखका हेतु हुआ परन्तु इनकी माताजी तो इसी शोकमें बीमार हुईं और दो वर्ष बीमार रहकर संसार असारको त्याग कर गईं।

लालाजीकी दानशीलताकी पराकाष्ठा।

१८९८ में लाजपतने समाजके वार्षिकोत्सवपर प्रकाश कर दिया कि "मैं अपने निजके लिये अब कोई काम न करूंगा। जो धन वकालतसे प्राप्त होगा उसे मैं सार्वजनिक लाभके कामोंमें लगाऊंगा।" तबसे आज पर्य्यन्त लालाजी अपनी प्रतिज्ञापर अटल हैं। और प्रथम वर्षमें वकालत सम्बन्धी गाड़ी घोड़े आदिके सब व्ययको निकालकर जो पांच हजार रुपया बचतमें रहे सो सब वार्षिकोत्सवपर कालेजको प्रदान कर दिये।

लालाजीका चलन।

हमारे चरित्रनायक नेशनलबैंक, कालेजके मन्त्री और अनाथालयोंके प्रबन्धकर्त्ताके अतिरिक्त और भी कई संस्थाओंके कर्म्मचारी रहे हैं किन्तु जिन संस्थाओंके यह अधिकारी रहे हैं उनसे कभी इन्होंने कोई आर्थिक लाभ उठानेका सम्बन्ध नहीं रखा, न कभी लाभ उठाया, न अपने भाई भतीजोंमेंसे किसीको लाभ उठानेका अवसर दिया। आपने निर्वासनकालमें जो पत्र अपने पुत्रको लिखे हैं वह पाठकोंको इसी पुस्तकमें अन्यत्र देखनेको मिलेंगे वह बतलायेंगे कि आप जिस आत्म निर्भरताके बने हैं।

निर्धनों, दीनों और विद्यार्थियोंकी सहायता इनके प्रधान स्वाभाविक गुणोंमेंसे है। इस प्रकारके लोग यदि वैसे न लें तो ऋणके ही नामसे देदेना और फिर कभी वापिस लेनेकी इच्छा न रखना भी लालाजीकी महानताका परिचायक है। अनाथोंकी रक्षा, विधवाओंकी सहायता, दुर्भिक्षोंके समय और कांगड़ेके भूकम्पके अवसरपर जो काम भी आपने किया किसीके बदलेकी कभी राजा या प्रजासे कोई इच्छा नहीं की। समयपर औरोंके लिये रायबहादुरी व रायसाहबी या

और नेकनामी प्राप्त करनेका अवसर दे दिया जिसमें उन्हें काम करनेका हौसला बढ़े, परन्तु आप सदा इनसे अलग रहे और बड़े यत्न व चातुरीसे बचे।

१९०६ में पञ्जाबके लोगोंने लाजपतको अपना प्रतिनिधि चुनकर विलायत भेजा कि वहां जाकर आप पञ्जाबकी आवश्यकताएं और उसके दुखोंको कांग्रेसके सिद्धान्तोंके साथ साथ इङ्गलैण्डकी पबलिक-पर प्रकाशित करें। इस यात्राका व्यय भी पब्लिक-फण्ड (निधि) में से दिया जाना तय होगया था, लेकिन लोकमान्यने सारा व्यय अपने पाससे किया और उदारतापूर्वक पब्लिकफण्डके धनको लौटा दिया कि वह अन्य देशहितके कामोंमें लगा दिया जाय। आपको नेशनल बेङ्ककी डाइरेक्टरी आदिके कई कामोंमें जो फीस मिली वह आपने कभी भी निजके काममें नहीं ली और किसी न किसी पब्लिक संस्थामें ही लगा दी। इस दशामें क्या कोई समालोचक लाला-जीमें स्वार्थपरायणताका लाञ्छन लगा सकता है? इन्होंने कभी किसी पाठशाला, अनाथालय या औषधालय इसलिये नहीं खोला कि भाई बेटे पबलिक धनसे वह लाभ उठावें जो अन्यथा उनको असम्भव है और लोगोंमें बड़प्पन मिले।

सन् १९०७ की घटना लालाजीके जीवनमें बड़ी महत्वपूर्ण है, जो अकारण कष्ट इन्हें इनकी मनुष्यभक्ति, देशप्रेम, धर्म्मानुराग, और विद्याप्रसारादिके बदले राजकी भूलसे उठाने पड़े वही इनके नामको भारतके इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंमें सदा सर्वदाके लिये लिखे जानेके कारण हुए। यह मामला बड़ा नाजुक और राजनीतिसे अधिक सम्बन्ध रखनेवाला है अतः हम इस घटनाका वृत्तान्त आद्योपान्त लोकमान्य लाला-जीके ही शब्दोंमें पाठकोंकी भेंट करते हैं। लालाजीका यह लेख अँग्रेजीमें है अतः मैं इतना कहना उचित समझता हूं कि मैंने कहीं भी अपनी ओरसे नमक मिरच लगानेका साहस नहीं किया। सारा अनुवाद सच्चा और निर्दोष है। सम्भव है मेरा अँग्रेजी भाषाका कच्चा ज्ञान कहीं कहीं भूलका कारण हुआ हो पर उसके लिये मैं दायी हूं और इस लेखमें जो कुछ भी महत्व है वह मूल लेखकका है मेरा नहीं।

द्वितीय भाग।

निर्वसनकालकी 'राम कहानी'

लालाजी कथित।

९ मई १९०७ को तीसरे पहर दो बजे मैं गिरफ्तार हुआ। लोग मुझसे आशा रखते हैं कि मैं अपनी गिरफ़्तारीके पहिलेका वृत्तान्त भी सूक्ष्मतः उपस्थित करूं। अतः—

रावलपिण्डीकी इति वृत्तियां।

३० अपरेलको तारके द्वारा उस नोटिसके समाचार मिले कि जो चिरस्मरणीय लिखतका पद प्राप्तकर चुकी है। यह रावलपिण्डीके मजिष्ट्रेट मिस्टर एगनूने मेरे तीन न्यायबादी (वकील) मित्रोंके नाम निकाली थी। यह नोटिस पञ्जाब प्रान्त गत फिरङ्गी शासनके इतिहासमें प्रधान स्थान पानेके योग्य है, क्योंकि यह इस प्रान्तके प्रायः डि० कमिश्नरोंकी शासन-नियमोंकी जानकारीका उदाहरण है। इससे यह भी प्रत्यक्ष हो जायगा कि न्याय (जूडीशल) व प्रबन्ध (एक

जीक्यूटिव) विभागोंके अधिकार एक ही हाथमें व्यक्त करना कितना बुरा है ।

नियम विरुद्ध नोटिसकी नकल ।

(१) लाला गुरुदासराम बारिष्टर (२) लाला हंसराज प्लीडर (याद रहे कि यह दयानन्द कालेजके प्रधानाध्यापक हंसराज नहीं किन्तु दूसरे हंसराज हैं-राधे) (३) लाला अमोलकराम प्लीडर—(योग्य)

मेरे पास रिपोर्ट पहुंची है कि कुछ दिन पूर्व नगरमें एक विशेष सम्मिलन हुआ था और इस अधिवेशनमें (सरदार) अजीतसिंह नामक एक मनुष्य विशेष वक्ता था । कहा जाता है कि लाला हंसराज इस सम्मिलनके प्रधान और लाला अमोलकराम मन्त्री और सम्मिलनके कर्त्ता थे, और लाला गुरुदासराम स्पीकरों (वक्ताओं) में से एक थे । मेरे पास रिपोर्ट की गई है कि रञ्जीतसिंहकी वक्तृता चूडान्त उपद्रवी थी, गुरुदासरामका भी कथन ऐसा ही था और इसमें मिस्टर किचन कलक्टर बन्दोबस्त व मजिष्ट्रेटके सम्बन्धमें कठोर शब्द कहे गये थे । अतः यह नोटिस तुम्हारे नाम दिया जाता है । हम दूसरी मईको ११ बजे दो पहर

पहिले इम मामलेकी साधारण तहकीकात करेंगे आपको उपस्थित होनेकी अनुमति है। आप जो कुछ कहेंगे वह ध्यानसे सुना जायगा। इस तहकीकातके दो कारण हैं (१) अथवा तुम्हारे विरुद्ध भारत दण्ड संग्रहकी धारा १२४ (अ) एवं ५०५ के अनुसार मुकद्दमा चलानेकी अनुमति सरकारसे लेनेको यथेष्ट प्रमाण प्रस्तुत हैं। (२) निश्चित बातोंकी बाबत् फिनानशिपल कमिश्नर व चीफकोर्टकी सेवामें इस अभिप्रायसे रिपोर्ट भेजी जाय कि वह तुम्हारे मुअत्तल करने (कामसे वञ्चित रखने) या कानूनी व्यसायियोंके ऐकृकी धारा ३७ व ४१ के अनुसार या जैसी भी स्थिति हो कार्य्यवाही करनेके लिये आज्ञा दें। कृपया इस नोटिसके नीचे लिख दें कि "देख लिया गया"।

पी० डी० एगनू डि० म०—३० अपरेल १९०७

प्रत्यक्ष है कि यह नोटिस कानून-विरुद्ध था, मजिष्ट्रेटको किसी फौजदारी या कानूनी व्यवसायियोंके कानूनके अनुसार यह अधिकार न था। इस नोटिससे जिलेके मजिष्ट्रेटका मतलब इन महाशयोंको अपमानित करना था—इन्हें अपमानका दुःख हो और जनपद भयभीत हो जाय। उक्त तीनों सज्जनोंसे मुझे

मैत्रीका बड़प्पन प्राप्त था इनमें पूर्वोक्त दो सज्जन इस प्रान्तमें राष्ट्रीय आन्दोलनके अग्रगण्य समझे जाते हैं और इनकी योग्यताके कारण मैं ने सदासे इन्हें प्रतिष्ठा दृष्टिसे देखा है। तीसरे सज्जनके साथ मेरा व्यक्तिक घनिष्ट सम्बन्ध था। अतः इनके ऊपर फन्दा पड़नेका समाचार सुनकर मैं ने अपना प्रधान कर्त्तव्य जाना कि मैं रावलपिण्डी जाकर इनसे सहानुभूति प्रकाश करूं और अपनी योग्यतानुसार सम्मति दूं। एतदनुसार मैं अपने मनसे ही एक मईकी डाकगाड़ीसे ८ बजे साय-ङ्कालमें रावलपिण्डी पहुंचा और सीधा स्वर्गवासी लाला गुरुदासराम साहनीके घर चला गया। रातको बातचीत हुई, किन्तु रोग-ग्रस्त होनेके कारण लाला अमोलकराम सम्मिलित न हो सके। इस बात चीतमें यह निश्चय हुआ कि मजिष्ट्रेटका यह नोटिस न्याय-विरुद्ध है, पहिलेका कोई ऐसा उदाहरण भी नहीं मिलता, अतः तीनों ही सज्जन व्यक्तिगत न्यायालयमें उपस्थित न हों और न इस अनुसन्धानमें भाग लें। मिस्टर अजीज अहमद वारिष्टर और मिस्टर बोध-राज साहनी वारिष्टर (लाला हंसराज साहनीके पुत्र) न्यायालयमें उपस्थित रहकर कार्य्यवाहीको इनकी ओरसे देखते रहें।

न्यायालयमें क्या हुआ।

दूसरे दिन मैं लाला गुरुदासराम साहनीके साथ कोर्ट पहुंचा। दर्शकोंका झुण्ड आ रहा था। कार्य्यारम्भका समय ११ बजे था, पर पहिले ही से कचहरीका परकोटा मनुष्योंसे भर गया था। इससे मुझे अचम्भा न हुआ क्योंकि मैं जानता था कि यह तीनों सज्जन कैसे जनपद-प्राण-प्रिय हैं। सरकारी हथियारघर व कारखानोंके कारीगरोंके काम छोड़ देनेके कारण भीड़ और भी बढ़ गई थी। डि० कमिश्नरकी प्रतीक्षा क्षणक्षण होरही थी पर आप देरसे पहुंचे, अतः भीड़ बेचैन थी। साढ़े बारह बजे साहब तांगे सवार पहुंचे। इनके चौकीपर बैठते ही लोग भी कचहरीमें घुस आये। मजिष्ट्रेटने वारिष्ट्रोंसे कहा—आज कार्य्यवाही न होगी दूसरा दिन स्थिर करके सूचना दी जायगी। डि० कमिश्नरने मिस्टर अजीज अहमदसे यह भी कहा कि वह भीड़को कह दें कि विचल जाय। मिस्टर अजीज अहमदने उत्तर दिया कि मेरे मुवक्किल इस भीड़के दायी नहीं हैं; भीड़का तितर बितर करना मजिष्ट्रेटका कर्त्तव्य है। याद रहे कि इस अवसरपर सुपरिंटेंडेंट पुलिस भी अदालतमें मौजूद था।

अभियोगके स्थगित किये जानेकी खबर भीड़ने निराशता और विजय मिली हुई भावनासे सुनी। निराशता तो इस लिये कि अनुसन्धान किसी दूसरी तिथिको होगा और विजय इसलिये कि मजिष्ट्रेट साहब प्रत्यक्षमें अनुसन्धान करनेसे हटे। कईयोंको यह कहते सुना कि 'हम फिर आ न सकेंगे' मानो इनकी उपस्थिति इस अभियोगके अनुसन्धानमें आवश्यक हो। यह बात मैंने यहां इस कारण कही है कि लोग जान लें कि जिला मजिष्ट्रेटकी धींगा-धींगीने, जो ऐसे ऐसे जनपद-प्रिय सज्जनोंके विरुद्ध हुई जो प्रजाके लाभोंके ही पक्षपाती थे और जिनपर जनपदके साथ सहानुभूति प्रकट करनेके ही कारण यह विपत्ति आई थी, लोगोंके मनोंमें कितनी उत्तेजना पैदा कर दी थी।

मजिष्ट्रेट द्वारा अभियोग स्थगित किये जानेपर पब्लिकने इन राज-कोप-भाजन वकीलोंको जलूसके साथ ले जानेकी प्रबल प्रार्थना की, किन्तु उन्होंने सर्वथा अस्वीकार किया। भीड़ चुपचाप रहनेवाली न थी, मुझसे उससमय वक्तृता करनेके लिये खबर की गई, पर मैंने स्वीकार न किया। फिर वैकालमें वक्तृता करनेका मुझपर दबाव डाला गया और मुझे सर्वथा अपने

इच्छाके विरुद्ध यह प्रार्थना स्वीकार करनी पड़ी। भीड़ नगरकी ओर चली गई। थोड़ी देर बाद समाचार मिला कि उस भीड़मेंसे कुछ दँगेड़ी विचलित मस्तक अलग होकर साहब डिप्टीकमिश्नरके हातेमें हानि कर रहे हैं; और कुछ जिला जजकी कोठीकी ओर गये हैं। बार-रूमके भीतरका, जहां मैं बैठा था, प्रत्येक उपस्थित जन इस समाचारसे अचम्भित होरहा था। मैं तो कुछ बोल न पाया था कि एकने कहा, वास्तवमें सफेद वर्दीकी पुलिसने (गुप्त पुलिस) भीड़को इस अत्याचारके लिये उकसाया है जिससे वकीलोंपर अधिक विपत पड़े। सब लोगोंने जो स्थानिक पुलिसकी करनीसे जानकार थे इसे यथार्थ मान लिया। सबकी आंख डिप्टी कमिश्नरके बँगलेकी ओर लगी थीं कि वह स्वयम् जाकर बलवेको रोकें। परन्तु भीड़के सिविललाइनकी ओर जानेके समाचार मिले और डि० कमिश्नर कमरेसे बाहर न निकले।

लाला हंसराजजी साहनीको यह समाचार पाकर बड़ा ही खेद हुआ। मैं इस समाचारके पाते ही थोड़ी देरमें लाला गुरदासराम साहनीके साथ उनके घर गया। और जलपान करके चार बजेके लगभग हम लाला

हंसराज साहनीके घरको चले। वहां जाकर उन्हें दांतकी पीड़ासे दुखी बिछौनेपर पड़ा पाया। तथापि हमने उनके सम्मिलनमें न जानेसे भ्रम होनेका डर देखकर उन्हें साथ चलनेको दबाया। हम लोगोंने चाहा कि जो दङ्गा दोपहरमें हुआ था उसके विरुद्ध अपनी अप्रसन्नता प्रकाश करें। किन्तु सभास्थलको जाते राहमें एक मनुष्यने आकर कहा कि डि० कमिश्नर साहब आपको याद करते हैं और अशान्तिके भयसे सम्मिलनको आज्ञानुसार बन्द कर दिया है। सभास्थलका मार्ग उसी जगह होकर जाता था जहां साहब कुरसीपर बैठे थे और पुलिसका एक सुदृढ़ प्रतीक अर्थात पोष (रक्षक सिपाहीका झुण्ड) परकोटा बाँधे था, और दूसरा लघुनालिकाएं लिये आज्ञा पाते ही ताड़नापर तुला खड़ा था।

इस घटनाकी बाबत् मजिष्ट्रेटने रावलपिण्डी बलवाके अभियोग गत अपनी साक्षीमें यों लिखाया है:—

"५ व ५॥ बजेके बीचमें भीड़मेंसे आनन्दध्वनि आरही थी, मैं बाहर पेड़ोंके नीचे बैठा था कि लाला लाजपतराय १०–१२ जनोंके साथ निकले। साथी मेरी समझमें वकील थे। यद्यपि मैंने विशेष ध्यान नहीं

दिया था परन्तु समीपस्थ लाला हंसराजको, लाला गुरुदासरामको और एक वकीलको जिसका नाम मेरे विचारसे नानकचंन्द है, मैंने पहिचाना। मैंने लाजपतरायसे कहा कि जो सम्मिलन तुम मस्जीमें करना चाहते हो मैं बन्द करता हूं। २५ पुलिस (नागरिकसेना) का प्रतीक नालिकाएं भरे तय्यार हैं जो भीड़ न हटी तो मैं बन्दूक दागनेकी आज्ञा देदूंगा और सबसे पहिले तुमपर दुर्घटना पड़ेगी। मैंने लाला हंसराज व गुरुदाससरामसे भी कहा कि आज प्रातः जो कुछ प्रघटित हुआ है मैं तुमको उसका दायी ठहराता हूं। लाजपतरायने कहा कि 'मुझे इन रिमारकोंपर आपत्ति है मैं कानून जानताहूं, यह बात मेरी यादमें मिस्टर टामकिन्सके प्रति कही गई थी।' मैंने कहा मैं यहां आपत्ति न सुनूंगा प्रत्युत तुम्हें मेरी आज्ञा माननी होगी और वह आज्ञा यह है कि कोई सम्मिलिन न होने पायेगा, सुतराम् तुम और वकीलगण घरको वापस चलदो।"

इसी घटनाको उक्त कथनसे कुछ भिन्न और अधिक ठीक करके अपने उसी सायङ्कालके तारमें पञ्जाबी यों कहता है।

'साहब डि० क० के तहकीकात स्थगित करने पर लोगोंकी प्रबल इच्छासे प्रकाशित किया गया कि आज सायङ्कालको लाला लाजपतराय कौरनक गञ्जमें लैक्चर देंगे। निश्चित समयसे एक घण्टा पहिले साहब डि० कमिश्नर व सु० पुलिस थानेमें आ बैठे और सम्मिलनके न्याय विरुद्ध होनेकी आज्ञा निकाल दी। साढ़े पांच बजेके समीप जब लाला हंसराज साहनी, लाला गुरुदासराम और लाला हंसराज भण्डारी और अन्य महाशय वक्ताके साथ सम्मिलन भूमिको जा रहे थे साहब डि० क० की आज्ञासे मार्गमें रोके गये। जिला मजिष्ट्रेटने पूछा कि लाजपतराय कौन हैं ? जब लाला लाजपतराय सामने हुए तो आपने कहा कि 'मैंने जिला मजिष्ट्रेटके नाते सम्मिलन बन्द कर दिया है। पुलिसको गोली दे दी गई हैं। अस्वार रिसाला मँगवा लिये हैं। मेरी व्यवस्था सुनलो—'यदि सम्मेलन परबस बैठनेकी चेष्टा करे तो पुलिस बन्दूक चला बैठे—अतः मैं आज्ञा देता हूं कि तुम तुरन्त ही अपने अपने घरोंको जा लो और सम्मेलन मत करो। फिर ला० हंसराजके प्रति कहा गया—'मैं आशा करता हूं कि आजकी घटनासे तुम्हें सन्तोष होगया होगा। यह

घटना कलके सम्मेलन और उसके पहिलेके सम्मेलनका सीधा फल है। मैं कहता था कि उक्त सम्मेलन उपद्रवी थे, आजका भी सम्मेलन उपद्रवी होगा, इसीसे मैंने बन्द कर दिया है। भयानक परिणामोंके निमित्त मैं लाला अमोलकराम मन्त्री, लाला गुरुदासराम प्रधान और तुम्हें (लाला लाजपतराय वक्ता) को दायी पकड़ता हूं।

अतः पर मि० टामकिन्सने ला० लाजपतरायसे कहा—"आप जान रखें कि आप दायी होंगे।" लालाजीने कहा—"मैं जहां तक थोड़ा-बारा राज-नियमोंको जानता हूं, अपने दायित्वको पहिचानता हूं; आज्ञा सुन चुका हूं।" जिला मजिष्ट्रेटने फिर वही सम्मिलन उपद्रवी होगा आदिकी घोषणा करनी चाही तो लालाजीने उत्तर दिया कि "मैं इस कथनका प्रतिवाद करता हूं, मैं ने शासन सुन लिया है।" मजिष्ट्रेटने कहा कि हां "मैं जानता हूं कि तुम्हें आपत्ति है। मैं ने आज्ञा दे दी है। अच्छा है कि **तुम परे हट जाओ।"** लालाजीने (इस असभ्यताके उत्तरमें) कहा "मैं तुम्हारे बुलानेसे आया हूं अपने मनसे नहीं। तदनन्तर वकील गणने जनपदको

मजिष्ट्रेटकी आज्ञाकी सूचना दे दी और घर चल दिये।

सारी रात पकड़ धकड़ की, जेलमें ठेलनेकी, पुलिसके अत्याचारोंकी अशान्ति उत्पादक किम्वदन्तियां नगरमें सुनाई देती रहीं।

दूसरे दिन पहर दिन चढ़े मिस्टर गुरुदासराम व मैं कचहरी गये। कार्य्य न होनेके कारण मैं लाला अमोलकरामके साथ जिनका शरीर ठीक न था जल्दी लौट आया। लाला हंसराज कचहरी नहीं गये थे क्योंकि उन्होंने पीड़ित दांत सायङ्कालमें निकलवा डाला था और उन्हें कुछ ज्वरांश सा था।

पांच वकीलोंका बन्धन।

३ मईको तीसरे पहर तीन बजे मुझे गुरुदासरामके नौकरने आकर जगाया व सूचना दी कि वह जेल भेजे गये हैं। मैं उठकर तुरन्त कचहरी पहुंचा तो ज्ञात हुआ कि पांच वारण्ट कटे हैं, उनमेंसे ला० गुरुदासराम व मिस्टर खजानसिंहके पकड़े जानेसे दोकी सिद्धि होगई है शेष दो लाला हंसराजजी साहनी व लाला अमोलकरामके लिये थे। पांचवेंकी स्पष्ट कथा ज्ञात न हुई। लोगोंका अनुमान था कि वह पांचवां मैं हूं।

किन्तु शीघ्र ही रिसालेके अस्वार बारकूमके पास पहुंचे और निश्चय होगया कि पांचवें भद्र पं० जानकीनाथ कौल बारिस्टर पकड़े गये हैं । इसीसमय देखा तो शेष दो बारस्टरोंकी सिद्धिस्वरूप लाला हंसराज साहनी व अमोलकराम एक तांगेपर बैठे सवारोंके पहरेमें आरहे थे । लाला अमोलकराम प्रसन्न चित्त थे । लाला हंसराजको एक पुलिस अफसर कानमें कुछ सम्मति देना चाहता था परन्तु आपने वीरतापूर्वक उसे उत्तर दे दिया था । शेसन जजके पास पांचों भद्रोंके प्रतिभाव्यकी प्रार्थना की गई और अस्वीकृत हुई । सर्वसम्मतिसे मैं बम्बई मेलसे ४ बजे रावलपिण्डीसे लाहौर चला आया । चौथी मईको चीफकोर्टमें प्रतिभाव्यका प्रश्न उठाया, प्रधान जजने आज्ञा दी कि यह प्रार्थना पञ्चोंके समक्ष हो जिसमें (पञ्चमें) चीफजज और एक बारिस्टर जज सम्मिलित हों । यह उत्तर अभूतपूर्व व असाधारण था । प्रश्न उठनेपर राजवकीलने प्रतिभाव्य लेनेका विरोध किया, जजोंने यह बात ६ मईपर इसकारण स्थगित की कि उनके समक्ष विचार करनेके लिये पर्य्याप्त व आवश्यक वृत्त प्रस्तुत न थे । साथ ही राजके एडवोकेटको यह आज्ञा दी

कि अभियोगको अच्छीतरह मनन करके तिथिपर आवें जिसमें व्यवस्था दी जा सके।

६ मई सोमवारको डि० कमिश्नर व्यक्तिगत उपस्थित हुए और अपना लिखा हुआ वक्तव्य रावलपिण्डीके कमांडिंग अफसरकी चिट्ठी सहित न्यायालयमें उपस्थित किया। इसको दोषारोपितोंके कौंसिलीको प्रार्थना करनेपर भी नहीं दिखाया गया। सुतराम् प्रतिभाव्य प्रार्थना अस्वीकृत हुई। दूसरे दिन फिर उक्त चिट्ठीकी नकल मांगी पर न दी गई। इसपर फीस देकर कौन्सलीने इसे देखना चाहा किन्तु नहीं आज्ञा हुई। इस कार्य्यवाहीकी बाबत् जनपदके विचार क्या थे, ८ मईके पञ्जाबीसे पता लगता है। इस लेखमें मेरे मनके भावोंको ठीक चित्रित किया गया है।

पञ्जाबीका लेख।

कुस्तुनतुनियाकी ५ अपरेलकी जो चिट्ठी १ मईके साप्ताहिक 'बम्बई टाइम्स आव इण्डिया' में छपी है उसमें तुर्कीके गुप्तचारोंके सम्बन्धमें निम्न विचार हैं। बम्बई टाइम्सका सम्वाददाता लिखता है:—"तुर्कीमें बमका गोला फेंकनेवाला प्रायः उन्नतिका भूखा टिकटिकी पुलिसका व्यक्ति होता है। ऐसे व्यक्तिको

परवाह नहीं होती कि कोई मरता है या बचता है वह सुलतानकी दृष्टिमें अपना विश्वास उत्पन्न करना चाहता है। जब एकबार विश्वास जम गया तो उन्नति व कृतकार्य्यता निश्चित है ऐसा व्यक्ति बड़ी प्रतिष्ठाका पात्र समझा जाता है। चाहे मरनेपर जनपदके मनोंमें उसकी प्रतिष्ठा न हो किन्तु अपनी कृतकार्य्यताके कारण वर्तमान जगत्‌में उच्च पदको पहुंचकर अच्छी दशामें मरता है।"

लाहौरमें दूसरीबार अधिक चीतकार फैलनेके पीछे अनेकबार यह प्रकट किया गया कि नवीन उपद्रव उन सफेद वर्दीके पुलिसवालोंकी कारस्तानीका फल है कि जो उन्नति और सांसारिक उच्चपद प्राप्ति और लाभकी इच्छासे टर्की पुलिस अफसरोंसे अपनी उत्तेजना दिखलानेमें किसी भांति कम नहीं हैं; प्रत्युत भारतमें अनेक चलानों और दोषारोपितोंकी स्वीकृति इसका प्रमाण और निस्सन्देह होचुका है। यह ऐसी बात है कि जो प्रत्येक व्यक्ति जिसको न्यायालयोंसे कभी काम पड़ा है अच्छीतरह जानता है। यह बात कि हाकिमोंको ६ अपरेलके प्रकाशित दंगे-बखेड़ेके मुख्य अपराधियोंका पता न लग सका इस बातकी

पुष्टि करती है। रावलपिण्डीमें जो दङ्गे-बखेड़े हुए उसके भी जन्मदाता यही पुलिसवाले बतलाये जाते हैं। शुक्रवारकी रातको अनारकलीमें पुलिसके अत्याचारका दृश्य, कतिपय निज आंखोंसे देखनेवाले प्रतिष्ठित साक्षियोंके कथनके अनुसार, इस विचारका अनुमोदक व दूसरा इसी प्रकारका प्रमाण था। इस दशामें हाकिमोंसे यह इच्छा करना अनुचित नहीं कि वह प्रथानुसार पुलिसकी इच्छासे अनुप्राणित होकर काम करनेकी अपेक्षा स्वयम् अधिक सावधानी व बेलाग होकर देखा करें। हमारी सम्मतिमें सारे प्रान्तके सरकारी परिकरोंमें प्रान्तके भीतर बेचैनीके अस्तित्वका विचार गुप्त पुलिसकी अत्युक्ति युक्त रिपोर्टोंके कारण उत्पन्न होगया है और हमें यह देखकर आश्चर्य्य और दुख होता है कि शासन (गवर्नमेण्ट) इन रिपोर्टोंसे घबरा गई।

वर्त्तमान स्थिति।

पञ्जाबमें दशा बहुत नाजुक होगई है रावलपिण्डीमें प्रतिष्ठित लीडरों अर्थात् मुखियाओंकी गिरफ्तारी और उसके उपरान्तकी कार्य्यप्रणालीसे प्रकट होता है कि गवर्नमेण्टने कठोरता और निर्दयताकी नीति

(पालीसी) ग्रहण करली है। विना राजनैतिक भावोंके विचारके रावलपिण्डीके मुखियाओंकी गिरफ़्तारीसे गवर्नमेण्टने प्रत्यक्षमें ही स्थिर कर लिया है कि कठोरता द्वारा जनपदमें भय और कातरता उत्पन्न करे। रावलपिण्डीकी गिरफ़्तारियां इस बातका पहला लक्षण हैं। नाममात्रकी ही अदालती कार्य्यवाहीसे जो अङ्गीकार हुई है यह प्रकट होता है कि इससे किसी प्रकारकी विना लाग-लपेट अनुसन्धान और निष्पक्ष व्यवस्था (फैसला) की लोग आशा कर सकते हैं? जिस दिन यह गिरफ्तारियाँ हुईं उस दिन धारा १२४ अ या ४३६–१४७ या १०९ भारत-दण्ड-संग्रहकी धाराओंका अपराध दोषारोपितोंपर लगानेके लिये कोई प्रमाण उपस्थित न थे, अथवा कमसे कम कोई प्रमाण लिपिबद्ध नहीं हुआ। सेसन जजने भी विना इस बातके विचारे कि दोषारोपितोंके प्रतिकूल कोई प्रमाण है या नहीं, प्रतिभाव्य लेना अस्वीकार कर दिया। सेसन जजपर डिप्टी कमिश्नरकी रिपोर्ट प्रभाव डाल रही थी कि दोषारोपितोंके छोड़नेसे दङ्गा और भड़केगा और यह भाव चीफकोर्टमें भी प्रधानता कर रहा था, प्रत्येक उपस्थित द्रष्टा जजोंके रूपकसे ही

इस बातका अनुमान कर सकता था ; न्याय करनेकी इच्छा और प्रबन्ध सम्बन्धी भयमें जो प्रतिद्वन्दता मनोंमें होरही थी उनके मुखमण्डलपर झलकती थी। इनकी न्यायपरायण अन्तरात्मा इन्हें दबाती थी कि वह सरकारसे या सरकारी एडवाकेटसे पूछें कि उपद्रवी वक्तृताओंमें बलवा प्रघटित होनेका कौनसा प्रमाण है और उपद्रवकारियोंके आग लगाने व हानि पहुंचानेसे इन दोषारोपितोंका क्या सम्बन्ध है यद्यपि इन प्रश्नोंका कोई उत्तर नहीं दिया गया था ? तथापि डिप्टी कमिश्नर व सैनिक अनीपति (कमान अफसर) की सम्मतियां इनके हाथ बांधे थीं अन्ततः प्रबन्ध-नीतिके सामने इन्हें मस्तक झुकाना पड़ा। यद्यपि इस दृश्यपर यवनिका पतन होता है तथापि भविष्यके घटनाकी सुरसुराहट मिलती है। प्रत्येक जनको प्रस्तुत रहना चाहिये कि एक दिन इससे भी अधिक कठोरताकी आशासे वर्त्तमान स्थितिमें उसीके समान घटनाओंका अच्छीतरह अनुमान करके आगेके लिये अपनी कार्य्यप्रणाली स्थिर करले।

इस प्रकारकी स्थितिमें हमें यही करना चाहिये कि जब तक मजिष्ट्रेटी बल हमारे काममें प्रत्यक्ष

बाधक न हों जब तक प्रबन्धकारी हाथ हमारे काममें आक्षेप करके रोक न दें, हम अपना काम वीरता, धीरता और निर्भयतासे जारी रखें। लगातार सम्मिलनपर सम्मिलन करते चले जावें जिसमें इन सम्मिलनोंको नियम विरुद्ध न्यायके प्रतिकूल कहने और बलात् अस्तव्यस्त करनेका मजिष्ट्रेटको अवसर प्राप्त हो। इतना ध्यान रहे कि राजनैतिक कामोंमें दङ्गा, फसाद, उपद्रव न होने पावे। हमें विश्वास नहीं है कि इस प्रान्तमें उपद्रव और बखेड़ेकी मूर्खता जन्य उत्तेजना प्रस्तुत है; हमें पक्का विश्वास है कि रावलपिण्डीका बखेड़ा गुप्त पुलिसकी कारस्तानी है। गुप्त पुलिस उपद्रव करके झूठा भय उत्पादन करती है और अपने और दूसरोंके वास्ते काम निकालती है। गत वृहस्पतिवारकी अनारकलीकी घटना ऐसे ही कारणोंका कार्य्य है।

गम्भीरता, न्याय परायणता और धैर्य्य हाथसे न जाने दो।

"हम राजनैतिक कामको धींगामुस्तीसे पतित न करें यद्यपि राज कर्म्मचारी न्यायपालनमें त्रुटि करते

हैं और जनपदको न्याय विरुद्ध आचरणकी ओर इससे प्रेरणा होती है परन्तु याद रहे कि हम देशके राजनैतिक सुधारके पवित्र काममें लगे हैं, नीच वृत्तियोंको अपने काममें हस्ताक्षेप न करने दें। सिवा उस हिन्दुस्तानीके कि जिसकी नैतिक समझ विदेशी शासन गत नितान्त नष्ट होगई हो या असीम क्रोध व उत्तेजनाने उसे विक्षिप्त कर दिया हो, कदाचित कोई अबलाओंपर कायरपनसे आक्रमण नहीं कर सकता। चाहे फिरङ्गी कुछ कहें वरन् भारतवासियोंके मनोंमें महिलाओंकी व्यक्तियोंके लिये विशेष प्रतिष्ठा प्रस्तुत है। भारत सन्तानके लिये पत्नी अर्धाङ्गिनी है अन्य स्त्रियां पूज्या देवियां—माता व भग्निनीके समान् हैं। विगत कपोल कल्पित बखेड़ेमें हमें विश्वास है कि कभी किसी भारत-पुत्रने भूले भटके पथिकपर कोई ऐसी नीचताका आक्रमण न किया होगा। यह निस्सन्देह पतित, प्रतिष्ठा विहीन गुण्डोंका काम है वह चाहे जो हों। हमारे देशवासी स्थिर मन रहेंगे और अपने राजनैतिक स्वत्वोंकी प्राप्तिकी चेष्टाको धीमी न पड़ने देंगे; राजनियममें पर्याप्त स्वतन्त्रता और विस्तृत मैदान

कामको है। अतः हमें न्यायसीमाको दृष्टिमें रखकर सावधानीसे काम करना चाहिये। जो प्रबन्ध अधिकार, मजिष्ट्रेटी शक्तिसे यह काम न्याय विरुद्ध ठहराया जाकर बलात् बन्द किया जाता है तो होने दो लेकिन हमारी ओरसे भयके कारण हतोत्साह होकर बन्द न हो। राज बन्द करदे तो करदे, राजाज्ञा हम मानलें—आप सरकार उसका उलटा फल देखेगी। प्रजा अपने कामके लिये नया ढँग हाथमें लेनेको बाध्य होगी। इसके पहिले हमारा काम प्रत्यक्ष प्रकाशमें नियमानुकूल होता आया है और सरकारको अप-वादका अवसर नहीं मिला।"

यह भाव ६-७ मईके मूर्खताजन्य झंझाका पूरा विश्वास होने पर लिपिबद्ध हुए थे। एक दोस्तने मुझे सूचना दी कि योरोपियन राज कर्मचारी मेरे ऊपर दांत पीस रहे हैं और मुझे सब उपद्रवकी जड़ मान कर कष्ट देनेको प्रस्तुत हैं अतः मैं सावधान रहूं। दूसरी सूचना मिली कि मेरी लायलपुर वाली वक्तृता की छान-बीन होरही है जिससे मेरे विद्रोही भावोंका पता लगे। तीसरे राज-कर्मचारी-प्रियने सूचना दी कि मेरे साथ कूका-प्रधान भाई रामसिंहका सा वर्त्ताव

होने वाला है। कितनोंने मुझे सम्मति दी कि मैं वर्त्तमान उपद्रव शान्त होजाने तकके लिये लाहौर छोड़ जाऊं। मेरा सबसे यही उत्तर रहा कि मैंने कोई अपराध नहीं किया जिसका मैं दायी हो सकूं अतः मेरे डरनेका कोई कारण प्रस्तुत नहीं।

अलबत्त इस समय मुझे रावलपिण्डीके मित्रोंकी चिन्ता थी। मैं सुखसे सोऊं और वह अकारण जेलमें रहें, परन्तु मुझे ज्ञात हुआ कि उनके कतिपय मित्र व सम्बन्धी मेरे रावलपिण्डीमें उनके समीप रहनेसे अप्रसन्न थे और उन्होंने मुझे वहां जानेसे रोक दिया। बाजोंकी भावना थी कि यह आपत्ति इसलिये उन पर आई कि मैं रावलपिण्डीमें था। अतः वह मुझसे विगत-सम्बन्ध बतनेको बेचैन थे। इस दशामें मैंने अपनी आन्तरिक सहानुभूतकी सूचना उन दुखियोंके पास भेज दी और कह दिया कि मैं सर्वथा उनकी सेवाको प्रस्तुत हूं किन्तु मेरा रावलपिण्डीमें अप्रस्तुत होना उन लोगोंकी इच्छाके कारण है जिनके हाथमें अभियोगकी वल्गा (बाग) है।

यह समाचार भेजकर मैं उनकी सेवाके लिये दूसरी तरह प्रस्तुत हुआ चाहता था कि लाहौरमें

सभा करके रावलपिण्डीकी घटनापर अप्रसन्नता प्रकट की जाय और स्थानान्तरमें भी ऐसी सभाएं हों पर इस बातपर जोरसे सिर हिलाया गया। दूसरी बात यह थी कि हम लोग पिछले विरोधोंको भूलकर अपने बलको एकत्र करलें और मिल बैठें, मैंने इसका व्यवहार भी किया और एक प्रतिष्ठित व्यक्तिसे मिला जिसके साथ मेरी मैत्री नहीं समझी जाती थी।

मेरे पकड़े जानेकी किम्वदन्तियां खूब गरम हो-रही थीं, अतः मैंने आवश्यक पत्रोंकी देख भाल की; कि कोई आवश्यकपत्र उत्तर दिये विना न रह जाय। दूसरा काम मुझे यह भी था कि मैं अपने ऊपर आने वाली आपत्तिके लिये पिताजीको तैयार करूं। मेरी पत्नी व मेरी पुत्री जो अभी दो ही मास बीते थे कि विधवा हुई थी और मेरा छोटा लड़का मेरी ससुराल (लुधियाने) गये थे। कुनबेमें से केवल मेरा बड़ा लड़का मेरे पास था। स्त्री व पुत्रीका इस समय मेरे पास न होना मेरे लिये कुछ धैर्य्यका कारण था क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि पकड़े जानेके या घरकी तलासी होनेके समय इनकी ओरसे हा-हू हो। कुटु-म्बियोंमें से मुझे सबसे अधिक खयाल अपने वृद्ध

पिताजीका था। मेरा सारा जीवन अपने पिताकी आज्ञाके पालन और अपने देशके कर्त्तव्योंके मध्य एक धर्म्मसंकटका जीवन था। मैं ने प्रायः अपने उन कामोंसे कि जिनके वह अनुकूल न थे प्रायः उन्हें दुखी किया था, किन्तु आपकी अप्रसन्नता कभी चूड़ान्तको नहीं पहुंची। अप्रसन्नताकी दशामें भी आप मेरे संरक्षक देवके समान ही साथ रहते थे। मेरे स्वास्थ्यकी चिन्तामें आपके बाल समयसे पहिले ही स्वेत हो गये। जब मेरे जीवनकी आशा जाती रही, आपने बहुत वृद्ध और निर्बल होते भी महीनों रात दिन मेरी रख-वाली की और रुग्न-शय्याके पाससे क्षण भरको परे न हुए। ऐसा प्रीत सम्पन्न सम्बन्ध मेरे साथ रखना पिताजीका जीवन सिद्धान्त रहा है। इसी सिद्धान्तका मुझपर वह प्रभाव हुआ है कि मैं घरबार कुटुम्ब कबीला सबको आशीर्वाद देकर संसारसे विरक्त हो बैठनेसे रुका हूं। यह आपके ही उच्च सदाचार और पवित्रताका प्रभाव है कि जिसने मुझे अध्यात्मकी ओर झुका दिया। सुध सँभालनेके पीछे मेरा सबसे बड़ा और पहिला विचार यह रहा है कि मैं आपको अप्रसन्न होनेका अवसर न दूं। घरके कामोंमें सदा

आपकी आज्ञा प्रधान थी। सार्वजनिक जीवनके अतिरिक्त सर्वथा आपकी आज्ञाको मैंने शास्त्र-वाक्य (कानून) माना है। इस दशामें यह बात स्वाभाविक थी कि मैं औरोंकी अपेक्षा आपकी बाबत अधिक चिन्तित होता, और सब तरह मैं निश्चिन्त था। बन्धनमें पड़नेसे दो दिन पूर्व मैंने पिताजीको निम्न पत्र लिखा था।

प्यारे पिताजी !

मैंने श्रीमानोंका प्रेषित कलका तार जो रावलपिण्डीके पतेपर भेजा गया था पढ़ा। मेरे बांधे जानेकी किम्वदन्तियां गरम हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि वह कहां तक सच हैं। मैं प्रतिज्ञापूर्वक एक निवेदन करना चाहता हूं वह यह कि—चाहे मुझपर कोई मुसीबत पड़े 'आपने न घबराना'। जो आगसे खेलता है उसके मुंह झुलसनेका सदा ही डर रहता है, सामयिक शासकोंकी आलोचना करना मानो आगसे खेलना है। यदि कोई बात मुझे दुखी करती है तो वह केवल आपका विचार है जो चिन्तित करता है अतः मैं आपसे यह निश्चय करना चाहता हूं कि मेरा

बद्ध होना आपपर असह्य प्रभाव न पैदा करेगा। जब लाला हंसराज, गुरुदासराम और अमोलकराम जेलमें हैं तो मैं किस गणनामें हूं। जो भी हो, समय कायरता प्रकाशनका नहीं है बल्कि जो कुछ हो उसे क्षुद्र हृदयता त्याग वीरोंकी भांति सहन करना चाहिये.........................मेरी आप परवाह न करें।

आपका चरणसेवी,

लाजपत

उक्त पत्रमें उपान्तका जो भाग छोड़ दिया गया है उसमें घरू बातें थीं; अर्थात् अपने बच्चोंके नाम अपनी प्रदत्त सम्पत्तिका राजके खातोंमें चढ़वाने आदिके विषय थे।

मैंने यह सुनकर कि मेरे साथ कूकोंके अगुवा भाई रामसिंहका सा बर्ताव होगा, रगूलेशन सं० ३ सन् १८१८ पढ़ा तो और भी अधिक स्थिर-मन हो गया क्योंकि मैंने कोई भी ऐसा काम नहीं किया था कि जिसके कारण मुझे निर्वासित किया जा सकता हो। मुझे विश्वास न था कि अनुभवी लफटेंट-गवर्नर महो० मुझे निर्वासित करके सरकारकी दौर्बल्यका ढिंढोरा पीटेगा तथापि भावी आपत्तिके लिये मैंने उचित

जाना कि अपनेको तय्यार कर लिया जाय। कोई और भाव मेरे मनमें नहीं उठा और अपने रावलपिण्डीके मित्रों व देश सेवा सम्बन्धमें जो काम मैंने आवश्यक समझा करने बैठ गया। अन्य प्रान्तके नेताओंको पत्र लिखे व वर्त्तमान पञ्जाबकी स्थितिकी सूचना दी। सर विलियम वेडरबर्नको कांगरेसके प्रधानके नाते एक पत्र लिखा और इसके साथ चुनाब नहरके उपनिवेशके प्रबन्ध व शासन-प्रणाली सम्बन्धी कागज नत्थी कर दिये। विलायतकी डाक जानेके दिनसे दो दिन पहिले ही मैंने इङ्गलैण्डके एक मित्रको चिट्ठी लिखी। इसमें लिखा था कि मेरे, डांकसे दो दिन पूर्व ही, पत्र लिखनेका यह कारण है कि मुझे भरोसा नहीं कि डाकके दिन तक पत्र लिखनेको मैं स्वतन्त्र रहूंगा। जो किम्वदन्तियां मैंने सुनी थीं उनकी बाबत उसे सूचना दी थी। मेरी भावना नितान्त मिथ्या भी न निकली। भोजनसे पूर्व यह पत्र पूरा कर लिया, भोजन करके दो पत्र और लिखे। अतः पर चीफकोर्ट जानेके लिये कपड़े पहिने। कोर्टमें इस दिन मेरा कुछ काम न था परन्तु दो दिन पहिले मुझे मेरा एक मुवक्किल ३५०)

रुपया एक सीनियर (अनुभवी पुराना) बारिष्टर नियत करने और एक स्फुट अभियोगमें निगरानी उपस्थित करनेको दे गया था । मैं ने यह रुपया जेबमें डाला व गाड़ी मँगवाई कि जाकर यह अपने मुअ-क्किलका काम कर आऊं । लिखी हुई चिट्ठियां और समाचारपत्रके लिये चिट्ठी मेरे हाथमें थी । इतनेमें मेरे मुंशीने आकर मुझे सूचना दी कि दो भद्र मुझसे मिलना चाहते हैं ।

बन्धन व निर्वासन।

यह समाचार पाकर कि मुझसे दो भद्र मिलना चाहते हैं मैं उनके अगवानीको गया, यह दोनों लाहौर व अनारकलीके पुलिस इन्सपेक्टर थे। मु० रहमतुल्ला इन्सपेक्टरने कहा कि—"कमिश्नर व डिप्टीकमिश्नर मुझसे मिलना चाहते हैं लेकिन हमें यह नहीं मालूम कि क्यों मिलना चाहते हैं।" यह समझकर कि मुझे भी और लोगोंकी तरह अशान्ति निवारणमें सहायता करनेको इन्होंने बुलाया होगा; मैंने कहा कि मुझे कचहरीमें थोड़ासा काम है अतः मैं वहांसे लौटकर कमिश्नर साहबसे मिलूंगा। मुंशी रहमतुल्लाने कहा कि कमिश्नरसाहब दफ़्तर जिलामें बैठे हैं और केवल कुछ क्षणके लिये आपसे मिलना चाहते हैं इसके पीछे आप कचहरी जा सकते हैं।

मुझे सन्देह होगया कि कोई न कोई बात अवश्य है। मैंने हंसकर कहा कि, बहुत अच्छा आइये मेरी गाड़ी तय्यार है, हम इकट्ठे चलते हैं। जब मैं और इन्सपेक्टर गाड़ीमें बैठ गये तब मैंने वह चिट्ठियां जो मेरे हाथमें थीं अपने मुंशीको देदीं और उससे कोर्टमें

मिलनेको कह दिया। गाड़ी द्वार परसे हँकी ही थी कि मिस्टर रएडेल डिस्ट्रिक्ट सुपरिएटेएडेएट पुलिस मेरी कोठीकी ओर आते दीखे। एक दूसरा फिरङ्गी अफसर भी इधरको आरहा था; दोनों कूदकर गाड़ीके पायदानोंपर चढ़ आये और पुलिसके आनेका कारण खुल गया। मैंने मिस्टर रएडेलको गाड़ीके भीतर आ जानेको कहा और वह भीतर आकर बैठ गये। पुलिस जिलाके दफ्तरतक मेरी कोठीसे दो मिनटकी राह है, यहां पहुंचनेपर कमिश्नरने मुझे सूचना दी कि हिजऐक्सीलैंसी गवर्नर-जनरल-इन कौंसलके निकाले वारएटके अनुसार मैं बांधा गया हूं और मेरे निर्वासनकी आज्ञा दी गई है, किन्तु मेरे साथ अच्छा वर्त्ताव होगा। मैंने उत्तर दिया कि मैं आपके अधिकारमें हूं। मुझे स्मरण है कि इस समय कोठरीमें मेरे सिवा डि० कमि०, कमिश्नर, सुप० पुलिस थे और एक मेरा अपरिचित योरोपियन।

कमिश्नरने पूछा कि निर्वासनके पूर्व तुम किसीसे मिलना चाहते हो? मैंने तुरन्त उत्तर दिया, नहीं।

कमिश्नर—क्या तुम अपने लोगोंमेंसे किसीको चिट्ठी लिखना चाहते हो और क्या घरसे कपड़ा व बिस्तर आदि लेनेकी इच्छा रखते हैं।

मैंने उत्तर दिया—मैं बिस्तर मंगाना चाहता हूं और एक दो चिट्ठियां लिखना चाहता हूं।

कागज, कलम, दवात मुझे दी गई लेकिन एक अफसरसे सलाह करके मुझसे कहा गया कि ६ बजे सायङ्कालसे पहिले पत्र न पहुंचाये जायँगे और बिस्तरा पीछेसे पहुंच रहेगा। मैंने यह निश्चय किया कि इस अवसरपर मुझे कौन ढङ्ग ग्रहण करना चाहिये। वह निश्चय यह था कि जो कुछ होरहा है उससे निश्चिन्तता प्रकट हो। कमिश्नरकी यह बात मैंने स्वीकार करली। और चिट्ठी लिखीं। एक अपने पुत्रको और दूसरी अपने मित्र लाला द्वारकादासको अंगरेजीमें। दूसरी चिट्ठीके साथ ३५०) के नोट रख दिये और लिख दिया कि वह इस रुपयेको मेरे मुवक्किलको लौटा दें या वह चाहें तो उसके अभियोगमें सहाय्य करें और यह भी लिखा कि जो मेरे मुवक्किल स्वीकार करें तो वह मेरे कुछ मुकद्दमे हैं उनमें खड़े हों नहीं तो उन्हें मेहनताना लौटा दें। इसी चिट्ठीमें अपने निर्वासित किये जानेके अभिप्रायसे गिरफ़्तार होनेका हाल लिखकर यह लिख दिया था कि यह बात मालूम नहीं हुई कि मुझे कहां जाना होगा। क्योंकि कमिश्नरने

भी मुझसे यही कहा कि इस बातकी सूचना तुमको देनेकी तनिक भी आज्ञा नहीं है। चिट्ठीकी परिसमाप्तिपर लिखा था कि वह मेरी गिरफ़्तारीके कारण चिन्तामें न पड़ें। क्योंकि मैं परमात्माके हाथमें हूं और परमात्मा जो करते हैं भली ही करते हैं। यह चिट्ठी बन्द करनेके पीछे मैंने कमिश्नरसे पूछा कि क्या मैं अपने पास रुपया रख सकता हूं। उत्तर मिला—निस्सन्देह। अतः मैंने चिट्ठीमेंसे ३५०) के नोट निकाल लिये और चिट्ठीके अन्तमें मैंने इस सम्बन्धमें एक टिप्पणी लिखदी। अपने बेटेको मैंने गिरफ्तारीकी सूचना देकर यह इच्छाकी थी कि मेरी अनुपस्थितिमें वह अपने दादाकी सेवा व सन्तोष करें और सब भांति सुख पहुंचानेकी चेष्टा करे और यह भी लिखा कि कुछ जोड़े कपड़े बिस्तर सहित पुलिसके दफ़्तरमें भेजदे।

चिट्ठयां लिख चुकनेपर मेरी तलाशी हुई कि मेरे पास कोई अग्नि-अस्त्र तो नहीं है। इसके पीछे मुझे डिप्टी कमिश्नरके साथ मोटरकार (हवागाड़ी) पर जानेको कहा गया। मोटरकार बाहर खड़ी थी, 'सिविल मिली-

टेरी'के शब्दोंमें मोटर हाकनेका चक्कर डि०क०के हाथमें था; इसके पास ही डि० सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस बैठे थे, पीछेकी बैठकपर मैं और एक योरोपियन सबइन्स-पेक्टर पुलिस थे। मोटर सीधी मियांमीरको चली; नहरका पुल उतरकर मैंने देखा कि देशी व गोरा सिपाही बहुत संख्यामें नगरकी ओर जारहे हैं। इनके साथ कुछ तोपें भी थीं। यह देखकर मेरा जी अट्टहास करनेको चाहता था परन्तु मैंने हँसी रोकली।

कुछ देर पीछे मोटर एक संरक्षक योरोपियन चौकीके सामने ठहरी। मैं उतरा डि०क० कमान अफसरसे मिले और सम्भवतः मेरा भी कथन किया होगा। चौकीपर पहुंचनेपर स्थानिक संरक्षक (क्वारटर गार्ड) ने एक कोठरी खोलकर मुझे अन्दर भेजा और बाहरसे द्वार बन्द करके एक गोरा पहरेपर नियत किया। डि० क०ने मुझसे पूछा कि तुम्हें कुछ चाहिये ? मैंने ना करदी। डि०क० व पुलिस कप्तान चले गये।

योरोपियन सिपाहियोंको अपराध करनेपर इन कोठरियोंमें बन्द किया जाता है। इस सम्बन्धके नियम भीतपर लटक रहे थे, मैंने उन्हें पढ़े। सोनेके लिये एक लकड़ीका तख्त कमरेमें पड़ा था। मैं, कोट

उतार, गरद्दा भाड़ उसीपर लेट गया, क्योंकि छातीमें मीठा मीठा दर्द मालूम होता था। लाहौरमें मईके दिन प्रायः बहुत ही उष्ण होते हैं किन्तु १९०७ की साल वसन्तकी आरम्भ-कालीन वर्षा देरसे हुई थी। मेरे छातीमें पीड़ा थी इससे मैंने बचावके लिये गरम कपड़े पहन रखे थे। इस कोठरीमें भरपूर गर्मी थी, पर यह नहीं मालूम कि कितने कक्षा। अतः मैंने वास्कट भी उतार डाली।

पकड़े जानेके एक घण्टे ही पीछे मुझे अपने भविष्यपर दृष्टि डालनेका अवसर मिला, पहिले भूत-कालपर दृष्टि डाली और परमात्माको धन्यवाद दिया कि पकड़े जानेके समय मुझे अपने सम्बन्धियोंका कोलाहल नहीं सुनना पड़ा, यदि पिता, पुत्र, कलत्र उपस्थित होते तो उनके दुःख पूर्ण कोलाहलसे अविचलित मन रहना कठिन होता। दूसरी धन्यवादकी बात यह थी कि माताजीका देहान्त हो चुका था। पिताकी भी चिन्ता थी किन्तु इतना भरोसा था कि वह छातीके दृढ़ हैं और इस आपत्तिके पड़नेपर हिम्मत न हारेंगे। स्त्री व पुत्रोंकी बाबत मुझे इतनी चिन्ता न थी, क्योंकि वह पिताजीके संरक्षणमें थे। इस तरह

सब बातोंका समाधान करके निश्चिन्त हो स्वतन्त्रतासे अपनी दशा सोचने लगा। और किसी प्रकारकी नैतिक या मानसिक निर्बलताका कहीं पता न था; दिल टूटनेका कोई कारण न देखा। बाल्यावस्थासे ही मैं ईश्वरकी अपार महिमा व चातुर्य्यका पूर्ण विश्वासी था, यही विश्वास इस समय भी मुझे बल दे रहा था। मैंने देखा तो वर्त्तमान दशागत समस्त कष्टों व आपत्तियोंकी सहन-शक्ति अपनेमें पाई। अपनी हिम्मत और धैर्य्यकी परीक्षा करनेके पीछे सदासे अधिक दृढ़ मन और अधिकतर स्थिर-चित्त हो गया। जब अपने आपेकी परीक्षा कर चुका तो ईश्वरसे प्रार्थी हुआ कि वह विपत्तियोंके सहन करनेका बल मुझमें अधिक दें, और ज्ञात या अज्ञात कोई ऐसा काम मुझसे न हो कि जिससे मेरी मातृभूमिकी उन्नतिके पवित्र अभीष्टमें कोई हानि पहुंचे व मेरी सोसाइटी (भारतीय समाज) की किसी भांति लज्जा व बदनामीका कारण हो।

अपनी व्यक्तिक देख भाल जांच पड़तालके पीछे मुझे गवर्नमेण्टके कृत्योंपर हँसी आई क्योंकि मैं अपने देश-बान्धवको अच्छी तरह जानता था। मैं अचम्भा करता था कि केवल चारोंके बहकानेपर गवर्नमेण्टने निरा-

श्यताके साथ कैसा भूल भरे मार्गका अवलम्बन किया है। ईश्वरीय कर घनघोर-घटाके मध्य एक प्रकाशकी ओर संकेत कर रहा था कि जिन कारणोंने मेरे देशको इतने दिनों तक दास बना रखा था अब निर्बल और जर्जर हो चले हैं।

अनुमान एक घण्टे पीछे मैंने खिड़की खोली और लौह-जँगलेमें होकर बाहर दृष्टि डाली तो पहरे पर एक गोरेको अपनी ओर बड़े ध्यानसे देखते पाया। प्रहरी बदला, इस दूसरे गोरे प्रहरीसे मैंने समय पूछा। उसने प्रसन्न बदन उत्तर दिया और कुछ और भी कहा जो मेरे कानमें ठीक ठीक न पड़ा। चार बजे एक पुलिस वालेने मुझसे खानपानकी बाबत पूछा, मैंने केवल जल मांगा। वह एक हिन्दू कहार द्वारा जल लाया, मैंने मुख धोया और कुछ पिया भी। ६ बजे द्वार खुला और मिस्टर रेण्डल डि० सु० पुलिसने मुझे नाम लेकर पुकारा और बाहर निकाला। इसके साथ एक योरोपियन पुलिस कर्मचारी और एक मुसलमान थानेदार और थे। मैं सुपरिण्टेण्डेण्टके साथ हो लिया। सड़कपर फिटन खड़ी थी उसीपर हम लोग चढ़कर, सेनाके उतारने चढ़ानेवाले स्थानपर मियां मीर पहुंचे।

यहां एक ट्रेन (रेल गाड़ी) हमारे लिये तय्यार थी एक योरोपियनने मुझे एक गाड़ीमें आरोहन करनेको कहा। मैंने गाड़ीमें प्रवेश किया। गाड़ीपर बैठ जानेपर मिस्टर रेवलने कहा कि 'तुम्हारी चिट्ठियां पहुंचा दी गईं। इसने मुझे गुडईवनिङ्गकी—ईश्वर जाने इस अभिवादनसे उसका आन्तरिक लक्ष्य क्या था किन्तु मैंने शुद्ध अन्तःकरणसे उसे अभिवादनका प्रत्युत्तर दिया और अपनी जगहपर बैठ गया। गाड़ी छूट गई। यहां अब मैं विचार करता हूं तो इतना विशुद्ध हृदयसे यह कह सकता हूं कि मुझे यह विश्वास नहीं होता था कि मैं सदाके लिये अन्तिमबार लाहौर छोड़ रहा हूं, किन्तु यही ज्ञात होता था कि मानों मैं साधारण यात्रा कर रहा हूं, हां यह पता नहीं कि कितने दिनमें लौटूंगा।

ट्रेन चलनेपर इन्स०-जनरल रेल-पुलिसने मेरी तलाशी ली और नोट मुझसे ले लिये व कहा कि यात्रा पूरी होनेपर लौटा दिये जायेंगे। थोड़ी देरमें कुछ सलाह सम्मति करके मेरी सोनेकी घड़ी व सांकल भी ले ली। उच्चतम पुलिस अधिकारीने कहा कि उसे इस कृत्य पर शोक है परन्तु अपने बचावके लिये उसे

बाध्य होना पड़ता है। मैंने उत्तर दिया कि मैंने तो कोई ऐसा काम नहीं किया था कि जिससे इस बर्ताबेका पात्र होता, मैं समझता हूं कि सारी खराबी अनुभव-विहीन अहमित अंगरेज नवयुवकोंके कृत्यका फल है कि जिनको असीम और वृहदधिकार प्रतिबन्ध बिना प्राप्त हैं। पुलिस अफसरने कहा सम्भव है कि यह कथन केचित कर्मचारियोंपर घटता हो, पर सब अंग्रेज विशेष निरीक्षणमें काम करते हैं; और यह सही नहीं कि उनको कोई रोकनेवाला ही नहीं। थोड़ी देर इस प्रकार वार्तालाप होनेपर उसने कहा गवर्नमेण्ट आपसे कुव्यवहार नहीं करना चाहती, जो प्रबन्ध रहने सहनेका किया गया है उससे आप जान सकते हैं। मैंने उसको धन्यवाद दिया और कहा कि यदि गवर्नमेण्ट अपने बचावके लिये मुझे निर्वासित करती है तो इसका कोई महत फल न निकलेगा। इसपर जो उत्तर उस अफसरने दिया उससे मैंने यह परिणाम निकाला कि मेरा निर्वासन-काल सदाके लिये नहीं किन्तु अचिर है। बहुत दिन निर्वासित न रहना होगा।"

पाठकोंको याद होगा कि लालाजीके पास बर्मा जाते मार्गमें एक चादर व गेंदुआ विदेशी कपड़ेका देख

कर गोरे व अधगोरे परचोंने आपको कलङ्क लगाया था, कि लालाजी दुनियाके दिखानेको ही स्वदेशी स्वदेशी करते हैं और स्वयम् विदेशी चीजें रखते हैं। यह बात इसी अवसरकी है। पुनः लालाजीके ही श्रीमुखसेः—
"बातचीत समाप्त होनेपर पुलिस अफसरने कहा कि साथकी गारदमें दो हिन्दू पुलिस मैन हैं, वह खाने पीनेमें मेरी सेवा करेंगे और इन्सपेक्टरको भी समझा दिया गया है कि वह सब बातका ध्यान रखे। इसी अफसरने इन्सपेक्टरसे एक सिरहाना व एक चादर देनेको कहा, इन्स० ने यह चीजें मुझे अपने विस्तरसे निकाल कर दीं।

इसीका तूफान एङ्गलोइण्डियनने उठाकर मेरे देशवासियोंको मुझसे रुष्ट करना चाहा था। उन्हें ख्याल पता न था कि वह वस्त्र मेरे न थे किन्तु उनकी गवर्नमेण्टने मुझे दिये थे। मेरी यात्रा छिपाई जाती थी, गुप्त सब काम होते थे, मैंने छातीकी पीड़ाके कारण एक टुकड़ा फलालेनका मांगा पर प्रतिज्ञा करने पर भी पुलिस अफसर न दे सका। मेरे ऊपर एक मुसलमान सबइन्सपेक्टर, छ मुसलमान सिपाही, एक हिन्दू सिपाही और एक हिन्दू सारजण्ट नियत थे, परन्तु प्रति स्टेशनपर इनकी भी कठिन जांच होती रहती थी।

जयिहयालेमें उक्त पुलिस अफसर मुझसे अलग हुआ मैं रात्रि सानन्द व्यतीत करनेका उद्योग करने लगा। यद्यपि मुझे पिछले अधिक समयसे अनिद्रा रोग था तथापि मैं इस रात्रि पूर्ण शान्तिसे खूब सोया, इसीसे मेरे मनकी अनुद्विग्नताका अनुमान हो सकता है। दूसरे दिन प्रातःकाल उठकर देखा तो पञ्जाब पीछे छूट गया था और अवध-रुहेलखण्ड रेलवे लाइनपर यात्रा हो रही थी। पञ्जाब प्रान्तमें यावत यात्रा होती रही रेलकी खिड़कियां बन्द रहीं, इस लाइनमें स्टेशनों परके सिवा मार्गमें खिड़कियां खोलदी जाती थीं। स्टेशन आने पर खिड़कियां यद्यपि बन्द हो जाती थीं किन्तु मैं स्टेशनोंके नाम पढ़ सकता था अतः जानता था कि किस लाइनपर यात्रा होरही है। दूसरे दिन सूर्यास्तके कुछ पहिले ट्रेन मोहनलालगञ्जके स्टेशनपर ठहर गई। यह लखनऊके आगे पहिला स्टेशन है। गर्मी बहुत थी, एक पङ्खाकुली गाड़ीमें पङ्खा झलता था। यहां गाड़ी कई घण्टे रुकी। जान पड़ता था कि अफसर इञ्चार्ज पीछेसे इस आज्ञाकी राह देख रहा था कि हमें कहां जाना था। स्टेशनकी खिड़कियाँ बन्द थीं दूसरी ओर कठिन पहरा था। आधी रातको गाड़ी फिर

चली और दो पहर पहिले दूसरे दिन मुगलसराय जाकर फिर अधिक समय तक ठहरी। वहां सबइन्सपेक्टर एक पायजामा व कमीज देशी खरीद लाया और मैंने स्नान करके कपड़े बदले। दूसरे दिन प्रातःकाल हम ईष्ट बङ्गालके रेलवे स्टेशन डायमण्डहारबर पहुंचे। इन्सपेक्टरने पहिले आज्ञा दे दी थी कि पुलिस वाले तय्यार रहें। पुलिसका बड़ा कर्म्मचारी मेरे पास आया और पूछने लगा कि 'क्या तुम्हें मालूम है कि तुम कहां हो अथवा क्या तुम कुछ अनुमान कर सकते हो कि तुम्हें कहां जाना होगा।' मैंने कहा मैं इस स्टेशनको जानता हूं और सम्भवतः मुझे रंगून या मांडले ले जा रहे हैं।

इससे उसे अवश्य आश्चर्य्य हुआ होगा क्योंकि यह बात मुझसे बड़े यत्नसे गुप्त रखी गई थी। प्रधान पुलिस अधिकारीने मेरे पूछने पर कहा था कि यह बात बतलानेकी आज्ञा नहीं है और उप-अधिकारीने शपथ खाई थी कि उसे पता नहीं कहां जाना होगा।

मार्गमें भोजनका प्रबन्ध बहुत दूषित था, इसका प्रबन्ध इन्सपेक्टरके हाथमें सौंपा था। गाड़ीसे उतर कर थोड़ी दूर नदीके किनारे किनारे चल कर हम

बजरेपर चढ़े व सरकारी धूमपोत अर्थात् गाइड नामक जहाज पर पहुंचे। मैंने पिताजीको तार देनेकी इच्छा-की किन्तु आज्ञा न मिली। मुझसे कहा गया कि यदि मैं चिट्ठी लिखूं तो वह पुलिसके इन्सपेक्टर जनरल द्वारा पहुंचा दी जायँगी। मैंने दो पत्र लिखे एक पिताजीको दूसरा पुत्रको पहिलेका पता नहीं दूसरा पत्र मिल गया था। पत्र यह था—

डायमण्डहारबर, ता० १२ मई १९०७।

मेरे प्यारे पुत्र! जैसा वर्तमान दशामें सम्भव है मैं अच्छी तरह हूं। मैं तुम्हें इस बातका विश्वास दिलाता हूं कि मैंने दृढ़ चित्त रहने और उपस्थित विपत्तिको भान न करनेका पूरा विचार कर लिया है। जो भी आपत्ति सिरपर पड़े सब झेलनेको उद्यत हूं। अपने दादा व माताकी सावधानीसे सुध लेना, उनकी आज्ञा पालन करना व शान्ति देना। विशेषतः अपनी विधवा बहिन और उसके बच्चोंका पूरा ध्यान रखना। अपने चाचाओंसे उत्तम बर्ताव रखना चाहिये। इस दुःखको वीरतासे सहन करो। प्यारे कृष्णके लिये भी यही विषय लिखतव्य है। प्यारे कृष्ण व अमृतकी

शिक्षामें त्रुटि न होने पावे। मेरे मित्रोंको न भूलना और उनसे कह देना कि वर्तमान विपत्तिसे मैं हिम्मत नहीं हारा।

तुम्हारा सदैव प्यार करने वाला—

लाजपतराय

जहाजका वृत्तान्त।

नद किनारेसे हि० इन्स० पञ्जाब पुलिसका साथ छूटा, चलते समय उसने कहा—'अब आप भारतसे जाते हैं, देखिये कब लौटें? स्टीमरपर बैठ चुकनेपर उसने बङ्गाली पुलिस अफसरको सलाम किया और रेलकी स्टेशनकी ओर लौट चला। बङ्गाली पुलिस अफसर असभ्यसे ढङ्गका कठोर प्रकृति जान पड़ता था, शील और शिष्टाचारसे अनभिज्ञ था। स्टीमरपर कई चौकियोंके होते भी उसने मुझे कुरसी बैठनेको न दी। बैठनेको कुरसी ही नहीं, उसने योरोपियनोंका तो अच्छी तरह आदर सत्कार किया—चाय, तम्बाकू भी दी मेरे सवार हो चुकनेपर जहाजने पयान किया।

मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे लिये एक बड़ा सा पानीका घड़ा, एक टोकरी भुने चनेकी चबनेको भी

प्रायः मजूरोंका खाना है, एक टोकरीमें आटा दाल, एक टीनमें घी और थोड़ेसे केले जहाजमें रखे गये। पानीके बरतन रखनेमें कुछ कठिनता होरही थी, मैंने कह दिया कि मैं जाति पांतिके कठोर बन्धनोंका दास नहीं हूं। इसके पीछे कप्तानसे जगहके लिये जिज्ञासा की। कप्तानने सामान रखनेकी एक गुफाकी ओर संकेत करके कहा कि कैदी और उसके संरक्षकोंको मैं इसके अतिरिक्त और कोई जगह नहीं दे सकता। इन्सपेक्टर कप्तानको अलग ले गया और अपने व योरोपियन सब इन्सपेक्टरके लिये दो कोठरी देनेपर कप्तानको प्रस्तुत कर लिया और सिपाहियोंने असबाब कोठरियोंमें पहुंचाना आरम्भ कर दिया, किन्तु मुझे उसी सीली और भभकवाली हवा बन्द दरीमें प्रविष्ट होनेको कहा गया। मैंने इस बातपर आपत्ति की क्योंकि ऐसे दुर्गन्धयुत स्थानमें रहनेका मुझे अभ्यास न था और न्यायके अनुसार गवर्नमेंट इस बातकी दायी थी कि मेरी मर्य्यादाके अनुसार मेरे सुखसे रहनेका प्रबन्ध करे। इन्सपेक्टरने मुझसे कहा आप थोड़ी देर यहां ठहरें मैं फिर कप्तानसे मिलता हूं और उत्तम स्थानका प्रबन्ध हो जायगा। एक घंटे

उपरान्त, फिरङ्गी इन्सपेक्टरने आकर कहा कि जो कोठरी फिरङ्गी इन्स० को दी गई है वह आपको मिलेगी। कप्तान अनुपचार है और केबिन (जहाजी कोठरी) नहीं दे सकता, अतः यह हेर फेर कर दिया। किन्तु यह नई कोठरी भी कामके योग्य न थी और मुझे समुद्रयात्रा जहाजकी छतपर ही रहकर काटनी पड़ी।

मुसलमान सिपाही और मुसलमान इन्स० रुग्न हो गये। मेरा भी शरीर अस्वस्थ हो गया, हिन्दू सिपाही व सारजण्ट पूर्ण स्वस्थ थे, और समुद्रयात्राका पूरा आनन्द उठा रहे थे। मुसलमान सिपाहियोंकी दशा भोजनकी कमीसे करुणोत्पादक हो रही थी। न इन्हें नाविकोंका खाद्य रुचिकर था न अनुकूल, न यह स्वयम् भोजन बनानेको समर्थ थे। हिन्दू सिपाही इन्हें भोजन पकाकर देना पसन्द नहीं करते थे इन्हें इन कारणोंसे बड़ा कष्ट था, मैंने व फिरङ्गी इन्स० ने अपने खानेमेंसे सहायता की लेकिन यह सहायता कठिनतासे पर्याप्त हो सकती थी। इनकी दशा देखकर मुझे करुणा हुई और मनको बड़ा दुःख हुआ कि छः पुष्ट पञ्जाबी मुसलमान नवयुवक

जहाजपर सचमच भूख निकालते थे। यह सरकारकी ओरसे इस असाधारण कामपर नियत हुये थे, सरकारका कर्तव्य था कि वह इनके भोजन आदिका उपयुक्त प्रबन्ध करती। तुच्छ छोटे वेतनके भारती नौकरोंकी दशाका अधिक वेतनवाले लाड़के पाले फिरङ्गी नौकरोंकी दशाके साथ समता करना बड़ा ही दुःखप्रद और शोकजनक था। एकको छोड़कर शेष सबकी नौकरी सात सात रुपयेसे नौ रुपये मासिक तक थी। इस समुद्रयात्रामें इन्हें अपना भोजन अपने वेतनमें सेही लाना पड़ता था; किन्तु सैकड़ों मासिकके फिरङ्गी सरकारकी गांठसे भोजन पाते थे। जहाजके योरोपियन (फिरङ्गी) अफसरोंका वर्त्ताव अत्यन्त रूखा फीका था।

जहाजके कप्तानने एक दो बार मुझसे राजनैतिक विषयोंपर वार्तालाप करनी चाही, किन्तु जब मैंने देखा कि वह 'वन्देमातरम्' हिन्दू प्रजा और श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ बेनरजीको मनमाना दुर्वाद सुनाता है तो मैंने बातचीत बन्द कर दी और कप्तानको जतला दिया कि मैं इस वार्तालापको जारी नहीं रखना चाहता। कप्तान जल्दी दुखिया जानेवाला मनुष्य था।

वह अपनी आज्ञा पालन करानेके लिये प्रायः नावि-कोंको गाली देता, मारता। एक पाचकको मैंने स्वयम् मारते देखा था। अधिगत नौकरोंमेंसे एक बहुत सरल स्वभाव, हँसमुख और प्रसन्नात्मा था और सदा मुझसे प्रसन्न वदन मिलता।

१२ मई प्रथम पहरको हायमस हारबरके चले १५ मईको तीसरे पहर रंगून पहुंचे। जहाजपर भी मेरे ऊपर पहरा लगाया गया था। मुझे याद है कि एक बार इस बातपर मैं हँस दिया। फिरङ्गी अफसरने मेरी हँसीका कारण पूछा। मैंने कहा—मुझे डूब मरनेका कभी विचार भी न था क्योंकि मेरे अनुमानमें मेरा जीवन मेरे व मेरे देशके लिये सरकार व उसके नौक-रोंके अनुमानसे कहीं अधिक मूल्यवान है। इन्सपे-क्टर मुझसे अच्छा वर्त्ताव करता था लेकिन मेरी चौकसीकी चिन्ता निरन्तर उसपर सवार रहती।

रंगून बन्दरपर पहुंचकर मुझे एक कोठरीमें बन्द होकर कुछ समय तक प्रतीक्षा करनेको कहा गया इसका यह मतलब होगा कि कोई आता जाता मुझे देखकर चीन्ह न ले। थोड़ी देरमें रंगून पुलिस कमि-श्नर पधारे और मुझे उनके पास डेकपर लोगोंने पहुं-

आया। कमि० अभिमानीसा दीखता था, अपने अधिकार और हकके आगे उन्हें अपने आधीन प्रजाका कुछ भी ध्यान न था। उनसे इतना भी न बना कि मुझे बैठनेको कुरसी देते। तुरन्त मुझे नीचले कमरेमें आनेको कहा गया जहां कि वायु बहुत बुरी थी और एक प्रकारकी उमस थी। थोड़ी देरमें स्थानिक पुलिस अफसर भी मेरे पास आगया।

जिस समय गरुड़ (नाम जलयान जिसपर लोकमान्यजी आरोपित थे) ने लङ्गर डाला वर्षा धाराप्रवाह होरही थी। हमें एक उजाड़ घाटपर उतारा गया। कुछ पञ्जाबी पुलिसकी वर्दी पहने दीखते थे। एक पालकी गाड़ी मेरे लिये थलपर खड़ी थी। फिरङ्गी पुलिस इन्सपेक्टर लाहौर व एक स्थानिक पुलिस अफसर मेरे सामने बैठ गये और प्रबन्धके साथ कि मैं कहीं भाग न जाऊं, हम लोग पाबहुरोग स्टेशनपर पहुंचे जो रंगून प्रधान स्टेशनसे कुछ अन्तरपर है। ट्रेन आने तक हमें गाड़ीमें ही ठहरना पड़ा।

ट्रेन आनेके समय मुझे बड़ी सावधानी और रक्षणके साथ काठके पुल परसे उतार कर उधर लेगये। अभी स्त्री, पुरुष, बालक, युवा, देवालय, घर आदि, मैं

एरावदी नदीके दोनों तटोंपर जहाजसे ही प्रातःकालसे देख रहा था अब उनके मुख साफ दीखने लगे। इन ब्रह्मियोंमें अनेक भारती भी मिले दीखते थे। ब्रह्म-भूमि गत एरावदी नदीके मोहानेमें पोत प्रवेश करते ही मेरा मन ब्रह्मवासियोंकी ओर आकर्षित होने लगा। इसका कारण समझमें नहीं आता था; क्या निर्वासनकालमें मुझे ब्रह्मियोंकी सहानुभूति और उत्तम बर्त्तावकी आवश्यकता थी इसलिये, या सिवा लङ्काके जहां कुछ वर्ष पहिले मैं इच्छा पूर्वक पर्य्यटन-को गया था, भारतसे बाहर यह पहिला एशियाई देश था जो मैंने देखा था और एशिया वासियोंकी बेबसी मेरी सहानुभूति खींच रही थी; या यह कि ब्रह्मवालोंके धर्म्मका निकास भारतसे होनेके कारण मुझे ब्रह्मवासियोंके साथ एक घनिष्ट सम्बन्ध भान हो रहा था, इसलिये मेरा मन इनकी शुभचिन्तकतासे भरा था। ब्रह्म-भूमि मुझे विदेश व अनजान नहीं जान पड़ती थी, बिना इस विचारके कि वह हिन्दू हैं मुसलमान हैं अथवा बंगाली, या मद्रासी मैं प्रत्येक भारतीका मुख प्रेम भरी दृष्टिसे देखता था। मेरी दृष्टिमें सब मेरे सगे भाई थे क्योंकि हम सब कुछ

सम्बन्धों और एक राजनैतिक स्वार्थोंसे बँधे हैं। पुलसे उतर कर जब मैं पहरेमें जा रहा था कि मुझे एक प्रतिष्ठित पञ्जाबीने पहिचान लिया। इसके मुख पर दुःख व चिन्ताकी घटा छागई, मैंने नेत्रोंके संकेतसे उसके अभिवादनका उत्तर दिया और गाड़ी निकल गई। पहिले दर्जेकी गाड़ी पर हम लोग बैठे, पीछे कुछ सिक्ख पुलिसकी वर्दीमें खड़े थे और मुझे प्रेम पूर्वक देख देख बातें करते थे। दो तीन बजेके भीतर मायहले स्टेशनपर पहुंचे, खिड़कियां पूर्ववत स्टेशनपर बन्द करदी गई। मार्गमें अनेकबार मैं पुलिसके उन मुसलमान सिपाहियोंके मुखों पर, जो मेरे साथ आये थे, अपने प्रति प्रतिष्ठा और दुःखके चिन्ह देखता था। मायहले पर्य्यन्त मेरे निरीक्षक गारदके हिन्दू मुसलमान सिपाहियोंने मेरे साथ अत्यन्त दया और प्रेमका वर्ताव किया जहाजमें भी यह मुझसे निस्संकोच वार्तालाप करते थे, एक मुसलमान स्वरूपवान और सुशील नवयुवक सिपाहीने तो अपने मनोभावोंका मुझपर जो प्रभाव उत्पन्न किया वह मैं कभी न न भूलूंगा। इसने मेरे दुर्भाग्यपर सच्चे आंसू बहा बहा अपने देशकी दीनता, हीनता और पराधीनताकी

बात हृदय विदारक शब्दोंमें कही। दूसरोंने भी ऐसे भाव प्रकट किये किन्तु वह उतने शब्दोंमें, और उसकेसे शब्दोंमें नहीं कह सके। इसने श्रद्धामें अपनी गांठसे केला लेकर मेरे समर्पण किया, मैंने उसकी प्रसन्नताके लिये एक केला ले लिया। उसने और लेनेके लिये आग्रह करते हुए दुख भरे शब्दोंमें कहा कि आपके दर्शनका यह अन्तिम अवसर है। मैंने उसे ढाढस दिया और कहा कि ईश्वरकी ओरसे कभी निरास मत हो, मेरे हृदय कन्दरसे प्रतिध्वनि होती है कि मैं फिर अपने देशमें जल्दी पहुंचूंगा इस कथनका उसपर बड़ा भारी प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा और उसने मारे आनन्दके मेरे पांव पकड़ लिये।

मेरे जीवनमें यह पहिला अवसर था कि हिन्दुस्तानी मनकी पवित्रता, उस मनकी पवित्रता, जिसपर पाश्चात्य सभ्यताका मुलम्मा नहीं चढ़ा था, स्वच्छन्द अपने प्राकृतिक रूपमें निश्छलभावसे मेरा मन चुराये लेती थी। एक मुझसे विभिन्न मतावलम्बी (मुसलमान) जिसे निर्धनताग्रस्त जिमीदारीने सात आठ रुपया मासिक पुलिसकी नौकरी करनेपर बाध्य किया था, अपनी आजीविका और भविष्यके कामोंकी आशाको

जलाञ्जलि देनेको केवल इसकारण प्रस्तुत था कि मेरी विपत्तिमें सहानुभूति प्रकट करें । उच्चतम पुलिस कर्म्मचारीने, जो इन मुसलमान सिपाहियोंको मेरे मतके विरोधी समझकर इस वास्ते साथ किया था कि इन्हें मेरे साथ सहानुभूति व सम्वेदना न होगी तो उनकी बड़ी भूल थी । मेरी ही भांति इनका भी मनोभाव किसी प्रकार दूषित न था लेकिन वह अपने मनोभाव छिपाना नहीं चाहते थे और उन्हें किसीतरह मेरी सेवामें आपत्ति न थी । मारहले पहुंचकर इनसे बिछुड़नेका मुझे बड़ा दुःख हुआ ।

मारहले पहुंचनेपर रेलवे स्टेशनका प्लेटफार्म बिलकुल खाली किया गया तथापि अनेक देशीमुख द्वारों, खिड़कियों और झरोखोंमें होकर मेरी ओर झांकते दिखाई दिये । स्टेशनसे बाहर होते ही मेरे मित्र श्रीयुत देवधर जोगाननीय मिस्टर गोखलेकी भारत-सेवक-सभाके सदस्य थे अचानक मेरे पैरोंपर आ गिरे । एक मित्रके प्रेमपूर्ण पदस्पर्शका यह प्रभाव हुआ कि बड़ी कठिनाईसे 'मैं अपनेको सँभाल सका । थोड़ी देरतक तो मैं इस घटनाका प्रभावान्वित रहा । मेरे बन्धन व निर्वासनने जो प्रभाव मुझपर न किया था वह एक मित्रके

करस्पर्शने किया। मैं डरता था कि कहीं सन्तोषकी वल्गा हाथसे न छूट जाय (ऐसा मन भर आया)। ज्योंही देवधरने मेरे पैर छुये कि पुलिसवाले यह समझकर झपटे कि मानो वीर महाराष्ट्रने मेरा बन्धन मुक्त करनेके लिये सिंहकी भांति अपने विरामस्थलसे निकलकर आक्रमण किया हो; इन्सपेक्टरने मेरा भुजदण्ड पकड़ लिया और सारजण्टने देवधरको परे कर दिया। मैंने अपने मित्रकृत प्रतिष्ठा और प्रेमालिङ्गनके प्रत्युत्तरमें केवल शीस झुका दिया। वह गाड़ीपर सवार दूसरे ही क्षणमें हाथ बांधे जारहा था मैंने भी हाथ जोड़कर प्रत्युत्तर दिया। मुझे दुख हुआ कि अब मिस्टर देवधरकी निश्चय ही पदे पदे निगरानी होगी और मेरा यह विचार निराधार न निकला।

माण्डले प्रवेश और पहिली दो रातें।

पुलिस सहचरोंके घोर निगरानीमें १६ मईको माण्डले प्रवेश हुआ। घुमा घुमावके निर्जन मार्गमें होकर मैं माण्डलेके गढ़में प्रविष्ट हुआ। यह गढ़ एकान्त ऊंची जगह पर ऊंचे परकोटोंसे परिवेष्टित और ऐसा ही है जैसा प्रायः अंग्रेजी उपन्यासोंमें मिलता है। यह प्रासाद् समुच्चय माण्डले नगरका एक भाग है। इसके ऊँचे परिकोटोंके घेरे हुए चारों-ओर गहरी जलपूर्ण खाई थीं। दक्षिण द्वारसे घुसकर राजभवनों और राष्ट्र-स्मशानके पास होकर हमलोग अंग्रेजी ढङ्गके एक सुन्दर बङ्गलेमें जा ठहरे। जेलका सुपरिण्टेण्डेण्ट बाहर निकला यह हमारी बाट जोह रहा था। लाहौर-पुलिस सुपरि०ने समर्पण वारण्ट और साढ़े तीनसौ रुपयेके नोट मेरी घड़ी व सांकल सौंपकर इससे रसीद् लेली। यह सब दफ्तरके कमरेकी बात है जो जेल सुपरि०का शयनागार था। वारण्टकी पीठपर मेरे हस्ताक्षर कराये गये। और यात्रामें जो चीजें मुझे पहुंची थी उनकी रसीद् लीगई।

जेल सुप०ने विषकी (मद्य विशेष) का एक एक पात्र अफसरोंकी सेवामें उपस्थित किया उन्होंने धन्य-

वादपूर्वक ग्रहण किया और चले गये । सुपरि० मुझे ऊपरले खनमें ले गया और बोला कि यहां वर्त्तमानके लिये अस्थिर रीतिसे दो कमरे रहनेको दिये गये हैं । कमरे खुले हवादर प्रकाशसम्पन्न सब भांति रहने योग्य थे । इनमें एक मेज, दो कुरसी, एक निवाड़का पलँग दो जेलके कम्बल, दो चादरे और आध आध फुट चौड़ी कमरेसे अधिक लम्बी तीन दरीके टुकड़े थे । सुप०के रहन सहनका ढङ्ग और स्वभाव देखकर मुझे अनुमान हुआ कि वह सरलस्वभाव भलामानस अंग्रेज है, रहन-सहन सादा व दिखावारहित था। इसने मुझसे खानेपीनेकी बाबत पूछा मैंने कहा कि पञ्जाबी रसोइये (सुआरों) की पकाई हुई चीजें मेरे मनके अनुकूल होंगी । जबतक इसका प्रबन्ध न हो मुझे अंग्रेजी भांतिका भोजन खानेमें कोई आपत्ति नहीं । इसने एक मदरासी नौकर (पाचक, रसोइया) बुलाकर मेरे लिये भोजन बनानेकी आज्ञा दी । सुपरि०ने बहुत सानुकूलतासे मेरे साथ वार्तालाप की । और विश्वास दिलाया कि मेरे आराममें कोई त्रुटि न की जायगी । मैंने कहा कि मेरी सर्वोपरि आवश्यकता यह है कि आप कुछ कमीजें ग्रीष्म (गरमी) के लिये

तय्यार करा देवें और गरमीमें पहरनेका एक जोड़ा (सूट) बनवादें। उसने दूसरे दिनका वादा किया। फिर मैंने छातीके दर्दका कष्ट बतलाया, उसने मेरी आंखें और जीभ देखीं व औषध देने कहा। इसके पीछे वह तो चला गया मैं आराम करने लेट गया। आठ ब्रह्मा-पुलिसके सिपाही, एक अंग्रेजी भाषा जानने वाला ब्रह्मी सबइन्स० व एक फिरङ्गी सारजण्ट मेरी रखवाली पर नियत हुए थे, रातको सीढ़ियोंपर द्विगुण पहरा नियत हुआ। सबइन्स० व फिरङ्गी रातमें मुझे कईकई बार देखने आते थे कि कहीं मैं भाग तो नहीं गया। कभी कभी रौंद भी आजाती थी। सुप० ने मुझसे वचन ले लिया कि मैं भागनेकी चेष्टा न करूंगा। पहिलीरातको पौ फटनेसे पहिले ही मैं स्नानग्रहमें (गुसलखाना जहां पुरीषोत्सर्ग उपरान्त हाथपद प्रच्छालन व स्नानादि करते हैं। प्रायः शङ्काओंकी निवृत्तिका स्थान भी इसीके समीप लगा हुआ होता है। इसे गुसलखाना या मुताहिरत भी फारसीमें कहते हैं) चला गया। मेरे पीछे सारजण्ट आया और मुझे कमरेमें न पाकर तुरन्त खोज करने लगा। इसकी चिन्ता मिटानेके

लिये मैंने शौच घरसे ही उसे आवाज दी। दूसरे दिन मैं बिस्तरसे भी न उठा था कि सुप० आया और उसने मुझे सूचना दी कि कमि० व डि० कमि० आये हैं। और मुझसे मिलना चाहते हैं। मैंने कहा कि मेरे वस्त्र ठीक नहीं हैं न बदलनेको कपड़े हैं। (कैसे शोककी बात है कि पूछकर भी सरकारने लाहौरमें इन्हें बिस्तर और कपड़े न मँगाने दिये, न उसी समय बाजारसे तय्यार सामान ही मँगाकर दिया)। इसने कहा, इस बातका आप विचार न करें और चला गया। थोड़ी देरमें डि० कमि० व कमि० कमरेमें आ-गये। कमि० ने अभिवादन (गुडमारनिंग) पूर्वक मुझसे कुशल पूछी व पूछा कि कुछ कष्ट तो नहीं है? वह बैठे नहीं खड़े ही खड़े बातें करते रहे और पांच मिनटके भीतर ही चले गये। सुप० ने मुझसे कहा कि आवश्यक चीजोंकी एक सूची बना दो। मैंने निम्न लिखित सूची बना दी और सब चीजोंको जल्दी ला देनेकी आज्ञा दी गई।

श्वेत टुइलके कमीज ६, तोलियें २, २ श्वेत चादर, सिरहाने अर्थात् गेंदुएकी खोल ६, रुमाल ६, २

जोड़ी मोजे, कङ्घी व ब्रुश, २ गद्दी, कागज, मसियानी (दवात) लेखनी और शोषकपत्र (बलाटिंग)।

सुप० ने मुझे महाशय न्यायमूर्ति मेकार्थी कृत एक अंग्रेजी पुस्तक भी पढ़नेको दी और ब्रह्मी भाषा सीखनेकी सम्मति दे कर अपनी अंग्रेजी ब्रह्मी पुस्तक मुझे सौंप दी और एक मदरासी छोकरा नौकर रख दिया। पहरेमें मुझे मैदानमें टहलनेकी भी आज्ञा दे दी लेकिन कपड़े न होनेके कारण मैं इस आज्ञासे लाभ न उठा सका। दो दिन बाद नया मकान मुझे दिया गया जो कि सुप० के मकानके पास गढ़-भवनोंके आरामके (अराम सं० में पाई बागको कहते हैं जो राज प्रासादोंमें होते हैं।) समीप पहिले मकानके उत्तरमें था। इन दो दिनोंमें सड़कसे निकलते कई देशवासियोंने मुझे अभिवादन किया मैंने संकेतसे अभिवादन करते हुए उत्तर दिया कि ठहरो मत चले जाओ।

ब्रह्माके गढ़का सूक्ष्म दृश्य।

लालाजीको इसी गढ़में रहना पड़ा था अतः इस पवित्र भूमिका भी थोड़ासा हाल लिखना उचित है। लालाजी ऊपर कह चुके हैं कि:—"दो दिनके पीछे मुझे नये मकानमें जाना पड़ा।" यह नया मकान भी गढ़में ही है। गढ़ बहुत ही लम्बा चौड़ा है। जिस घरमें लालाजी अब गये थे वह पब्लिकवर्क्सडिपार्ट-मेण्टका बँगला और गढ़के महलों (भवनों) की महरसे बाहरकी ओर राज-वाटिकाके उत्तरमें स्थित है। इस घर व राज-वाटिकाओंके बीचमें होकर एक राजपथ जाता है। इस बङ्गलेके समीपमें ही मेगजीनके फिरङ्गी-पहरेवालोंका काठका घर इन्हीं प्रासादोंके परिकोटेके उत्तर-पश्चिम कोनेपर बना है। लालाजीके रहनेवाला बँगला लकड़ी और काठसे नवीनतम ढङ्गका बना है और दो खना है। प्रत्येक खनके बीचमें एक भीत उठाकर दो रहाइसोंके योग्य बना दिया गया है। इन घरों और बङ्गलेके बीचमें दो रसोईघर हैं और परिकोटेके ओरपास लकड़ीका जँगला है। उत्तरकी ओर दो द्वार हैं। पश्चिमकी ओरका उपरला खन इन्हें रहनेको मिला था। इसके दो कमरे बरा-

मदेमें खुलते हैं और एक खानघर है जो लकड़ीकी सीढ़ीसे मिला है। यह सीढ़ियां बङ्गलेके परिकोटेमें जाती हैं। सीढ़ियोंके पासमें ही योरोपियन वार्डरकी मेज और बिस्तर थे जिसमें लालाजी छिपाकर उतर चढ़ न सकें। कमरेमें सजावट कुछ न थी, धरतीपर चटाईतक न थी केवल तीन टुकड़े ब्रह्मोदरीके पड़े थे जैसा कि ऊपर एक जगह कह चुके हैं। द्वारों व खिड़कियोंपर परदे या चिक कुछ न था। एक भोजनकी मेज, एक पढ़नेकी मेज, एक बेंतकी आराम चौकी, दो कुरसी, दो तिपाई, एक कपड़ा रखनेकी आलमारी और एक भोजन रखनेका सन्दूक—यही सारा सामान कमरेका था। भीतें खुली थीं, बिस्तर पर मसहरी थी, प्रार्थना करनेपर एक लम्प पढ़नेके लिये भी दिया गया था।

नौकरोंके सम्बन्धमें लालाजीको घोर कष्ट उठाना पड़ा, मद्रासी लड़का प्रथम तो आपकी रुचिके अनुसार भोजन ही नहीं बना सकता था, दूसरे जेलरके खानसामांका लाया हुआ और उसीके आधीन काम करनेवाला था। खानसामां क्षुद्रबुद्धि, स्वार्थपरायण, निर्दयी, अनुचित लालची और जेलरके मुंह लगा था।

न लालाजीके मनके अनुसार शाक तरकारी लाता न आपके कथनपर ध्यान देता और व्यय भी वास्तविक व्ययसे कहीं अधिक लिखा देता। जेल इन्सपेक्टरसे जो इस बातकी शिकायत की जाती तो वह ध्यान न देता, कई बार तो उसने उलटी लालाजीसे कटूक्ति की। ज्ञात होता है कि लालाजीके पहुंचनेके पीछे जो गोरे व अधगोरे पत्रोंने लालाजीके ऊपर मिथ्या-दोषारोपण किये उन्हें पढ़ पढ़ इसका सिर दिनोंदिन फिरता गया, उसीका यह परिणाम था।

लालाजीके लिये सब तरहका सुखसाधन प्रस्तुत करनेमें, सरकारकी ओरसे १८१८ के 'लेटर ही केक्टि'के अनुसार, त्रुटियां होती रहीं। नाईका वेतन लालाजी को ही देना पड़ा और गोरेमुख जेलरने स्वाभाविक अभिमान पूर्ण शब्दोंमें यह कहा कि 'जो चाहो तो भारत-सरकारमें मेरी आज्ञाके विरुद्ध अपील करदो।' क्या घर भी नाई नौकर था ?'

लालाजीको सौभाग्यसे फिर इस फिरङ्गी जेलरसे बात करनेका अवसर १२ अगस्ततक न हुआ। १२ अगस्तकी बातचीत लालाजीके शब्दोंमें यह है:—

"इस दिन सुप० जेलने मुझसे एक औरेवार पुरचा

उस रुपयेकी बाबत लिखनेको कहा जो मैंने अपने रुपयेमेंसे खर्च किया था क्योंकि वह इसमेंसे नाईका वेतन मुझे लौटा देना चाहता था किन्तु दिया नहीं। आगेपर नाईका वेतन देना सुप०ने स्वीकार किया।"

लालाजीने अपने पैसेसे शरीर ठीक न रहनेके कारण पङ्खाकुली मांगा परन्तु न मिला। सितम्बर अक्टूबरमें प्रायः रातें आपने बड़ी बैचैनीसे काटीं। आप कहते हैं:—"कईबार हाथमें पङ्खा लिये ही रात बीत जाती थी।" भोजन भी आपके अनुकूल न मिलता था। मद्रासी रसोइयेका बना विलायती ढङ्गका भोजन पञ्जाबी वैश्यको कब अनुकूल होता, पञ्जाबी रसोइया कईबार मांगनेपर भी न दिया गया। सम्भव है कि सरकारी चाकरोंने कुछ हानि समझकर पञ्जाबीनौकर देना स्वीकार न किया हो। लालाजीने २९ जूनको एक निवेदनपत्र वाइसरायको भेजा था उसमें पञ्जाबसे अपना निज सेवक मंगानेकी आज्ञा मांगी थी, किन्तु ६ अगस्तको प्रतिउत्तर मिल गया—"प्रार्थना स्वीकृत नहीं हो सकती"। ९ अगस्तको डिप्टीकमिश्नर मिलने आया था उससे भी यह दुख कहा गया क्योंकि उसने स्वयम् पूछा था कि "आपको खानपान आदिका

कोई कष्ट तो नहीं है ?" परन्तु परिणाम कुछ न हुआ। सुपरि०ने पूछा तो उससे भी यही बात कही गई, इसपर एक बूढ़ा सिख आया यह विचारा भोजन बनाना न जानता था। यह पटियालेका रहनेवाला कृषक था। सार यह कि यह भी दूसरे दिन चलता बना। इसके बाद बन्धनसे मुक्त होनेतक पुराना ही प्रबन्ध रहा, न आपने शिकायत ही की न कोई उत्तम प्रबन्ध ही हुआ। भोजन इतना बुरा और कम न मिलता था पर मनके अनुकूल नहोता था। दिनमें दोबार दूध व चाय मिलती थी, सुपरि० की अति मितिव्ययताके कारण उत्तम व उपयुक्त भोजन न मिलता, सोडा, बरफ और फल आदि अपव्ययकी गिनतीमें थे। सच है 'पराधीन सपनेहु सुख नाहीं'। कुछ दिन पीछे सोडा व फल तो कुछ कुछ मिलने लगा परन्तु बरफ अपव्ययमें ही सामिल रही। जो कुछ थोड़ा होता भी वह लालाजीके सुखका हेतु न होता क्योंकि सुपरि० का खानसामां बड़ा ही नीच प्रकृति, अभद्र और अनुचित लोभका अवतार था, एक पैसेका चार लेता जो पैसा लालाजी मिजमें देते उसका जो पदार्थ आता वही इसकी करतूतका प्रत्यक्ष साक्षी था।

लालाजीका स्वास्थ्य।

लालाजी लाहौरसे चले थे तब भी कुछ विशेष स्वस्थ न थे, आपकी छातीमें दर्द था यह पाठक जान चुके हैं। मांडले पहुंचते ही यह पीड़ा अधिक बढ़ गई, सुपरि० ही हकीम भी था, इसने आपको रेचक दवा दी जिससे कुछ विशेष लाभ न हुआ। आपको डिपटी कमिश्नरने आकर देखा व पहरेके साथ गढ़के भीतर टहलनेकीआज्ञा दे दी, परन्तु कई दिन तक आप वस्त्राभावसे टहलनेको न जा सके। आठ दस दिनमें कपड़े आगये और आपने टहलना आरम्भ किया। पहिले तो इतनी रोकटोक न थी केवल देशी सिपाहियोंके निवासके पास न लेजानेकी आज्ञा सारजण्टको थी, पीछे पीछे और रुकावटें डाली गईं। आपकी स्वास्थ्य सम्बन्धिनी व्यवस्था आपकी डायरीके अनुसार यों है।

२० जून—प्रातः शरीर बहुत खराब था, एक घण्टा टहलनेपर कुछ अच्छा हुआ, सारे दिन यही दशा रही। भोजन बहुत कम हो सका।

२१ जून—भोजन अत्यन्त कम। पांच छः दस्त हुए।

२२ ,, आमाशय भारी, अभी शरीर ठीक नहीं हुआ।

२३ जून चार दस्त हुए, शरीर पूर्वानुसार। वायु शील-युक्त, प्रचण्ड, यदाकदा अति सीतल। आकाश मेघाच्छादित।

२४ जून -सामान्य। सुपरि० ने कहा कि बन्ध व स्वास्थ्यका कुछ सम्बन्ध नहीं है। दो घण्टा फिरना स्वास्थ्य स्थैर्य्यको बहुत है। कलाकोंको भी इतना ही समय मिलता है।

२७ २८ व २९ जूनको निद्रा भङ्ग और मस्तक पीड़ाका कष्ट रहा।

३० जून–डि० कमि० ने मारजयटसे लम्बी सैर करानेकी आज्ञा दी जिसमें पाचन शक्तिका उद्बोधन हो।

१ जुलाई कुछ पढ़ना लिखना न हुआ। नींद खूब आई। निर्बलता रही।

२ जुलाई–शरीर अच्छा रहा। अच्छी नींद आई।

४ ,, फिर नींद सारी रात न आई।

५ ,, प्रातः ठीक था, परन्तु कुछ समय उपरान्त जी खराब हुआ, दिनमें चार दस्त हुए।

६ जुलाई–प्रातः ठीक था परन्तु टहलकर आनेपर आमाशयमें पीड़ा आरम्भ हुई।

८ जुलाई–कोष्ट बद्धका दुःख रहा।

१२ जुलाई—कई दिन पीछे आज शरीर ठीक है।

१४ ,, स्वास्थ्य अच्छा है, दशा सुधरी ज्ञात होती है।

१७ ,, फिर बदहजमी और आमाशयमें पीड़ा है।

१८ ,, दशा कुछ अच्छी है। सुपरिण्टेण्डेण्टसे ताजे घी और फल व शाक अधिक देनेके लिये कहा गया। सायङ्कालमें शरीर अधिक बिगड़ा, मूत्रका रङ्ग लाल होगया। भोजन नहीं किया। कठिन रोगका भय है। आवश्यक प्रबन्ध करता हूं।

१९ जुलाई-रात दुःखसे कटी, पेट भारी जान पड़ता है, दशा कुछ अच्छी है।

२० जुलाई—फिर तीसरे पहर शरीर बिगड़ा, सायङ्कालको बहुत खराब हो गया। अत्यन्त बेचैनी और घबराहट रही। भोजन नहीं किया। रात्रिमें नींद न आई। एकाकी होनेका कुछ कष्ट अधिक रहा।

२१ जुलाई—दशा अच्छी है।

२२ ,, दोपहरमें प्रचण्ड ज्वर हो गया, घबड़ाहट बहुत रही, दिनमें नींद नहीं आई।

२३ ,, ज्वर नहीं रहा। भोजनमें मात्र दूध।

२४ ,, ,, ,,

२५ जुलाई—न भूख न नींद । डाक्टरने नींद आनेकी औषधि दी पर लाभ न हुआ शरीर अत्यन्त निर्बल और अस्वस्थ है ।

२६ ,, शरीर अत्यन्त निर्बल और अस्वस्थ है ।

२७ ,, ,, ,,

यही शारीरिक दशा मिस्टर मदनजीतके पूछने पर लिखी गई तो सुपरि०ने पत्र रोक लिया और कहने लगा कि तुम अत्युक्ति करके चाहते हो कि बाह्य जगत् यह जाने कि बन्धन स्वास्थ्यको हानि पहुंचा रहा है। इसका मैंने यह उत्तर दिया कि आपका कथन सर्वथा अनृत है, आपने मेरी तिल्ली व छातीकी आयुर्वैदिक परीक्षा नहीं की और मुझे घर पर भी प्रायः यही कष्ट रहा करता था । इतना कहने पर उसने परीक्षाकी व कहा कि घबरानेकी बात नहीं है।

२८ जुलाई—न नींद, न भूख, औषधके बलसे २घंटे सोया।

२९ ,, अण्डीका तेल एकमात्रा लिया, तीन दस्त हुए। कुछ शरीर ठीक रहा ।

६ अगस्त—तक शरीर एक भांति चलता रहा, ६ ता० को फिर निद्रा भङ्ग दोष उठ खड़ा हुआ ।

१ ,, दस्त होने लगे, नींद न आई ।

९ अगस्त नींद आनेकी ओषधि ली, पर लाभ न हुआ।
१० ,, पुनः नींद आनेकी ओषधि ली और सोया।
११ व १२ अगस्तको फिर निद्रा भङ्गका कष्ट रहा।
१६ अगस्त तक यही दशा बनी रही।
३० ,, तक शरीर ठीक रहा, परन्तु ३० को पुनः निद्रा भङ्ग दोष हो गया।
११ सितम्बर तक कुछ ठीक रहा, १७ को कुछ कष्ट रहा।
२३ ,, बहुत कठिनतासे कटी, नींद न आई और मस्तकमें पीड़ा रही।

बन्धनके दुःखसे पुराने रोग बल पकड़ गये थे। सरकारी आदमी ऊपरसे बड़ी सम्वेदना दिखाते पर करने धरनेको कुछ नहीं। टहलना भी कम होता क्योंकि सिपाही सारजण्ट हथियार बन्द फिरते फिरते जल्दी थक जाते। इसी बीचमें श्रीयुत सरदार अजीतसिंह महोदय भी मायडले पहुंच गये। इनके उसी गढ़में बन्द होने पर लालाजीको टहलने फिरनेके मार्ग और रुक गये क्योंकि इनकी स्थिति एक दूसरेसे छिपाई जाती थी।

सुपरि० जेलने लालाजीको समय काटनेके लिये एक बंसी लेदी और कह दिया कि मछली पकड़कर

जी बहलाया करो। यह काम किसी बंगाली भाईको मिलता तो वह अपनेको धन्य मानता किन्तु देशी अग्रवालको यह काम ऐसा अनोखा, नया, अप्राकृत घृणित था कि जिसके कहनेकी आवश्यकता नहीं। लालाजी बंशी साथके सिपाहियोंको प्रायः दे देते आप पास बैठे देखा करते जो आप यह काम कभी करते भी तो दो घण्टेमें एक भी मछली न फँसती। लालाजी कहते हैं कि "न तो मुझको इससे कोई आनन्द ही होता न समय कटनेमें सहायता मिलती। अब सुपरि० पूछता तो उसे इस काममें लालाजीकी, अकृतकार्य्यता ही प्रकट होती।

लालाजीकी नजर कैद।

आपसे विना सरकारी आज्ञाके कोई नजर कैदमें नहीं मिल सकता था। एकबार इनके छोटे भाई लाला धनपतरायजी बी० ए० एल० एल० बी० ने अगस्त मासमें इनसे मिलनेके लिये राजसे आज्ञा मांगी पर न मिली तबसे और लोगोंने यह समझकर कि सरकारकी यह आज्ञा कि राजाज्ञासे जो चाहे लाला-जीसे मिल सकता है दिखावे मात्रकी है इस विचारको सर्वथा परित्याग कर दिया।

रात दिन कठोर पहरा रहता। सदा पहरेवालों और राजके उच्च कर्मचारियोंको यही ध्यान बना रहता कि कहीं लालाजी भाग न जायँ। घरके भीतर आने व बाहर जानेके समय बराबर तलासी होती। सिवा पुलिसवालोंके कोई आने जाने न पाता। आपकी चिट्ठी पत्री पहिले देख ली जातीं तब जाने पातीं। अनेक पत्र जिसमें इनके निर्वासन व बन्धन आदिका कथन होता रोक लिये जाते। न बाहरसे ही ऐसे प्रश्नवाले पत्र इन तक पहुंच सकते थे। यह अपने कष्टोंका कथन करते तो भी पत्र रोक लिया जाता क्योंकि इससे सुपरि० का कुनाम होता था। समाचारपत्र आपको पढ़नेको तो क्या मिलते वहांके सिपाही सारजण्ट तक नहीं रखने पाते थे। पुस्तकें जो इन्हें पढ़नेको मिलतीं पहिले वे पढ़ चुकनेके पीछे खूब जांची पड़ताली जातीं। कुछ दिन पीछे पहरा बढ़ा दिया गया था व ध्यान रखा जाता था कि ये कहीं किसीसे पत्रव्यवहार तो नहीं करते। कुछ दिनों तक तो इनके घरके सामनेकी सड़कके देशी पथिकों तकतो सताया जाता था यहां तक कि इनका इधरसे निकलना बन्द होगया था। पैदल तो पैदल गाड़ीपर होकर भी कोई भद्र इधर होकर न निकलने पाता।

ब्रह्मा पुलिसमें हिन्दुस्तानी व पञ्जाबी प्रायः थे इन्हें राजके बन्दियोंसे यथासम्भव सदा दूर रखा जाता। सारजण्टके साथ पहिले पञ्जाबी अरदली था इनके पहुंचनेपर ब्रह्मी अरदली कर दिया गया था। लालाजी कहते हैं कि:—"मुझसे सलाम करनेवाले हिन्दुस्तानियोंको धमकाया जाता और उनकी गुप्त निगरानी होती।" एक दिन सायङ्कालमें दो हिन्दुस्तानी पकड़े गये इनपर यह अपराध था कि वह सड़कपर फिरते मिले। एकको तो सावधान करके छोड़ दिया गया दूसरेको रोक लिया उसका पता निशान लिखा गया और अनेक प्रश्न पूछे गये। यह एक पदत्यागी ओवरसियर था और ब्रह्मामें ठेकेदारी करता था। इससे पूछा गया "क्या तुम लाला लाजपतरायको जानते हो? सलाम क्यों किया?" उसने उत्तर दिया कि "मैं आपको प्रसिद्धिसे जानता हूं और इन्हें महात्मा व पूजार्ह मानता हूं और इनकी पूजा प्रतिष्ठा अपना कर्त्तव्य समझता हूं"। इससे कहा गया कि फिर तो ऐसा न करोगे? उसने कहा "निस्सन्देह मैं अभिवादन करूंगा।" इसके अनन्तर इससे मांडले आनेका कारण पूछा व इस सड़कपर फिर न आनेकी आज्ञा देकर छोड़ दिया गया।

इस बातसे लालाजीको बड़ा दुख हुआ और आपने घूमने फिरने जाना बन्द कर दिया और पञ्जाबके मित्रोंको इस घटनाका उल्लेख करके लिखा कि यदि होसके तो वह मामलेके पञ्जाबी व हिन्दुस्तानियोंको सूचित करदें कि वह मुझे प्रणामादि न किया करें क्योंकि इससे लाभ कुछ नहीं होता और उन्हें कष्ट मिलता है। लेकिन यह चिट्ठी लौटा दी गई और न भेजी गई। जब टहलने न जानेका कारण पूछा गया तो लालाजीने कारण बतला दिया इसपर सुपरि०ने विश्वास दिलाया कि अब ऐसा न होगा आप टहला करें नहीं तो स्वास्थ्य अच्छा न रहेगा। राजने पुलिस व पल्टनके लोगोंसे कह दिया कि कोई लालाजीको सलाम न करें लेकिन वह नहीं मानने व मिलनेपर सलाम करते ही रहे।

पाठक मन बड़ी बलिष्ट चीज है लालाजीका शुद्ध अन्तःकरण उनका देशप्रेम जान व अनजान सबको उनकी ओर स्वतः खींचता था। वह चाहते थे कि कोई उन्हें अभिवादन न करे, मान न दें, पर लोग मान क्या प्राण देनेको उद्यत थे। सच है कि मनको मनसे सम्बन्ध होता है; सबके उरअन्तरगत एक सर्व-

व्यापक शक्ति है जो भले बुरेके प्रति प्रेम व तिरस्कारकी प्रेरणा करती है। राजा हाथ, पैर, मुख, नेत्र बन्द कर सकता है पर मनके ऊपर उसकी दौर्दण्डताका कुछ बल नहीं चलता। लालजीने यह देखकर कि लोग मानते नहीं और अकारण हमारे प्यारे भ्राता-ओंको विदेशी-दण्ड सताता है, यह ढङ्ग ग्रहण किया कि जब कोई दूरसे आता दीखा आपने अपना मुंह दूसरी ओर फेर लिया।

लालाजीका कथन है कि "बहुधा जब मैं छतपर टहलता होता तो लोग मेरे देखनेको आते मैं हट-जाता तो वह कई कई चक्कर लगाते। जान पड़ता था कि चाहे जो हो पर वह मुझे एक दृष्टिभर देखनेकी कामना रखते हैं। इसीलिये एक दिन एक सिक्ख फिर पकड़ा गया तो भी उसने मुझे बरामदेमें देखकर प्रतिष्ठापूर्वक सिर झुका दिया। सिपाहियोंने पकड़ लिया। एक ब्रह्मी सब इन्सपे०ने उसे गाली दीं तो बहादुर खालसाने उसे उन्हीं बाटों झट तोल दिया।" इन्सपेक्टरने पूछा कि सरकार नहीं चाहती तो तुम क्यों सलाम करते हो? खालसाने उत्तर दिया कि सर-कार हमें किसी न्यायधाराके अनुसार इस कामसे

नहीं रोक सकती। एक सरकारी सिपाहीपर भी यही बीती। लालाजीने दो तीनबार सरकारकी इस नीच, बच्चोंकी सी कार्य्यवाहीपर दुखियांकर निकलना बन्द कर दिया। क्या करें बीमारीसे हारे थे, विना टहले आपका प्राण बचना कठिन था; आप जानते थे कि अभी हमें बहुत काम करना है इसलिये हारकर फिर सुपरि० जेलका कहना मान लेते व टहलने निकल पड़ते। लालाजीके सैर करनेकी सड़कपर अंग्रेजोंके मद्रासी नौकरोंके बच्चे खेला करते थे यह नित्य पंक्ति बांधकर खड़े होजाते झुककर सलाम करते लालाजी इन्हें पैसे दे देते। एक दिन योरोपियन सारजण्टको यह जानकर अचम्भा हुआ कि मैं उनसे वह मुझसे सर्वथा अनजान थे।

पार्लिमेण्टमें लालाजी।

९ जुलाईको मिस्टर रेडमण्ड आयरिश, ने पूछा कि क्या जो विना विवेचना राज-बन्दी किये गये हैं अपने इष्ट मित्रोंसे पत्रव्यवहार कर सकते हैं और उनके सम्बन्धी उनसे मिल सकते हैं?

मारली—लाला लाजपतराय व (सरदार) अजीत-सिंहको अपने मित्रोंसे पत्रव्यवहारकी आज्ञा है, पत्र देख

लिये जाते हैं कि कहीं अशान्तिजनक न हों। अब तक केवल एक पत्र रोका गया है। निर्वासितोंसे मिलनेकी अभी तक किसीने इच्छा ही नहीं की। उचित चौकसीके साथ किसीके मिलनेमें आपत्ति नहीं है।

पाठक देखेंगे कि यह उत्तर सर्वथा असत्य था और पार्लीमेण्टको धोकेमें डाला गया था। इसीप्रकार और भी अनेक बातें हैं। मिस्टर मारलीका कथन सत्यसे रिक्त और सर्वथा निर्मूल था। अनेक पत्र लालाजीके रोके गये थे और विमुक्त होनेपर उन्हें दिये गये सो भी सब नहीं, अनेकोंका अब तक पता भी नहीं कि उनका क्या हुआ। मिस्टर गोखलेके दो पत्रमें से एकका भी पता नहीं। लालाजीके कथनानुसार जो चिट्ठियां रोकी गईं उनमें से कुछ यह हैं:—

जसवन्तरायकी—ता० ७ अकतूबर १९०७—कुशल प्रसन्न मात्र इसमें था।

हैड जे सेन—ता० १६ मई १९०७—भारतकी स्थिति जाननेके लिये उत्कण्ठा प्रकट की गई थी व पूछा गया था कि क्या वास्तविक आपने कोई भयानक अपराध किया है।

रामचन्द्र काशी—परोपकारी सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

माधमल आगरा-२४ कुशल प्रसन्न व भक्तिका प्रकाशन मात्र इसमें है।

गुरुदत्तसिंह गुरुदासपूर-६ अगस्त, कुशल प्रसन्न साहस व ढाढस और प्रेम प्रकाशन है।

यह अनेक पत्रोंमें से पांच सात हैं जो लालाजी-तक नहीं पहुंचे। इनके पहुंचनेसे लालाजीका मन प्रसन्न व चित्त स्थिर होता और राजकी कुछ हानि न होती। कारण पाठक समझ गये होंगे।

माण्डलेके राज कर्म्मचारी।

इस अन्याय पूर्ण फिरङ्गी कैदमें हमारे धर्म्मप्राण आर्य्य पुत्रको अनेक देशी व विदेशी, गोरे व अधगोरे राजकर्मचारियोंसे काम पड़ा। सुपरिणटेण्डेण्ट जेल सैनिक कप्तान था। लालाजीकी रायमें यह जड़में बहुत अच्छा था किन्तु भारत एङ्गलोइण्डियन परिकरकी हवाने इसका सिर बिगाड़ दिया था। जो हो प्रारम्भमें जो सभ्यताका वर्ताव इसने किया था वह पीछे न रहा। धीरे धीरे सभ्य वर्त्ताव इसने छोड़ना आरम्भ किया और नाम भी अधूरा लिखने लगा। बीमारीको बहाना कहना और तानेसे यह कहना कि क्या घर भी नाई नौकर था, कदाचित नीचताके

अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता ; विशेष करके लालाजी सरिस धार्म्मिक, सादे और समृद्धिवानके विषयमें। यह सिर फिरा गोरा छोकरा अकारण शेखीका मारा कई बार लालाजीकी अवज्ञा कर बैठता। अभिमान निस्सन्देह बुरी चीज़ है, जिस जाति या राजको बरबाद होते देखा उसका मूल कारण अहंकार ही देखा। आज कल भी जितना फिरङ्गियोंका अनुचित अहंकार व पक्षपात उन्हें प्रजाका दिनोंदिन अधिक घृणापात्र बनाता है उतना दूसरा काम नहीं।

लालाजी कहते हैं कि 'नई कमानीके बनानेका व्यय बच रहनेके विचारसे मैंने सुपरिण्टेण्डेण्ट जेलसे कहा कि पुरानी कमानी पर ही नये कांच चढ़वा दो। परन्तु न फिर मेरे नेत्रोंकी परीक्षा ही हुई, न मेरी ऐनक ही मुझे लौटा कर दी गई। इसी तरह रोगोंकी औषध देनेमें भी टालमटोल होती थी यह बात लालाजीके लेखोंसे कई जगह पाया जाता है। सार यह कि भारतकी दूषित सङ्गत नये आये हुये शुद्ध हृदय फिरङ्गियोंको भी कुछ दिनोंमें पक्का गुरुघण्टाल बना देती है और वह कर्त्तव्यको भूल बैठते हैं। शोक है

कि ऐसी विनाश कारिणी लहर फिरङ्गी हृदयोंमें चल गई है कि जो उन्हें पतित करके छोड़ेगी।

इसके अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर व पुलिस सुप० से बहुत कम काम पड़ता था। अतः कुछ इनका बर्ताव लालाजी अच्छा बतलाते हैं किन्तु जहां तक मेरा अनुभव है लालाजीका यह कथन कम काम पड़नेके ही कारण है, नहीं तो जहां सैनिक डाक्टरका यह हाल हो वहां पुलिस सुपरि० व पुलिस सरदार डि० कमिश्नरका तो कहना ही क्या था। योरोपियन सारजण्टोंका हाल भी लालाजीने अपनी रामकहानीमें लिखा है। आपके कथनसे मैं अन्तिम वाक्य उद्धृत किये देता हूं। "यह लोग (गोरे सारजण्ट) इसी कक्षाके भारतवासियोंसे यदि बुरे न थे तो अच्छे भी न थे।" तथापि यह अधिकार माते न थे।

कालक्षेप-क्रम।

माण्डलेमें आप नित्य किस भांति अपना समय विताते थे, जानने योग्य बात है। हमारे देशके जो नवयुवक कर्म्मवीर होना चाहते हैं उन्हें इस विषयको सचेष्ट होकर पढ़नेसे बहुत लाभ होगा।

लालाजी सिवा रुग्नावस्थाके नित्य ५॥ बजेके लग भग बिस्तरसे उठ जाते थे और शीघ्र ही शौच स्नान आदि शारीरिक कृत्योंसे निवृत्त हो परमात्मा-का स्मरण ध्यान अर्थात् संध्योपासन करते थे। इसके उपरान्त एक कटोरी गरम दूध पीकर सैर करने निकल जाते और ९ बजे तक लौटकर धार्म्मिक पुस्तकोंका पठन व मनन करते। आपकी पाठ्य धार्म्मिक पुस्तकें निम्नलिखित थीं:-

१-भगवद्गीता एक अंग्रेजी अनुवाद दूसरी हिन्दीभाष्य सहित क्योंकि लाला संस्कृत नहीं जानते।

२-मेसेज आव दी वेदाज-यह विषय वार वैदिक मन्त्रोंका संग्रह अंग्रेजी अनुवाद सहित डाक्टर गोकुलचन्दजी नारँग एम० ए० कृत था।

३ पातञ्जल योग सूत्र हिन्दी भाष्यके सहारे।

४ वैदिक मन्त्रोंका संग्रह श्रीयुत मास्टर दुर्गाप्रसादजी सङ्कलित।

५ तैत्रेय उपनिषद् हिन्दी भाष्य सहित।

इसके उपरान्त आप कुछ स्फुट पुस्तकोंका अविलोकन आरम्भ करते और ११ व बारह बजेके अनुमान मध्यान्हकालमें पुनः स्नान करके भोजन करते

और घण्टे दो घण्टे कोई मासिक या त्रैमासिक षट् मासिक समाचारपत्र अर्थात् मेगजीन अंग्रेजीके पढ़ते। आपके पास समाचार पत्र नहीं आने पाते थे, मेगजीनें भी प्रायः जिनमें राजनैतिक विषयोंका अधिक उल्लेख होता रोकली जाती थीं। इस तरह मेगजीनोंके पठनान्तर आप पुनः ग्रन्थपाठमें प्रवृत्त होजाते और ५-६ बजे तक इसीमें निमग्न रहते। इन पाठोंमेंसे अनेक बातें आप अपनी स्मृति बहीमें लिख छोड़ते। इन टिप्पणियोंसे जो लाभ आपने उठाया है उसका फल आशा है कि समय पाने पर लालाजी जनपद्के समक्ष पुस्तकाकार उपस्थित करें। इन ब्रह्मदेशकी स्फुट पुस्तकोंमें ऐतिहासिक पुस्तकें कई थीं।.

पांच बजे पीछे आप फिर सायङ्कालीन पर्य्यटनको निकलते और सूर्य्य छिपनेसे पहिले ही लौट आते क्योंकि सिपाहियोंको उर्दी पहने मालिका लिये अधिक फिरना कष्टप्रद होता और लालाजी यथाशक्ति अपने निमित्त किसीको कष्ट देना पसन्द नहीं करते। सायङ्कालमें अन्धेरा होनेसे पहिले आप लौट कर एक बोतल सोडा, नींबू या अदरकका हवा भरा हुवा पानी पीते और परिकोटमें घण्टे आधे घण्टे बैठते।

अतः पर ऊपर जाकर स्नान करके भोजन करते और फिर कुछ पढ़नेकी चेष्टा करते किन्तु ऋतुकी क्रूरता और जीवोंके अधिक रहनेके कारण प्रायः रातको पढ़ना-लिखना अत्यन्त कम होता और पहर रात गये नियमानुसार लेट जाते । सायं संध्या नियमानुसार न होती किन्तु वेदपाठ और भजनगायन कुछ न कुछ अवश्य करते । सन्ध्यामें त्रुटिका होना लालाजीकी तन्द्रा या आलस्यके कारण न था किन्तु मनकी स्थिरतामें गरमी और ऋतु व स्थान आदिकी प्रतिकूलताएं बाधक होती थीं ।

अनेकानेक स्फुट पुस्तकोंमेंसे जो लोकमान्यजीने पढ़ीं, प्रधान प्रधान कुछ पुस्तकोंका नाम नीचे लिखते हैं । आपके हाथ कोई कैसी भी छोटी मोटी या किसी भी विषयकी पुस्तक क्यों न पड़ती सबको ही आद्योपान्त पढ़कर छोड़ते, क्योंकि कालक्षेप करना भी एक अभीष्ट था, इसीसे आपने इन दिनोंमें उपन्यास बहुत पढ़े तथापि गन्दे उपन्यास न आपको कोई पहुंचाता न आप पढ़ते। जो मान्यग्रन्थ आपके अवलोकनमें आये उनमेंसे कतिपय यह हैं ।

१ ब्रह्मा—ब्रह्मदेश और उसके निवासियोंका इतिहास—अंग्रेजी राजगत ; दो भागोंमें ।

२ भूत व वर्त्तमान, चित्ताकर्षक ब्रह्मदेश । मिसेज अरनेस्ट हार्टकृत ।

३ ब्रह्मदेश व उसकी उपजातियां ।

४ अंशुक (रेशम) धारी पूर्व ।

५ सुन्दर महिलाओं और बौद्ध मन्दिरोंके मध्य।

६ ब्रह्मदेशकी जेबी पुस्तक ।

७ एक जाति पाठशालामें ।

८ „ „ की आत्मा ।

९ ब्रह्मदेशकी मनुष्यगणनाकी रिपोट ।

१० ब्रह्मदेशपर सरकारी रिपोट ।

११ और अनेक छोटी छोटी पुस्तकें ।

१२ जस्टिसमेकार्थीकृत रेमिनस्सेंस ; दो जिल्दोंमें ।

१३ „ हमारे शासनकालका इतिहास ; ५ जिल्दोंमें ।

१४ हरबर्ट इन्सपेंसर कृत आत्मकहानी ; २ जिल्दोंमें ।

१५ नवीन आयरलैण्ड, हेफीकृत ।

१६ योरोपीय जातियोंका इतिहास ; दो जिल्दोंमें ।

१७ मध्यकालीन इतिहास हालमकृत ; ३ जिल्दोंमें ।

१८ इर्योंकी प्रजासत्ताककी समुन्नति, मोरलेकृत ; २ जिल्दोंमें ।

१९ अमरीकाका प्रजा शासन ; २ जिल्दोंमें ।

२० तलवार और बहीखाता—ई० इण्डिया कम्पनीका इतिहास ; २ जिल्दोंमें ।

२१ भारतके विप्लवका इतिहास ; जिल्द २ व ३ ।

२२ भारतमें ४१ वर्ष, लाट रावर्ट सकृत ।

२३ मानवी हृदय (प्रो० मारशेल)

२४ कलाकौशलकी काया पलट ।

२५ भारतवासियोंकी महानता (महा० हरविलास सारदा कृत)

२६ वायरन कृत छन्दें ।

२७ टामस मूर कृत छन्दें ।

२८ व्यवहारिक और अन्य अनेक ऐतिहासिक ग्रन्थोंके अतिरिक्त आपने और भी छोटे छोटे औपन्यासिक ग्रन्थ नवीन व प्राचीन पढ़े ।

२९ उर्दू व फारसीकी भी कई पुस्तकें यदाकदा पढ़ते रहे जैसे दीवान-हाफिज, जौक, आवेहयात (आजादकृत) और नयरंगेखयाल ।

निम्न सम्वादपत्र घरसे भेजे जाते थे । इनमें से कोई अंक लालाजीको मिलता था शेष सब रोक लिये जाते थे ।

रिवू आव रिवूज, (केवल १ अङ्क मिला), नाइनटींथ सेनचूरी, वेस्ट मिनिस्टर मेगजीन, फोर्ट नाइट ली रिवू, कवटर ली रिवू, हिन्दुस्थान रिवू इसके

दो तीन अङ्क मिले, माडर्न रिवू (२ अङ्क मिले), वैदिक व गुरुकुल मेगजीन, जमाना, मखजन, देवनागरीप्रचारिणीपत्रिका ।

निर्वासनकालमें लालाजीकी लेखनी ।

निर्वासनकालमें (जो ६ माससे पांच सात दिन अधिक था) आपकी लेखनीसे जो काम हुआ वह यह है :—

(१) ब्रह्मदेशका वृत्तान्त (२) एक उपन्यास जो अधूरा रहा । (३) भगवतगीतापर एक लेख । (४) समाजसुधार (५) टिप्पणी व जानकारीके लिये कुछ नोटोंका संग्रहन, जिससे अवकाश मिलनेपर आप एक उत्तम ग्रन्थ देशकी भेंट कर सकेंगे ।

लालाजीके साथी

सिवा सिपाही सारजगटोंके और कौन था जिसके पास बैठकर एकसे दो होते, मन बहलाते । अतः कभी कभी योरोपियन सारजगटोंके पास जो इनकी चौकसीपर नियत थे, आप जा बैठते लेकिन कालक्षेपके अतिरिक्त और क्या हो सकता था । राहरीति, शिक्षामें भेद, मनोंके विचार और धार्म्मिक भावोंमें

अन्तर? फिर विद्वान् और अशिक्षितका फरक। लालाजी अध्यात्मिक जीवनके प्रेमी, और गोरे घातक-पशुओंकेसे अत्याचारको प्रेम करनेवाले। वह शिकार, झगड़े, अनुचितप्रेम और गप्पोंका कथन करते, यह धार्मिक-जीवनका आनन्द उनके सामने रखते। न इनसे उन्हें आनन्दविशेष मिलता न उनसे इन्हें।

इस घरमें दो सुन्दर बिल्लीके बच्चे थे, मन बहलानेके लिये लालाजीने इन्हें दूध पिला पिलाकर हिला लिया और आपसमें गहरा प्रेम उत्पन्न होगया। किन्तु इन अजान पशुओंकी मित्रतामें कष्ट भी था। रातको लालाजीके साथ एक विस्तरपर सोनेको यह बच्चे हठ करते और लालाजीको इनके साथ नींद न आती। हटा देते तो सो जानेपर वह फिर आजाते और लालाजीकी नींद उचट जाती। लालाजी चाहते थे कि वह दिन भर ही उनके मित्र व साथी रहें रातको अपने घर सोवें, लेकिन वह क्षण भर भी लालाजीका साथ नहीं छोड़ना चाहते थे, अन्तमें इन्हें रातको पासकी कोठरीमें बन्द करके रखना पड़ता। किन्तु इस तरह बन्द करके रखनेसे वह लालाजीका स्वभाव पहिचान गये और रातको दिक करना छोड़

दिया। इन बच्चोंका लड़ना खेलना, दौड़ना, कूदना कभी प्रसन्न कभी अप्रसन्न होना देख देख बहुधा लालाजी अपना समय सानन्द व्यतीत कर लेते। यह बच्चे परस्पर प्रेमकी पाशमें अत्यन्त दृढ़ बँधे थे किन्तु भोजनपर इनकी काटमार भी बड़ी आश्चर्यजनक होती। एक टुकड़ेके ऊपर एक दूसरेका गला काटनेपर उद्यत होजाता। एक इनमें बड़ा चालबाज और छली था और सबलतर भी था वह दूसरेसे अधिक भाग लेनेकी चेष्टा करता और कर, बल, छल सब काममें लाता, अनेकबार लालाजीको निर्बलका पक्ष लेना पड़ता, लेते क्यों न? निर्बल व दीनोंका पक्ष लेनेके कारण ही तो आपको निर्दोष होते भी विधर्मी और देश दशा अनभिज्ञ लोगोंके हस्तगत कैद होना पड़ा था। लालाजीने इन बिल्लीके बच्चोंमें भी वही आपा-धापी देखी जो आजकल मनुष्य जाति गत व्यक्तियों व जातियोंमें देखी जाती है। अण्डज, पिण्डज, स्वेदज व उद्भिज सबमें ही अपाधापीकी जो लहर जोरों पर है वह इन बिल्लीके बच्चोंमें क्यों न होती। परन्तु साधु क्या नहीं कर सकता, लालाजीने इनमें धर्म्म और न्यायका बीज बो दिया। इन्हें एक ही पात्रमें

शान्तिपूर्वक दूध पीनेका स्वभावी बनाया । इस तरह आपका कुछ समय कट जाता और दो जीवोंका कल्याण मार्गकी ओर पर पड़ता । आपके शान्तिके लिये यद्यपि कोटियों देशवासियोंका प्रेम पर्य्याप्तसे कहीं अधिक था तथापि इन्हें इससे अधिक सन्तोष होता था कि कारागारके परिकोटेके भीतर भी उन्हें दो चार सिपाही और दो बिल्लीके बच्चे प्यार करनेवाले हैं ।

आप दुःखके साथ एक स्थलपर कहते हैं कि एक मैनाका जोड़ा मुझे राग सुनाकर प्रसन्न करता था । एक सारजण्ट मैनाको पकड़ना चाहता था पर न पकड़ पाया । एक दिन मैना घरसे बाहर गई थी, इसने उसका एक बच्चा हर लिया व घर ले गया । मैनाने लौटकर घर सूना देख रोना चिल्लाना आरम्भ किया और कई घण्टे तक सर पटककर अन्तमें सदाके लिये घर छोड़ गई । इस तरह गोरे सारजण्टने लालाजीको अपनी निर्दयतासे बड़ा दुःख दिया ।

लालाजीका बन्धमोचन ।

११ नवम्बरको लालाजीके विमुक्त किये जानेकी आज्ञा मायडाले पहुंची, जल्दीमें लालाजीको बिस्तर आदि बांधकर तय्यार होना पड़ा क्योंकि स्पेशल ट्रेन

तय्यार थी, सवारी द्वारपर खड़ी थी। बिल्लोंके बच्चे कहीं बाहर खेलने गये थे। इस समय इन छोटे मित्रोंके वियोगका लालाजीको जो दुःख हुआ वह पाठक इतने ही से जान सकते हैं कि लालाजी 'बायरन' कविके वह छन्द मन ही में पढ़ते विदा हुए जो उसने चेलन नामक कैदीके मुखमें रखकर बन्दीगृहसे निकलनेके अवसरपर कहा है:—

जब बन्धमोचनकी घड़ी आई।
पृथक्कर सब अलानोंको गिराई॥
कारागार मम एकान्त बासा।
दिवारोंसे लगा था चित्त खासा॥
विमोचक आगये क्यों राम् जाने।
मेरा घर हाय दूजा भी छुड़ाने॥
मन अपना एक मकड़ीसे लड़ा था।
अनन्दसे तान-बाना देखता था॥
निशाकर संग चूहोंका तमाशा।
मन देख नित्य आनन्द पाता॥
मैं भी था इन्हींकी मण्डलीका।
सभोंका एक देशी, पुज्य राजा॥

बली समरत्थ इनको मार सका ।
अचम्भा थी हमारी शान्ति सत्ता ॥
बहुत सहवाससे उत्पन्न हुई थी ।
जँजीरोंसे भी गाढ़ी मैत्री थी ॥
यद्पि होता है बन्धन मुक्त अपना ।
पुराने मीत होंगे हाय सुपना ॥
बिरह बन्ही कलेजा दाहती है ।
जगतमें चीज बेढब नेह भी है ॥

(राधे)

लालाजीके मनकी दृढ़ता ।

लालाजीका कुनबा कच्चा था, पिताजी वृद्ध और पेनशन ले चुके थे । अभी बन्धनमें पड़नेके दो ही मास पूर्व आपके सुपात्र, सुयोग्य और होनहार विद्वान् यामाताका देहान्त हो गया था । यह २६ वर्षका लड़का बी० ए० व एम० बी० परीक्षोत्तीर्ण चिकित्सक था, इसकी मृत्युसे इसकी बाल विधवा और उसके अजान बालकोंका बोझ भी लालाजीपर ताजा ही आ पड़ा था । वृद्ध पिताकी ओरसे भी आप चिन्तित थे । आपके लड़के भी अभी विद्यार्थी ही थे, कामसे न लगे थे ।

इस दशामें गृहस्थीके झंझटोंसे विचलित मन हो जाना सहज था। आपने अपनी सम्पत्ति पुत्रोंके नाम करा दी थी इनके पास कुछ कम्पनियोंके हिस्सेके सिवा और कोई सम्पत्ति न थी। इस स्थितिमें भी आपका मन विचलित नहीं हुआ आपने अपने शौर्य्यको हाथसे न जाने दिया। हां इन्हें जो किसी बातने कभी विचलित मन या दुःखी किया तो वह विधवा कन्याकी स्थितिका विचार था। आपको अपनी धर्मपत्नीके दृढ़ हृदयतापर पूर्ण भरोसा था। आपकी माताजीका देहान्त हो चुका था यह बात पाठक जान चुके हैं तथापि आपको अपनी माताजीकी याद बहुत आती थी, श्रीमतियोंके सद्गुणोंके कारण आपका उनमें असीम प्रेम था; आप कहते हैं:—

"दान, उदारता और आतिथ्यकी सद्शिक्षा मैंने अपनी मातासे पाई अतः इसके निमित्त उनका चिर-कृतज्ञ हूं। मुझे यह याद करके आनन्द होता है कि मेरे बालकालमें जब कोई ज्योतिषी आपसे कहता कि तुम्हारा पुत्र बड़ा दानी होगा तो आप कैसी अह्लादित होतीं। उनका जीवन, दान, अतिथिसत्कार सम्बन्धमें मेरे लिये बड़ी प्रभावशालिनी-शिक्षाप्रद

था। युवावस्थामें जब मैं परोपकारी कामोंमें सम्मिलित होता तो आप बहुत ही आनन्दित होतीं, और प्रत्येक उदारताके काममें मेरी पीठ ठोंकतीं व मन बढ़ातीं। दोषोंकी ओरसे आंखका फेर लेना उनमें स्वाभाविक महान्‌गुण था। किसीका जी दुखाना उन्हें अच्छा न लगता। आप अपने ऊपर विश्वास रखती थीं, कभी किसीसे दयालुताकी आकांक्षा नहीं करती थीं। मेरे चलनका वृहत्‌भाग जो मुझमें है माताजीसे प्राप्त पैतृकसम्पत्ति है। कदापि मैं अपनी व्यक्तित्वके लिये अपने पिताजीका कम ऋणी नहीं हूं, क्योंकि आपने ही मेरे अन्तःकरणमें अध्यात्मिकभावका समावेश किया है और देशभक्तिका पाठ पढ़ाया है, चाहे पीछे इन्हें कभी यह विचार हुआ हो कि मैंने आपकी आज्ञाका अतिक्रमण किया है और नियत सीमाको उल्लङ्घन कर गया हूं, परन्तु जो वीज अन्ततः फल लाये हैं वह आपके ही हाथोंसे बोये गये थे।

मुझे इस बातसे बड़ा आनन्द हुआ है कि मेरे निर्वासन सम्बन्धी घटनाको आपने महान्‌ उच्चहृदयता और साहसके साथ सहन किया और कोई काम ऐसा नहीं किया कि जिससे आपके पुरुषोचित-स्वभावमें

बड़ा लगता। निर्वासनकालमें आपको पत्र द्वारा हिम्मत दिलाते रहनेका मुझे बड़ा खयाल था, प्रत्युत्तरमें मुझे भी सूक्ष्म किन्तु प्रेमसे भरी और साहसप्रद चिट्ठियां मिलती रहीं। आपके पत्र प्रायः सूक्ष्म होते थे क्योंकि आप अङ्गरेजी नहीं जानते और उर्दू के पत्रोंका अनुवाद सुपरिण्टेण्डेण्ट जेल देख लेता तब वह पानेवालेके हाथमें पहुंचते, इससे विलम्ब होनेका भय रहता। मैं प्रत्येक पत्रके साथ उसकी नकल रोमनमें करके रख देता जिसमें सुपरि० जेलको सुविधा हो और पत्रके भेजनेमें विलम्ब न हो। मेरे कुनबे सम्बन्धी कार्य्य-सम्पादनके अतिरिक्त, आप मेरे पक्षमें अपनी बलिष्ठ लेखनीसे भी काम लेते रहे थे और अपनी लेखनीरूपी छुरीसे मेरे अशुभचिन्तकोंके दिल छेदते रहे थे, यद्यपि मुझे वहां बैठे यह जाननेका साधन न था पर लौटकर इस बातके जाननेसे मुझे बड़ा हर्ष हुआ।

मुझे बड़ी लज्जा इस बातसे हुई कि एक हिन्दुस्तानी डिप्टी मजिष्ट्रेटने (छी !) बृटिश मजिष्ट्रेटके नाते अपने कर्त्तव्यपालनमें यह आवश्यक समझा कि पिताजीके ऊपर गुप्त निगरानी कराता रहे, मानों वह मेरे कृत्योंके दायी हों। लेकिन धन्य है! यह पूजाई

पुरुष एक क्षणको भी नहीं घबराया और मुझे निर्दोषी मानने व प्रकाशित करनेमें एकतिल न डिगा; इस दुःखकी अवस्थामें भी हिम्मत हारनेका नाम नहीं लिया।"

'लालाजीके पत्र' माण्डलेसे देशको।

जो पत्र दुःख पड़नेपर लिखे गये थे उनके पढ़नेसे लालाजीके सच्चे मनोभावोंका ठीक पता चलता है इसलिये हमने आपके कुछ पत्रोंको भी उद्धृत करना उचित समझा, आशा है कि पाठक हमसे सहमत होंगे और इन्हें विचारसे पढ़ेंगे।

(१) एक धनिक मित्रके नाम।

माण्डले (अपर ब्रह्मा)
ता० २० मई १९०७

(सर्वथा घरू)—

मैं यह पत्र आपको अंग्रेजीमें लिखता हूं क्योंकि भेजनेके पूर्व इसे सुपरिण्टेण्डेण्ट जेलके दृष्टिसे निकलना आवश्यक है। मैं जेलसे बाहर एक घरमें रहता हूं और रात दिन मेरी चौकसी की जाती है, नहीं तो मैं सब प्रकार सुखी हूं। क्या आपने मेरे कथनानुसार

मेरा खाता अपनी हिसार, दिल्ली, नारनोंद, ग्वालियर, कोटला और लायलपुरकी दुकानोंसे अपने यहां फेर लिया या नहीं, यदि नहीं तो तुरन्त इस कामको पूरा करके मुझे सूचित करें। कृपया एक पृथक् खाता केवल प्यारे किशन अर्थात् मेरे मँझले बेटेके नामका खोल दें और इसमें १५०००) जमा कर लें। मेरा विचार इस रुपये-को उसे योरोपमें शिक्षा देनेके लिये सुरक्षित रखनेका है। इस रुपयेका प्रबन्ध मेरे पिताजीके द्वारा होगा और उनके पीछे प्यारेलाल और रनपतराय मिलकर इसका प्रबन्ध करेंगे। इस खातेमेंसे रुपया केवल प्यारे किशनको योरोपमें शिक्षा देनेके लिये ही लिया जा सकेगा किसी अन्य कामके लिये नहीं। यदि आपने मेरे समझौतेके अनुसार खातोंका जमा खर्च फेर लिया है, तो इस नये खातेके खोलनेकी कोई आवश्यकता नहीं, केवल इस पत्रको प्रमाणवत सुरक्षित रखें, कि १५०००) प्यारे किशनको योरोपमें शिक्षा देनेके लिये जमा रहेगा। यह चिट्ठी, मैं प्राक्-सावधानीके निमित्त लिख रहा हूं, नहीं तो मैं सब भांति स्वस्थ और भला चङ्गा हूं और अभी बहुत काल तक जीवित रहनेका विचार और आशा है।

दया करके प्रत्युत्तरमें व्यवहार और अपने इष्ट मित्रोंके कुशल प्रसन्नताके समाचारोंके अतिरिक्त और कुछ न लिखें।

आपका 'लाजपतराय'

२-लाला प्यारेलालके नाम ९ जूनको है, इसमें घरू व्यवहार व व्यवसाय सम्बन्धी समाचारोंके सिवा कालेजका हाल पूछा है कि हालमें कितने नये छात्र प्रविष्ट हुए हैं?

३ १३ जूनका पत्र भी लाला प्यारेलालके नाम है। पाठकोंको इस पत्रके पढ़नेसे कई बातें ज्ञात होंगी विशेषतः यह कि देश सेवा आप एक क्षणको भी नहीं भूले अतः हम इसे अक्षरशः दिये देते हैं।

मम प्रिय प्यारेलाल! जो तुम प्रामेसरी नोट बेच सको तो उस रुपयेको कुछ नियत समयके लिये ब्याजपर जमा कर दो। कुछ और रुपया मिलाकर यह रुपया प्यारे किशनकी योरोपीय शिक्षाके लिये जमा रहेगा। मेरी आन्तरिक कामना है कि प्यारे किशन उत्तम श्रेणीकी शिक्षा लाभ करके अपने आपको देश सेवाके योग्य बनावे। यह विचार मेरा बहु कालीन है कि प्यारे किशन, कालेज स्टाफ (श्रीमद्दयानन्द कालेजके कर्म-

चारी समूह) में मेरा स्थानापन्न हो। इस भावको मनमें रखकर उसे उच्चतम कक्षाकी शिक्षा, जहांतक वर्त्तमान परिमित साधनोंकी सहायतासे हम उसे दे सकते हैं, मिलनी चाहिये। उसे अपने स्वास्थ्य और आचारका विशेष रूपसे पूरा ध्यान रखना चाहिये। मुझे पूर्ण आशा है कि वह अपने प्यारे पिताकी आशाओंको कार्य्यमें परिणित करेगा।"

अहा! कैसा पवित्र भाव है, कौनसा सहृदय इन पंक्तियोंको पढ़कर प्रेमके आंसुओंसे लालाजीके पैर न धोयेगा? हम तो परमात्मासे यही प्रार्थना करेंगे कि हमारा जन्म सदा ही इस कर्म्म भूमि भारतमें हो व प्रत्येक जन्ममें हमारा हृदय भी ऐसे ही भावोंसे गर्भित रहे।

पुनश्च, इसी पत्रमें—

"मेगजीन भेजते समय इस बातका ध्यान रक्खो कि जो पत्र सर्वथा वा अधिकतर मेरे सम्बन्धी विषयोंसे भरे हों (जैसा कि इण्डियन रिवूका गत अङ्क था) न भेजा करें। गताङ्क रिवूका इसी कारण रोक लिया गया। वह पत्र जिनमेंसे मेरे सम्बन्धी विषय पृथक् किये जा सकें पढ़नेको भेज दिया करें। उन्होंके

निमित्त मुझे उर्दू पत्रोंकी विशेष आवश्यकता है। जसवन्तराय कहां हैं व कैसे हैं।

तुम्हारा प्यारा, 'लाजपतराय'

४, मास्टर श्यामलालजीके नाम १६ जूनका है, इसमें लिखा है।

आपके ७ जूनके वृत्तोंके पूछनेके लिये धन्यवाद देता हूं। मैं आपके प्रश्नोंका सविस्तर उत्तर नहीं दे-सकता निम्न सूचनाएं आपके सन्तोषके लिये पर्याप्त होंगी। मैं राजकीय गढ़में रहता हूं। कहते हैं इस गढ़का क्षेत्रफल ७ सात मीलके अनुमान है। मेरे रहनेका घर सबका सब काठका है और भूत पूर्व ब्रह्माके.राजाके महलके ठीक समीप है। यह दो खना घर है, प्रत्येक खन दो भागोंमें विभक्त है। नीचले खनमें पुलिसके पहरू रहते हैं, ऊपरका आधा खन मेरे वर्त्तनेको है और पर्याप्त है। अभी तक स्वास्थ्य ठीक है, जल वायुका बुरा प्रभाव कुछ नहीं पड़ा। मुझे एक मदरासी लड़का सेवाको मिला है, यही मेरा भोजन अंग्रेजी ढँग पर बनाता है व सुपरिण्टेण्डेण्ट जेलके हातेमें रहता है। दिनमें ४-५ बार मेरे पास आता है। यही भोजन लाता है और बिस्तर बिछाता

है। एक नापित हर दूसरे दिन क्षौर कर जाता है। एक पनहारा है व एक धोबी, एक भङ्गी भी रखा गया है। देशी रीतिका भोजन बनानेका प्रबन्ध नहीं है अतः मैं घी काममें नहीं ला सकता। दूध मिल जाता है अतः गायकी आवश्यकता नहीं। जिन फलोंकी आवश्यकता होती है बाजारसे मँगा लेता हूं। यहां सब समय फल बहुत मिलते हैं, आप खाने-का कोई पदार्थ भेजनेका कष्ट न उठावें। इस प्रश्नका कि मैं समय कैसे काटता हूं, उत्तर यह है कि मैं एक योरोपियन अफसर और दो कान्सटेबिलोंके निरीक्षणमें प्रातसायं गढ़के भीतर टहलने जाता हूं और मनभरकर चल-फिर सकता हूं। लाहौरसे कुछ धार्मिक पुस्तकें पहुंच गई हैं। प्रातःका सारा समय १०—१२ बजेतक इन्हींके मननमें लगा देता हूं।......................। मित्रोंको मेरा स्मरण कराकर कहदें कि जो हो सके तो मुझे भूल जायँ।

जो पत्र लालाजीने अपने साहूकार मित्रको लिखा था (जिसे ऊपर दे चुके हैं) उस पत्रके अन्तिम वाक्य निस्सन्देह सूचना देते हैं कि लालाजी साहस न हारनेपर भी रोगके कारण कभी कुछ कुछ कातर हो

जाते थे और चाहते थे कि कोई भी दुख उन्हें चाहे हो पर उनकी असावधानीसे किसी अपने या परायेको न हो ।

५, पत्र भी इन्हींको २२ जूनको लिखा गया था इसमें आपने अपने लड़के प्यारेलालकी बाबत् मास्टर जीके द्वारा लाला हरीलालको सँदेशा भेजा था कि बच्चेको किसी न किसी कामपर लगादें ।

६, पत्र चि० प्यारेलालके नाम २२ जूनका ही है उसमें उन्हें उक्त पत्रके अनुसार शिक्षा दी गई है कि जो लाला हरीलाल कोई काम सोचकर न दे सकें तो तुम अपने चाचाजीके साथ काममें मिल जाओ उन्हें तुम्हारे साथ मिलना स्वीकार है । साथ ही अनेक समयोचित शिक्षाके अनन्तर कुछ भाव भरे शब्द लिखे हैं वह यह हैं:—

उदार प्रकृतिवाला वर्त्ताव उत्तम सम्बन्ध स्थिर रखनेके लिये आवश्यक होता है । हम भारतवासियोंमें संकुचित हृदयता ही वैमनस्यका कारण होती है । प्रत्येक मनुष्यका धर्म्म है कि जनपदका प्रेम व प्रतिष्ठा लाभ करे । दबाव व परीक्षा पड़नेपर अपने स्वभावपर दृढ़ रहना मनुष्यका कर्त्तव्य है ।

मुझे आनन्द हुआ कि तुमने अपनी प्रिय भगिनीको शिक्षा देनेके लिये पं० रिखीरामको नियत किया है, यह काम मैं परमावश्यक समझता हूं।" (मानो शिक्षाके ही प्रसारको लालाजी सरस्वती पुत्र बनकर अवतरित हुए हैं। चाहे जहां हों शिक्षा और परोपकार तो आपके प्राण हैं)। पुनः आप कहते हैं— जयचन्द (स्वर्गवासी दामाद) के स्वर्ग गमन करनेपर ही मैंने यह विचार दृढ़ कर लिया था। किन्तु हरे दुःखके कारण विचार स्थगित रखा। उत्तम शिक्षा इस असौभाग्यवती लड़कीके दुःख व चिन्ताको हलकी करनेमें सहाय्य होगी। अच्छे समाचारपत्र व पुस्तक आदि इसे मँगाकर देते रहो, इमी निमित्त गतबार जब मैं प्रयाग गया था तो दो तीन पुस्तकें लेता आया था।

७ जून १९ को पं० सुन्दरलाल बी० ए० नवयुवकको प्रयाग भेजी। इसमें के प्रत्येक वाक्य कामके हैं अतः उद्धृत किये जाते हैं।

मेरे प्यारे सुन्दरलाल, सिवा इसके कि मैं अपने देशकी सेवासे वञ्चित कर दिया गया हूं, यों मैं सब तरह सानन्द हूं। मैं पूरा पूरा पूर्ववत आशासे भरा हूं,

मेरा पूर्ण विश्वास है कि परमात्मा ही हमारी दशाको सांचेमें ढालनेवाले हैं और जो कुछ वह करते हैं सब हमारे भले को। आप जानते हैं कि मैं कर्म-फल माननेवाला हूं, अपने मुसलमान मित्रोंके भाग्यका विश्वासी नहीं। यह कृपा है जो आप व अन्य मित्र मुझे याद करते हैं पर एक बात याद रखें कि जो आपने इस वर्ष परीक्षा (वकालत परीक्षा) पास न कर ली तो मुझे बड़ा दुःख होगा।

पण्डित मालवीयजीसे स्वयं मिलें और मेरी ओरसे प्रणाम कहें। यदा कदा मुझे यह स्मरण करके दुःख होता है कि मैंने अन्तिमबार प्रयाग जाकर उन्हें कष्ट कर लिया। आशा है कि उन्होंने मुझे क्षमा कर दिया होगा। मैंने जो कुछ किया शुद्ध अन्तःकरणसे किया अतः क्षमा प्रार्थनाकी आवश्यकता नहीं।

८—पत्रमें ५ जुलाईको शारीरिक स्थितिका कथन है। स्वास्थ्य दो सप्ताहसे ठीक नहीं। यकृत ठीक दशामें नहीं है। निद्रा भङ्ग रोग कष्ट प्रद होरहा है। कुछ चिन्ताकी बात नहीं है।

९—पत्र १० जुलाईको प्यारेलालके नाम है। इसमें शारीरिक स्थिति ऋतु आदिका कथन करके रिवू

आवरिवूज भेजना बन्द करनेको लिखा है क्योंकि उन्हें सरकारी कर्मचारी देने न थे तो मांगना व्यर्थ था ही। आप कहते हैं-"किसीको कारबारके अतिरिक्त कुछ न लिखना चाहिये क्योंकि जिस पत्रमें राजनैतिक बातें या मेरे निर्वासन, बन्धन आदिका उपकथन होता है मुझे नहीं मिलता।"

२२ जूनको जो पत्र लालाजीने हिसारको एक धनिक मित्रके नाम लिखा था, उसका उत्तर उन्होंने अंग्रेजी न जाननेके कारण एक अन्य भद्रसे लिखाया। इन भद्रने अपनी ओरसे निष्कपट भावसे इस पत्रमें लिख दिया कि 'समझदार लोगोंको आपके पुत्रोंसे पूरी सहानुभूति है।' यह बात लालाजीको बहुत खटकी।

१०-पत्र १४ जुलाईको जो आपने मास्टर श्याम-लालको लिखा उसमें आप लिखते हैं।

"यदि मेरे बेटे लोगोंके इस भावसे लाभ उठाना चाहें तो मैं उन्हें घृणा दृष्टिसे देखूंगा। मैं चाहता हूं कि वह किसी दूसरेकी सहायता बिना ही स्वयम् रोटी कमाएं। चन्दूलालपर मेरा विशेष दावा था, इन विचारोंको उसमें स्थान नहीं हो सकता। मेरा पत्र दूसरोंको दिखाना उचित न था। बुरा न मानें, वह

पत्र सर्वथा घरू था। आगेपर इस बातका कुछ कथन ही न करें। मेरे बेटे सब तरह कमाखाने योग्य हैं। फिर सब अविवाहित हैं। बहुत थोड़ीसी अपनी कमाईमें पूरा पाड़ सकते हैं। जब आप हिसार जायँ यह पत्र लाला हरीलाल व पण्डित लखपतरायको दिखला दें।

११–पत्रमें ईश्वरके कृत्यको धन्यवाद पूर्वक हँसते हुए ग्रहण करनेका आदेश है यह १५ जुलाईको एक मित्रके नाम लिखा गया था।

१२–पत्रमें आप अपने पुत्र प्यारेलालको ११ अगस्तको लिखते हैं "तुम्हारी माता व तुम्हारी ओरसे जो काम हो उसमें मैं हस्ताक्षेप नहीं करना चाहता तुम्हारे विवाह सम्बन्धमें मेरा हाथ नहीं है, यह सर्वथा तुम्हारे पितामहके आधीन है।

१३–पत्रमें इसी पुत्रको शिक्षा दी गई है—कञ्जूसीका स्वभाव न डालना। भाईबहिन जो मांगे उन्हें देना। अपनी आयमें सुखी व सन्तुष्ट रहो। दान देना कभी मत भूलो।

१४–पत्र २७ अगस्तको लिखनेके पूर्व पिताजीकी ओरसे ५०) दान करनेको मिले। इसमें से २५) तो

सुपरि० के द्वारा व नौकरों द्वारा दान कर दिये गये शेष इसी निमित्त सुपरि० के पास जमा रहे।

१५-पत्र २६ सितम्बरको पिताजीके लिये लिखा गया। इसमें आप कालक्षेप-क्रम लिखनेके उपरान्त कहते हैं:—

अपने बन्धमोचनके उपरान्त यदि कभी विमुक्त हुआ तो, मेरा विचार एक उर्दू पुस्तक ब्रह्मदेशके सम्बन्धमें लिखनेका है। आवश्यक टिप्पणियां एकत्र कर ली हैं और भी कुछ लेखनीका काम किया है। मै सविस्तर गीताका भाष्य लिखनेका काम हाथमें नहीं ले सकता, एक लेख गीतापर अलबत्त लिखनेका मन है। इसके अनन्तर फिर घरू हाल है।

इतने ही पत्रोंको उद्धृत करके पाठकोंसे आशा की जाती है कि वह लालाजीकी हृदय-दृढ़ता और कायरताका पता लगा लेंगे।

लालाजीके छूटनेकी आशा।

लालाजी कभी स्थितिको विचारते तो अपनेको सर्वथा निरपराध देखकर सोचने लगते कि सरकारने धोखा खाया है ज्यों ही उसे वास्तविक स्थितिका ज्ञान होगा मुझे छोड़ देगी। पार्लमेण्ट भी ऐसा अन्याय

चिरकाल तक न रहने देगी। फिर रावलपिण्डीके वकीलोंके अभियोग समाप्तिपर जो कुछ बात झूठी सच्ची मेरे विरुद्ध प्रकाशमें आनेको है आ जायगी और मैं छूट जाऊंगा। लेकिन कभी कभी आप इन बातोंको भूल जाते तो मानवी स्वभाववश छूटनेकी आशाका ध्यान न करके सावधान रहना अपना कर्त्तव्य जान घरबारके भविष्यत कालिक प्रबन्धमें लग जाते और पिता पुत्रादिको तदनुसार ही पत्र लिख देते।

आपने कभी कोई काम गुप्त तो किया ही न था जो किया था चौड़े धाड़े, राजा प्रजाकी शुभकामनासे, अतः यह अच्छी तरह जानते हुए भी हमारे देशकी घूसखोर पुलिस जो न चाहे सो सत्य कर दिखावे, आपको सत्यपर दृढ़ भरोसा था। जब आपने रावल-पिण्डीके अभियुक्त भ्राताओंकी विमुक्तिके समाचार पाये आपको अपने भी बन्धनसे मुक्त होनेकी आशा बलवतीतर होगई। आपको भरोसा था कि शिमला छोड़नेके पूर्व ही सरकार मेरी निरपराधतापर विचार करके अवश्य बन्ध-मोचनकी आज्ञा देगी। यह दशा मन ही मनमें भय व आशाके घोर संग्रामका दृश्य दिखा रही थी।

७ नवम्बरको आशाकी चमक आई। सुपरि० ने आपसे कहा कि 'सरकार अब आपके बूट आदिका व्यय नहीं करना चाहती मुझे स्वयम् खरीदनेका प्रबन्ध करना चाहिये। जो वस्त्रादि जाड़ेके बने हैं उसका भी दाम तुम्हें ही देना होगा।'

सुपरि० के जाते ही लालाजीने सारजयटसे कह दिया कि सुपरिण्टेण्डेण्टका उक्त कथन उनके बन्ध-मोचनकी पूर्व-सूचना है। दूसरे दिन सुपरि० ने आपका विचार बदलनेको बातें बनाईं पर लालाजीने अपने मनमें सब समझ रखा था। आप यह भी जानते थे कि जैसे गुप्त रीतिसे लाया गया हूं, वैसे ही लाहौर ले जाकर छोड़ा भी जाऊंगा।

आपकी डायरीमें १३ जूलाई शनिवारकी बाबत लिखा है—'शोक कि प्रार्थनामें भी मनको शान्ति न मिली। मनको बहुत शिक्षा दी समझाया कि शोक छोड़ दे। बाल बच्चोंका प्रेम कर्त्तव्यसे बड़ा नहीं। तुमपर ही यह दुःख नहीं पड़ा। सहस्रोंने तुमसे अधिक दुःख झेले हैं। सुकरात आदिको सत्यके अनु-करणके ही कारण दुःख झेलना पड़ा है, मन हारनेका क्या काम। दुनियामें स्वार्थकी प्रधानता होती ही है।

अंग्रेज भी वैसा ही करते हैं, यह कुछ ऋषि तो हैं ही नहीं। जगत परिवर्त्तनशील है।'

१५ अकतूबर, 'लालाजीके मित्र लाला जसवन्तराय पञ्जाबी पत्रके स्वामीके कारागारसे मुक्त होनेका दिन था आपने इस दिन आनन्द मनाया उनके दीर्घायुकी प्रार्थना की। आशा, जहां जगतके स्थैर्य्यका हेतु है, वहां कभी कभी दुःखदायिनि भी हो जाती है। इन दिनों लालाजीका मन बहुत दुचित्ता रहने लगा। छूटेंगे या नहीं, यह तरंगें उठने लगीं।

पार्लीमेण्टमें प्रश्न हुआ था कि क्या ला० लाजपतरायने अपने पकड़े जानेके विरुद्ध कुछ राज्यके प्रति कहा है यदि कहा है तो क्या। इस बातसे लालाजीको ध्यान हुआ कि वह अपने भावोंसे अपने शुभचिन्तकोंको परिचित कर दें जिससे पक्ष लेनेके लिये उनका हाथ दृढ़ हो। अतः आपने निम्न निवेदनपत्र सुपरि० जेलको २९ जूनको सौंपा—इससे पूर्व आपने कोई प्रार्थनापत्र नहीं भेजा था। आपने गिरफ्तारीकी आज्ञाकी नकल मांगी और इस दण्डके कारण पूछे। इसके उत्तरमें प्रचलित वारण्टकी नकल देकर आपको कह दिया गया कि राज राजेश्वरके राज्यमें

अशान्ति रोकनेके अभिप्रायसे तुमको पकड़ा गया है। वारण्टमें भी प्रथानुसार लिखा था—सर्वथा पर्य्याप्त कारणोंसे नवाब साहब (बड़े लाट) (लोकमान्य) लाजपतरायको माण्डलेके कारागारमें बन्दी रखना आवश्यक समझते हैं अतः आज्ञा होती है कि तुम उनको अपने अधिकारमें लेकर बड़े लाटकी आज्ञा और रेगूलेशन नं० ३ सन् १८१८ के अनुसार इनके साथ बर्त्ताव करो। बड़े लाटकी आज्ञासे।

ह० भारत सरकारके सिकत्तरके।

ता० ९ मई १९०७

लालाजीके मेमोरियल।

जिस मेमोरियलकी नकल हम नीचे देंगे इन्हें लालाजीने माण्डलेकेगढ़में बैठकर दकयानूसी रेगूलेशन पढ़नेके उपरान्त लिखा था। हमने इस नियम विरुद्ध और असभ्य रेगूलेशनकी नकल ग्रन्थके आदिमें ही दे दी है जिससे पाठक पहिले उसे पढ़ लेवें और इस पुस्तकमें निर्वासन कथा पढ़ते समय जान सकें कि इस रेगूलेशनके अनुसार भी लालाजीसे धर्मानुकूल वर्त्ताव नहीं हुआ; जैसे समाचारपत्रोंका रोकना,

लाला धनपतरायको मिलनेकी आज्ञा न देना, मापितका वेतन लालाजीके जेबसे दिलाना और नाना प्रकारके ऐसे कृत्य जो उनकी स्थितिके विरुद्ध, उनके साथ बातचीत व वर्त्तावमें गौराङ्ग महा प्रभुओंकी ओरसे हुआ।

पहिला मेमोरियल।

प्रतिष्ठामूर्त्ति राजप्रतिनिधि और सर्वप्रधान शासककी सेवामें। प्रतिष्ठामूर्त्तिकी प्रसन्नताका हेतु हो, प्रार्थी ब्रह्मदेशस्थ मायहलेके इफरिन नामक गढ़में राज-बँधुआ है। उस वारंटके अनुसार जो कौन्सलस्थ प्रतिष्ठामूर्त्तिने रेगूलेशन नम्बर ३ सन् १८१८ के अनुसार ७ मई १९०७ को जहिर किया था, प्रार्थी पकड़ा गया। न तो बन्धनके पूर्व न तत्पश्चात प्रार्थीको उस दोष अथवा दोषोंकी सूचना दी गई कि जिनके आधार पर उक्त रेगूलेशन नम्बर ३ सन् १८१८ के अनुसार प्रार्थीके विरुद्ध व्यवहार किये जानेकी आज्ञा निकाली गई।

प्रार्थीने कोई ऐसा काम जान कर नहीं किया और किसी ऐसे कामके करनेकी चेष्टाकी कि जिसके